Rahul's ✔
Topper's Voice

AS PER CBCS SYLLABUS

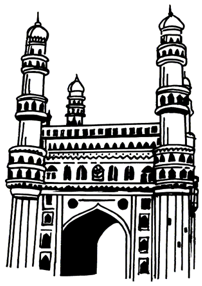

LATEST EDITION
2021 - 2022

B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A.

HINDI

I Year II Sem

- **Study Manual**
- **Solved Model Papers**
- **Solved Previous Question Papers**

- by -

Dr. SHIVHAR BIRADAR
M.A, M.Phil, Ph.D

Price ` .99-00

Rahul Publications™
Hyderabad. Ph : 66550071, 9391018098

All disputes are subjects to Hyderabad Jurisdiction only

B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A.

HINDI

I Year II Sem

Inspite of many efforts taken to present this book without errors, some errors might have crept in. Therefore we do not take any legal responsibility for such errors and omissions. However, if they are brought to our notice, they will be corrected in the next edition.

© *No part of this publications should be reporduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise without the prior written permission of the publisher*

Price ` 99-00

Sole Distributors : ☎ : **66550071, Cell : 9391018098**

VASU BOOK CENTRE

Shop No. 3, Beside Gokul Chat, Koti, Hyderabad.

Maternity Hospital Opp. Lane, Narayan Naik Complex, Koti, Hyderabad.

Near Andhra Bank, Subway, Sultan Bazar, Koti, Hyderabad -195.

CONTENTS

गद्य दर्पण

		Page No.
7.	धरती का स्वर्ग - विष्णु प्रभाकर	3
8.	ताई - श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक	10
9.	राजनीति का बँटवारा - हरिशंकर परसाई	18
10.	स्वामी विवेकानंद - पं. वंशीधर विद्यालंकार	25
11.	पर्यावरण और हम - राजीव गर्ग	34

कथा सिंधु

7.	गदल - रांगेय राघव	43
8.	हँसू या रोऊँ - विनायकराव विद्यालंकर	47
9.	वापसी - उषा प्रियंवदा	52
10.	सेवा - ममता कालिया	56
11.	सिलिया - सुशीला टाकभौरे	60

व्याकरण

➢	संधि विच्छेद	67
➢	विलोम शब्द	73
➢	पत्रलेखन	78

CONTENTS

नमूना प्रश्न पत्र

- नमूना प्रश्न पत्र - 1 87 - 88
- नमूना प्रश्न पत्र - 2 89 - 91
- नमूना प्रश्न पत्र - 3 92 - 93

प्रश्न पत्र

- Jan. / Feb. - 2021 94 - 97
- May / June - 2019 98 - 101
- May / June - 2018 102 - 104

गद्य दर्पण

Rahul Publications

गद्य दर्पण

7. धरती का स्वर्ग - विष्णु प्रभाकर

8. ताई - श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक

9. राजनीति का बँटवारा - हरिशंकर परसाई

10. स्वामी विवेकानंद - पं. वंशीधर विद्यालंकार

11. पर्यावरण और हम - राजीव गर्ग

Rahul Publications

7. धरती का स्वर्ग

- विष्णु प्रभाकर

लेखक का परिचय :-

विष्णु प्रभाकर का जन्म उत्तर प्रदेश के 'मुजफ्फर नगर' जिले की मीरनपुर नामक गाँव में सन् 1912 को हुआ। पंजाब के सरकारी कार्यालय में नौकरी करने के बाद आकाशवाणी, दिल्ली केंद्र में भी उन्होंने काम किया। 'आवारा मसीहा' रचना पर उन्हे सन् 1993 में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार मिल। विष्णु प्रभाकर गाँधीवादी लेखक हैं। उनका निधन 11 अप्रैल सन् 2009 में हुआ ।

कहानी का सारांश :-

'राजतरंगिणी' कश्मीर के राजवंशों का इतिहास है । उसके कवि कल्हण हैं। उन्होने अपनी जन्मभूमि को सबसे सुंदर कहा है। सचमुच वह इतनी सुंदर है कि उसके दर्शन से खोई हुई आँखो की ज्योति लौट आती है। इसका कारण है, वहाँ की हरी - भरी भूमि और रंग - बिरंगे फूले इनके अलावा चाँदी जैसे चमकनेवाले शिखर और मोती भिखेरनेवाली सरिताएँ मन को लुभाती है। झीलो में कमल के फूल खिले हुए है। चिनार और देवदार जैसे अनेक दीर्घजीवी बृक्ष हवा में झूलते है। केसर की खुशबू से भरी हवा है। इस मनोहर भूमि का वर्णन यहाँ के कालिदास, मम्मट और क्षेमेंद्र ने अपने महान काव्यों मे किया है। यही नीलकंठ शंकर का निवास - स्थान है। सत्य में यह पृथ्वी का नंदनवन है।

कश्मीर का डल झील अत्यत प्रसिद्ध है । उसमें सैर करनेवाले पर्यटक हाउस-बोट मे बैठते है। वहाँ से देखते है कि प्रभात की अरूणिमा पहाडियों पर से होकर घाटी मे उतर रही है। झील के चारो ओर खेत ही खेत है। उनमें कश्मीर की नारियाँ काम कर रही है। किशोर और किशोरियाँ शिकरों में बैठकर खरीदना - बेचना कर रहे है। झील में लाल कमल खिले हुए है। दिन चढते ही पहाडियों का प्रतिबिब झील के पानी में दिखाई देता है। ऐसा लगता है वे स्वयं घाटी के सौदर्य को देख रही हो। डल झील सजीव है, रंगीन चित्र मात्र नही है। उसमें पर्यटक जी सकते है, अनुभव कर सकते है ।

एक और झील प्रसिध्द है - नगीन। वह खेलो के लिए मशहूर है। छोटी - सी स्वच्छ जल की झील है। इसमें युवक - युवतियाँ तैरते है और मानसबल तीसरा सरोवर है। उसकी अत्यंत गरिमा हैं। उसके चारों ओर ऊँचे धवल शिखर है। वे मानो राजमुद्रा में उसकी स्वच्छता और सुन्दरना को देख रहे है। वह सबसे गहरी है । उसका जल हरित - नील वर्ण वाल है। सूर्यास्त की फोटोग्राफी के लिए वह आदर्श है। मानसबल के वर्णन से लेखक गद्गद् हो उठते है।

Rahul Publications

उसी क्षण उन्हें शेषनाग की याद हो आती है। वह हरे रंग की झील है। लगभग बारह हजार फुट की ऊँचाई पर है उसके तीनों ओर ब्रम्हा, विष्णु और महेश नामवाले तीन सफेद शिखर है। लेकिन सबसे बड़े पहाड़ी झील तो कोसरनाग है। उसमें बर्फ के तौदे तैरते रहते है, और ऋतु के अनुसार रंग बदलती है। इसके अलावा पवित्र गंधारबल है जो हरमुख की ढलानों पर स्थित है। ये सभी झीलें बर्फ से भरी रहती है।

एक अन्य बूलर झील है जो एशिया में सबसे लम्बी ताजा पानी की झील है। वेदकाली प्रसिद्ध नदी वितस्ता इस झील में आत्मसमर्पण करती है। लेखक कहते है कि ये झीले आदमी को संजीवनी से भर देगी। अपने सौदर्य के कारण कश्मीर धरती का स्वर्ग है।

विशेषता :-

विष्णु प्रभाकर अत्यंत भावुक रचइता है। भाषा - शौली दोनो मे काव्यात्मकता है। रचइता की संवेदनाएँ कश्मीर के प्राकृतिक सौदर्य से प्रेरित और जागृत होती है।

Rahul Publications

7. భూతల స్వర్గం

రచయిత పరిచయము :

విష్ణుప్రభాకర్ ఉత్తరప్రదేశ్‌లోని 'ముజఫర్‌నగర్' జిల్లాలోని మీరన్‌పూర్ అనే గ్రామములో 1912వ సంవత్సరంలో జన్మించారు. పంజాబులోని గవర్నమెంటు ఆఫీసులో పనిచేశాక "ఆకాశవాణి" ఢిల్లీ కేంద్రంలోనూ ఆయన పనిచేశారు. "ఆవారా మసీహా" అనే రచనకు/ఆయనకు 1993లో సాహిత్య అకాడమీ పురస్కారం లభించింది. విష్ణుప్రభాకర్ గాంధీ సిద్ధాంతాలకు ప్రభావితుడయ్యాడు ఆయన 11 ఏప్రిల్ 2009వ మరణించారు.

సారాంశం :

"రాజతరంగిణి" కాశ్మీరు రాజవంశస్థుల చరిత్ర. దానిని రచించినది కల్హణుడు. ఆయన తన జన్మభూమిని అత్యంత సుందరమైనదిగా అభివర్ణించారు. అక్కడి పచ్చదనం రంగురంగుల పూలు, ఇవేకాకుండా వెండిలాగా మెరిసే పర్వత శిఖరాలు, ముత్యాలు సరోవరాలు పరిచినట్లుండే. ఇవన్నీ వీక్షించిన వారికి పైన చెప్పినవి వాస్తవమనే అనిపిస్తుంది. సరోవరాలలో కమల పుష్పాలు వికసించివున్నాయి. ఆకాశాన్నంటుతూ గాలిలో ఊయలలూగే దేవార్ చెట్లు కన్నుల పండుగ చేస్తాయి. కుంకుమపువ్వు పొలాలు కంటికి ఇంపు కలిగిస్తే ఆ సువాసన గాలిలో కలిసి నాసికను ఆహ్లాదపరుస్తుంది. కనుకనే మహాకవి కాళిదాసు, మమ్మటుడు క్షేమంద్రుని వంటివారు కాశ్మీరు సౌందర్యాన్ని తమ కావ్యాల్లో వర్ణించారు. నీల కంఠుడగు శంకరునికి ఇది నివాసస్థానం. ఇన్ని సుగుణాలతో ఉన్న కాశ్మీరు భూమి మీద నిజంగా నందనవనమే.

కాశ్మీరు 'డల్' సరస్సు ప్రపంచ ప్రసిద్ధమైనది. పర్యాటకులు వీల్ బోట్‌లో కూర్చొని ఈ సరస్సులో షికారు చేస్తారు. సూర్యోదయ ప్రభాత దృశ్యాలను వీక్షిస్తారు. అరుణకాంతులు శిఖలాల మీద నుండి లోయలలోకి పడే దృశ్యాలు అత్యద్భుతం. ఈ సంవత్సరం లోయల చుట్టూ పొలాలు ఉన్నాయి. ఆ పొలాలలో కాశ్మీర్ స్త్రీలు పనిచేస్తుంటారు. ఆ సరస్సులలో ఎన్నో పడవలు వున్నాయి. వాటిల్లో రకరకాలు వస్తువులు అమ్ముతుంటారు. సరస్సులో ఎర్రకలవలు వికసించి ఉన్నాయి. బాలిబాలికలు పడవలలోని వస్తువులను కొనుక్కుంటారు. సరోవరాల చుట్టూ పర్వత శిఖరాలు ఉన్నాయి. వాటి నీడలు లోయల సౌందర్యాన్ని మరింత ఇనుమడింపచేస్తాయి. ప్రకృతిలో మనం కలిసిపోయినట్టుగా వుంటుంది.

నగీన మరొక సరస్సు అది చాలా ప్రసిద్ధమైనది. స్వచ్ఛమైన నీటి సరస్సు ఇది. ఇందులో యువతులు, యువకులు ఈతకొడుతుంటారు. మానసబల మరొక అందమైన సరస్సు. అత్యంత లోతైనసరస్సు ఇది. వీటికి నాలుగువైపుల ఎత్తైన వెండిశిఖరాలు వున్నాయి. వీటిమీద మంచు దిమ్మలు తేలుతూ ఉంటాయి. వేదాల్లో చెప్పిన వితస్థానది జూలర్ సరస్సలో కలుస్తుంది. ఈ ప్రశాంత ప్రకృతి సంజీవనిలాంటిది. పర్యాటకులకు నూతన శక్తినీ ఉత్తేజాన్నీ ఇస్తుంది. స్వర్గాన్ని తలపించే కాశ్మీరును చూసిన వారు తమను తాము మరిచిపోతారు. కనుక కాశ్మీరు భూతలస్వర్గమే.

संदर्भ सहित व्याख्याए

1. घूमते रहने से मेरी आँखें ठीक रही है। नई-नई चीजे देखता हूँ तो ज्योति जैसे लौट आती है।

उत्तर

1. **सामान्य प्रसंग :-** यह संदर्भ 'धरती का स्वर्ग' से दिया गया है। यह एक यात्रा - वर्णन है। इसको विष्णु प्रभाकर ने लिखा है। आप गाँधीवादी लेखक है। आपके साहित्य में यथार्थ और आदर्श का अच्छा समन्वय है। आपका नाट्य - साहित्य सभी माध्यमों से प्रसारित होता है । आपका यात्रा - साहित्य भी उल्लेखनीय है।

2. **व्यारव्या :-** कई वर्ष पूर्व लेखक की भेंट विश्व का भ्रमण करनेवाले एक जर्मन पर्यटक से हो गई थी। वह 44 वर्ष से निरंतर धूम रहे थे। शरीर वृद्ध हो आया था। आँख की ज्योति क्षीण हो चली थी। लेकिन उनका उत्साह कम नही हो रहा था। लेखक ने उनसे कहा कि आँखे इसी तरह खराब होती रही तो उनकी यात्रा रूक गई तो वे निश्चय ही अंधे हो जाँएगे । क्योकि घूमते रहने से ही उनकी आँखें ठीक रही है। नई - नई चीजे देखते है। तो ज्योति लौट आती है। यही पर्यटन का महत्व है।

विशेषता

- बूढ़े पर्यटक के व्दारा श्री विष्णु प्रभाकर भ्रमण के महत्व को सिध्द करते है। भाषा सरल और सुबोध है ।

2. आकाश के विस्तार में यहाँ- वहाँ चपल मेघ - शावक निकल पड़े है। उनकी परछाइयाँ झील को और भी मादक कर देती है।

उत्तर

1. **सामान्य संदर्भ :-** यह संदर्भ 'धरती का स्वर्ग' नामक यात्रा संस्मरण से लिया गया है। इसको श्री विष्णु प्रभाकर ने लिखा है। इसमे कश्मीर के अनुपम सौदर्य का वर्णन है। 'यादो की तीर्थयात्रा' आपकी यात्रा - सबंधी पुस्तक है। 'आवारा मसीहा' के लिए आपको साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है। आप सामाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार करते है।

2. **व्याख्या :-** श्री विष्णु प्रभाकर प्रभात के समय हाउस - बोट में बैठे सूर्योदय की सुंदरता को देख रहे है। सबेरे की धूप पहाडियों पर चमक उठती है। झील में पहाडियों का प्रतिबिंब पडा है। वे मानों घाटी के सौदर्य को देख रही है । आकाश पर यहाँ - वहाँ मेघ घिरे है। वे छोटे - छोटे हैं और एक जगह से दूसरी जगह जा रहे है। इसीलिए लेखक उन्हे 'चपल' और 'शावक' कह रहे हैं। बादलों की छाया भी झील में पड रही है। वह झील को और भी मादक बना रही है। अर्थात् झील की खूबसूरती पहले से ही दर्शकों को भाव-विभोर करनेवाली है। और मादकता झील का नही बल्कि प्रेक्षकों को हो रही है। इसका अर्थ है सौदर्य को देखकर अपने को भूल जाना।

विशेषता

- इस वर्णन में लेखक की अनुभूति की तीव्रता व्यक्त हो रही है। भाषा सरल और सुबोध है।

3. ''आओ भाई आओ, दो क्षण की शांति के लिए यहाँ आकर देखो। ये झीले तुम्हें संजीवनी से भर देगी।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ 'धरती का स्वर्ग' नामक यात्रा संस्मरण से लिया गया है। इसको श्री विष्णु प्रभाकर ने लिखा है। इसमे कश्मीर के अनुपम सौदर्य का वर्णन है। 'यादो की तीर्थयात्रा' आपकी यात्रा - सबंधी पुस्तक है। 'आवारा मसीहा' के लिए आपको साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है। आप सामाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार करते है।

Rahul Publications

2. **व्याख्या :-** लेखक शिकारों मे बैठकर डल झील को पार कर रहा है। शिकारा धीरे-धीरे तैरता हुआ किनारे की ओर बढ़ रहा है। आसपास और भी शिकारे है। उनमे बालक - बालिकाएँ है । वे लेखक को सलाम करते है। और उनका उत्तर सुनकर हँस देते है। लेखक को लगता है कि मानो झील ही खिलखिला रही है। वे भावना में खो जाते है। मन में ही अपने मित्र को पुकारते हैं। शांति के लिए कश्मीर के सौदर्य को देखने का आहवान देते हैं। झीलो के पर्यटन से यात्री में संजीवनी शक्ति भर जाती है। वहाँ की जलवायु इतनी निर्मल और ताजा है कि वह आदमी को प्राणशक्ति प्रदान करती है। इसीलिए रचइता ने उसे संजीवनी कहा है। संजीवनी वह बूटी है जो मरे हुए को जिंदा कर सकती है।

विशेषता

- रचइता कश्मीर की सुदरता का आँखों देखा वर्णन करते हैं। उसको धरती का स्वर्ग प्रमाणित किया है। भाषा सरल और सुबोध है।

दीर्घ प्रश्न

1. ''धरती का स्वर्ग'' पाठ के आधार पर कशमीर की सुंदरता का वर्णन कीजिए?

ज. 'राजतरगिणी' कश्मीर के राजवशों का इतिहास है । उसके कवि कल्हण हैं। उन्होने अपनी जन्मभूमि को सबसे सुंदर कहा है। सचमुच वह इतनी सुंदर है कि उसके दर्शन से खोई हुई आँखो की ज्योति लौट आती है। इसका कारण है, वहाँ की हरी - भरी भूमि और रंग - बिरंगे फूल इनके अलावा चाँदी जैसे चमकनेवाले शिखर और मोती भिखेरनेवाली सरिताएँ मन को लुभाती है। झीलो में कमल के फूल खिले हुए है। चिनार और देवदार जैसे अनेक दीर्घजीवी वृक्ष हवा में झूलते है। केसर की खुशबू से भरी हवा है। इस मनोहर भूमि का वर्णन यहाँ के कालिदास, मम्मट और क्षेमेंद्र ने अपने महान काव्यों मे किया है। यही नीलकंठ शंकर का निवास - स्थान है। सत्य में यह पृथ्वी का नंदनवन है।

कश्मीर का डल झील अत्यत प्रसिद्ध है । उसमें सैर करनेवाले पर्यटक हाउस-बोट मे बैठते है। वहाँ से देखते है कि प्रभाव की अरूणिमा पहाडियों पर से होकर घाटी मे उतर रही है। झील के चारो ओर खेत ही खेत है। उनमें कश्मीर की नारियाँ काम कर रही है। किशोर और किशोरियाँ शिकरों में बैठकर खरीदना - बेचना कर रहे है। झील में लाल कमल खिले हुए है। दिन चढते ही पहाडियों का प्रतिबिब झील के पानी में दिखाई देता है। ऐसा लगता है वे स्वयं घाटी के सौदर्य को देख रही हो। डल झील सजीव है, रंगीन चित्र मात्र नही है। उसमें पर्यटक जी सकते है, अनुभव कर सकते है ।

एक और झील प्रसिद्ध है - नगीन। वह खेलो के लिए मशहूर है। छोटी - सी स्वच्छ जल की झील है। इसमें युवक - युवतियाँ तैरते है और मानसबल तीसरा सरोवर है। उसकी अत्यंत गरिमा हैं। उसके चारों और ऊँचे धवल शिखर है। वे मानो राजमुद्रा में उसकी स्वच्छता और सुन्दरना को देख रहे है। वह सबसे गहरी है । उसका जल हरित - नील वर्ण बाल है। सूर्यास्त की फोटोग्राफी के लिए वह आदर्श है। मानसबल के वर्णन से लेखक गद्‌गद् हो उठते है।

उसी क्षण उन्हें शेषनाग की याद हो आती है। वह हरे रंग की झील है। लगभग बारह हजार फुट की ऊँचाई पर है उसके तीनों ओर ब्रम्हा, विष्णु और महेश नामवाले तीन सफेद शिखर है। लेकिन सबसे बड़े पहाड़ी झील तो कोसरनाग है। उसमें बर्फ के तौदे तैरते रहते है, और ऋतु के अनुसार रंग बदलती है। इसके अलावा पवित्र गंधारबल है जो हरमुख की ढलानों पर स्थित है। ये सभी झीलें बर्फ से भरी रहती है।

एक अन्य बूलर झील है जो एशिया में सबसे लम्बी ताजा पानी की झील है। वेदकाली प्रसिद्ध नदी वितस्ता इस झील में आत्मसमर्पण करती है। लेखक कहते है कि ये झीले आदमी को संजीवनी से भर देगी। अपनें सौदर्य के कारण कश्मीर धरती का स्वर्ग है।

Rahul Publications

2. ''मानसबल'' की क्या विशेषता है?

ज. मानसबल तीसरा सरोवर है। उसकी अत्यंत गरिमा है। उनके चारों ओर ऊँचे धवल शिखर है। वे मानो राजमुद्रा में उसकी स्वच्छता और सुंदरता को देख रहे हैं। वह सबसे गहरी है। उसका जल हरित - नील वर्णमाला है। सूर्यास्त की फोटोग्राफी के लिए वह आदर्श है।

3. कश्मीर के झीलों का परिचय दीजिए ।

ज. कश्मीर का डल झील अत्यंत प्रसिद्ध है। उसमे सैर करनेवाले पर्यटक हाउस -बोट में बैठते है। वहाँ से देखते है कि प्रभात की अरूणिमा पहाडियों पर से होकर घाटी मे उतर रही है। झील के चारों ओर खेत ही खेत है। उनमें कश्मीर की नारियाँ काम कर रही है। किशोर और किशोरियाँ शिकरों में बैठकर खरीदना - बेचना कर रहे हैं। झील में लाल कमल खिले हुए हैं। दिन चढते ही पहाडियों का प्रतिबिंब झील के पानी में दिखाई देता है। ऐसा लगता है वे स्वयं घाटी के सौंदर्य को देख रही हो। डल झील सजीव है, रंगीन चित्र मात्र नही है। उसको पर्यटक जी सकते है, अनुभव कर सकते है ।

एक और झील प्रसिद्ध है - नगीन। वह खेलों के लिए मशहूर है। छोटी - सी स्वच्छ जल की झील है। इसमें युवक - युवतियाँ तैरते है और मानसबल तीसरा सरोवर है। उसकी अत्यंत गरिमा है। उसके चारों ओर ऊँचे धवल शिखर है। वे मानो राजमुद्रा में उसकी स्वच्छता और सुन्दरना को देख रहे है। वह सबसे गहरी है । उसका जल हरित - नील वर्ण वाला है। सूर्यास्त की फोटोग्राफी के लिए वह आदर्श है। मानसबल के वर्णन से लेखक गद्गद् हो उठते है।

लघु प्रश्न

1. ''धरती का स्वर्ग'' पाठ किस विधा का निबंध है?

ज. धरती का स्वर्ग यात्रा वर्णन संबंधी निबंध है।

2. कश्मीर मे प्रसिद्ध कितन झील है? नाम बताओ?

ज. कश्मीर में डल, नगीन, शेषनाग, बूलर आदी झील अत्पंत प्रसिद्ध हैं।

3. धरती का स्वर्ग पाठ में किसका वर्णन किया गया है?

ज. धरती का स्वर्ग पाठ में कश्मीर के झीलों का वर्णन किया गया है।

4. धरती का स्वर्ग पाठ के लेखक कौन है?

ज. धरती का स्वर्ग पाठ के लेखक विष्णु प्रभाकर जी है।

5. घूमते रहने से मेरी आँखे ठीक रही है। यह बात कौन किससे कहता है?

ज. घूमते रहने से मेरी आँखे ठीक हो रही है। यें बातें वृद्ध पर्याटक लेखक से कहते हैं।

Rahul Publications

8. ताई

- श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक

लेखक का परिचय :-

श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक का जन्म सन् 1891 में अंबाला छावनी में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। कौशिक जी को उनके चाचा ने दत्तक पुत्र बना लिया था। उन्होंने स्कूल में फारसी और उर्दू का अध्यापन किया। पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से हिन्दी क्षेत्र में आए प्रभा नामक पत्रिका का संपादन उन्होंने किया था। 'रक्षा बंधन' कल्प - मंदिर, 'चित्रशाला', 'मणिमाला' और कल्लोभ आदि इनके प्रमुख रचनायें है ।

कहानी का सारांश :-

बाबू रामजीदास धनी आदमी है। उनकी धर्मपत्नी रामेश्वरी है। वे निस्सन्तान है। रामजीदास के छोटे भाई कृष्णादास के दो सन्तान है - मनोहर और चुन्नी। दोनो भाइयों का परिवार एक ही घर में है। भाई की सन्तान से ताऊ रामजीदास बहुत प्यार करते हैं और अपनी सन्तानहीनता का अनुभव नही करते। परन्तु रामेश्वरी को अपनी सन्तानहीनता का बडा दुःख है। छोटे भाई की सन्तान पर पति का प्रेम उसकी आँख में काँटें की तरह खटकता है। जब - जब रामजीदास उन बच्चों पर प्रेम दिखाते हैं, तब-तब रामेश्वरी बच्चों पर क्रोध और घृणा दिखाती है।

बच्चों पर रामेश्वरी के क्रोध और द्वेष के दो कारण है - अपनी सन्तानहीनता और पति का पराये बच्चों पर प्यार । इसका मतलब यह नहीं कि रामेश्वरी में माता का हृदय नहीं। उसका हृदय माता के हृदय की पूरी योग्यता रखता था। कभी - कभी उसका हृदय उन बच्चों की ओर खींच जाता था, किन्तु जब उसे यह ध्यान होता था कि बच्चे मेरे नही - पराये हैं, तब उसके हृदय मे बच्चों के प्रति घृणा पैदा होती थी।

एक दिन रामेश्वरी खुली छत पर बैठकर मनोहर और चुन्नी को खेलते देख रही थी। बच्चों का खेलना - कूदना, हँसना - बोलना उसे बहुत अच्छा लग रहा था। उनकी चेष्टाएँ रामेश्वरी के हृदय को शीतल कर रही थी। वह सारा द्वेष भूल गयी। सहसा चुन्नी और मनोहर उसकी गोद में आ गिरे रामेश्वरी ने बड़े प्रेम से बच्चों को गले लगा लिया । उसी समय उसके पति ऊपर आये और उसकी प्रशंसा करने लगे। किन्तु रामेश्वरी को उन बातों मे व्यंग्य का आभास हुआ और वह अपनी कमजोरी पर तिलमिला उठी। सोचने लगी कि इन्ही बच्चों के कारण यह दुर्गति है। वे मर जाते तो कितना अच्छा होता।

Rahul Publications

एक दिन शाम को रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी । अपनी सन्तान का अभाव, पति का भाई की सन्तान के प्रति प्रेम - ये ही विचार उसके हृदय में आ रहे थे। मनोहर पास खडा आकाश में उडते पतंग देख रहा था। उसने ताई से पतंग मँगाने की भोली प्रार्थना की । करूणा स्वर से की गयी उसकी माँग से रामेश्वरी का हृदय पसीज गया।

सोचने लगी - ''यदि मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी नही होती । निगोडा - मरा कितना सुंदर है और कैसी प्यारी बातें करता है। यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लें''। इतने में मनोहर ने कहा कि तुम हमें पतंग नही मँगवा देगी तो ताऊजी से कहकर पिटवा देंगे । रामेश्वरी को क्रोध आ गया । उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उनके घर के आंगन मे आ गिरा। उसे पाने के प्रयत्न में मनोहर का पैर मुंडेर से फिसल गया और वह लटकने लगा । उस समय उसने अपनी ताई को बचाव के लिए पुकारा। परन्तु रामेश्वरी ने देरी की। जब तक उसने मनोहर को बचाने अपना हाथ बढाया, तब तक वह नीचे गिर गया । रामेश्वरी बेहोश गिर पडी । मनोहर की टाँग उखड गई । वह बिठा दी गई ।

इस घटना के बाद रामेश्वरी के हृदय में भारी परिवर्तन आया । उसे अपने किये पर पश्चात्ताप हुआ। बेहोशी में भी प्रलाप करने लगी - 'बेटा मनोहार' मैने तुझे नही बचाया। हाँ-हाँ, मै चाहती तो बचा सकती भी - मैने देर कर दी।'' होश में आते ही उसने मनोहर को हृदय से लगा लिया। मनोहर और चुन्नी उसके प्राणाधार हो गये।

Rahul Publications

विशेषता

- इस कहानी में नारी की मनोभावों की सुंदर झाँकी पस्तुत की गई है । इसमें बताया गया कि ममत्व से प्रेम और प्रेम से ममत्व उत्पन होता है।

8. పెద్దమ్మ

రచయిత పరిచయము :

విశ్వంభరనాథ్ శర్మ కౌషిక్‌గారు అంతాలా ఛావనీలోని మధ్యతరగతి కుటుంబలో 1891 సం॥లో జన్మించారు. కౌషిక గారిని ఆయన బాబాయి దత్తతతీసుకొన్నారు. ఆయన స్కూలులో ఫారసీ, ఉర్దూ చెప్పేవారు. మహావీర్ ప్రసాద్ ద్వివేద్ ప్రేరణతో హిందీలో ప్రభా అనే పత్రికకు సంపాదకుడుగా వున్నారు. "రక్షాబంధన్", కల్ప–మందిర్, "చిత్రశాల", మణిమాల మరియు కల్లుభి మొదలైనవి. విశ్వంభరనాథ్‌గారి ప్రసిద్ధ రచనలు.

సారాంశం:

బాబురామ్‌జీ దాసు ధనికుడు అతనిభార్య పేరు రామేశ్వరి, వారికి సంతానం లేదు. రామ్‌జీదాసు తమ్ముడి పేరు కృష్ణదాసు. కృష్ణదాసుకు మనోహర్, చున్నీ ఇద్దరు పిల్లలు. అన్నదమ్ములిద్దరూ ఒకే కుటుంబంలో ఉడేవారు. రామ్‌జీదాసు తన తమ్ముని పిల్లల్ని ఎంత ప్రేమగా చూస్తుండేవాడు. వారి ముద్దులొలికే మాటలు, చేష్టలు, ఆయనను ఎంతగానో ఆనందపరిచేవి. ఆయనకు సంతానం లేనిలోటును చాలావరకు మరిచిపోయేవారు. అయితే రామేశ్వరి మాత్రం నిరంతరం తన సంతాన హీనతకు దుఃఖిస్తూవుండేది. తన భర్త తమ్ముని పిల్లల్ని ప్రాణప్రదంగా ప్రేమిస్తుండటం ఆమెలో ఈర్ష్యా, ద్వేష భావాలను కలిగించేవి.

రామేశ్వరికి పిల్లలపట్ల కోపానికి గల కారణాలు ఒకటి సంతానరాహిత్యమయితే రెండవది భర్తకు పరాయి పిల్లలపై గల అపరిమతమైనప్రేమ. రామేశ్వరికి మాతృహృదయంలో ఉండాల్సిన ప్రేమ, మమకారం, జాలి, కరుణ లాంటిఅన్ని గుణాలు ఆమెలో ఉన్నాయి. పూజలు, వ్రతాలు చేస్తే సంతానం కలుగుతుందని భర్తని కోరుతుంటుంది. రామ్‌జీదాసుకు వాటిపై నమ్మకంలేదు. అందుకని ఆమెమాటల్ని పెడచెవిన పెడతుంటాడు.

రామేశ్వరికి మనోహర్, చున్నీల పట్ల మమకారం ఉన్నా ఆమె ప్రదర్శించేది కాదు. ఆ పిల్లలు తమ పిల్లలు కారన్న భావన రాగానే ద్వేషించేది.

ఒకరోజు రామేశ్వరి డాబామీద కూర్చొని ఉంది. మనోహర్, చున్నీలు ఆడుకుంటున్నారు. వాళ్ళ ముద్దులొలికే మాటలు, నవ్వులు, కేరింతలు ఆమెను ఎంతగానో అనందింపచేయసాగాయి. ఆ సమయంలో ఆమె ద్వేషం మర్చిపోయింది. చున్నీ, మనోహర్ ఆడుకుంటూ – ఆడుకుంటూ పెద్దమ్మ ఒడికి వచ్చి చేరతారు. రామేశ్వరి వారిని ఎంతో ప్రేమగా హృదయానికి హత్తుకుంటుంది. ఇంతలో రామ్‌జీదాసు డాబాపైకి వచ్చి సంతోషం వ్యక్తపరుస్తాడు. పిల్లల పట్ల ప్రేమను దాచుకోవలసిన అవసరం లేదని అంటాడు. భర్త మాటల్లో వ్యంగ్యం ధ్వనించింది. ఈ పిల్లల మూలకంగానే తనకీ దుర్గతి పట్టిందనీ, వారుచనిపోయినా బాగుండును. అని మనస్సులో అనుకుంటుంది.

Rahul Publications

మరికొన్నాళ్ళకు ఒకరోజు సాయంత్రం రామేశ్వరి డాబాపై ఒంటరిగా కూర్చొని ఉంటుంది. మనోహర్ దగ్గర్లోనే నిలబడి ఆకాశంలో ఎగురుతున్న గాలి పటాల్ని చూస్తూవుంటాడు. పెద్దమ్మ దగ్గరకు వచ్చి తనకు గాలిపటం కొని పెట్టుమని అడుగుతాడు. రామేశ్వరి కసురుకొని వెళ్ళి పెద్దనాన్నను అడగమంటుంది. మనోహర్ బ్రతిమాలాడుతూ ప్రాథేయపడుతూ వుంటాడు. రామేశ్వరికి జాలివేస్తుంది. 'వీడునా సొంత కొడుకు అయివుంటే నేను ప్రపంచంలోనే అదృష్టవంతురాలిని అయ్యేదాన్ని వెధవ ఎంత అందంగా చచ్చాడు. ఎంత ముద్దుగా మాట్లాడుతున్నాడు. గుండెలకు హత్తుకోవాలనిపిస్తుంది. అని మనస్సులోనే అనుకుంటుంది రామేశ్వరి. ఆమె ఏమీ మాట్లడకపోయే సరికి గాలిపటం కొనివ్వకపోతే పెదనానన్నతో చెప్పి నిన్ను కొటిస్తానంటాడు. మనోహర్ రామేశ్వరికి కోపం వస్తుంది.

తెగిన గాలిపటం వచ్చి వాకిట్లో పడుతుంది. దాన్ని అందుకునే ప్రయత్నంలో మనోహర్ బాల్కనీ పిట్టగోడ పై నుండి కిందపడబోతూ పిట్టగోడను పట్టుకుంటాడు. 'పెద్దమ్మా' అంటూ తనను కాపాడమని జాలిగా అడుగుతాడు రామేశ్వరి కాపాడాలా? వద్దా అన్న మీ మాసంలో ఉండగానే పిట్టగోడను పట్టుకొన్న చెయ్యిజారి మనోహర్ క్రిందపడిపోతాడు. రామేశ్వరి స్పృహతప్పి పడిపోతుంది. విపరీతమైన జ్వరంతో వారం రోజులు పాటు కలవరిస్తూ

ఉంటుంది. మనోహర్ పడిపోతున్నాడు. కాపాడండి. మనోహర్ నేను నిన్ను కాపాడలేదు. నేను కాపాడగలిగేదాన్నే, కానీ ఆలస్యం చేశాను. అని అంటూ వుంటుంది. తెలివిరాగానే మనోహర్ ఎలా వున్నాడు? అని అడిగి అతణ్ణి ప్రేమగా హృదయానికి హత్తుకుంటుంది. మనోహర్ తుంటి ఎముక జారింది. కట్టుకట్టారు. ఈ సంఘటన తర్వాత ఆమె మనోహర్, చున్నీలను ఎప్పుడూ ద్వేషించలేదు. మనోహర్ పెద్దమ్మకు ప్రాణప్రదంగా మారిపోయాడు.

संदर्भ सहित व्याख्याए

1. यदि यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी नही होती।

उत्तर

1. **सामान्य संदभ :-** यह संदर्भ ''ताई'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता श्री विश्वंभरनाथ शर्मा जी है। वे प्रभा नामक पत्रिका का संपादन किए। रक्षा बंधन, कल्प मंदिर, चित्रशाल, मणिमाला, कल्लोभ आदि आपके प्रमुख रचनायें है।
2. **व्यारव्या :-** एक दिन शाम को रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी । अपनी सन्तान का अभाव, पति का भाई की सन्तान के प्रति प्रेम - ये ही विचार उसके हदय मे आ रहे थे। मनोहर पास खडा आकाश में उडते पतंग देख रहा था। उसने ताई से पतंग मँगाने की भोली प्रार्थना की । करूणा स्वर से की गयी उसकी माँग से रामेश्वरी का हृदय पसीज गया। मन में सोचने लगी कि यदि यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी नहीं होती।

विशेषता

- इस कहानी में नारी की मनो भावों की सुंदर झाँकी परस्तुत की गई है । इसमें बताया गया कि ममत्व से प्रेम और प्रेम से ममत्व उत्पन्न होता है।

2. रामेश्वरी थोडी देर तक दुविधा में सोचती रही कि उसे बचाये या गिरने दे।

उत्तर

1. **सामान्य संदर्भ :-** यह संदर्भ ''ताई'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी के रचइता श्री विश्वंभरनाथ शर्मा जी है। वे प्रभा नामक पत्रिका का संपादन किए। रक्षा बंधन, कल्प मंदिर, चित्रशाल, मणिमाला, कल्लोभ आदि आपके प्रमुख रचनायें है।

Rahul Publications

2. **व्याख्या :-** रामेश्वरी सोचने लगी - ''यदि मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी नही होती । निगोडा - मरा कितना सुंदर है और कैसी प्यारी बातें करता है। यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लें''। इतने में मनोहर ने कहा कि तुम हमें पतंग नही मँगवा देगी, तो ताऊजी से कहकर पिटवा देंगे । रामेश्वरी को क्रोध आ गया । उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उनके घर के आंगन में आ गिरा। उसे पाने के प्रयत्न में मनोहर का पैर मुंडेर से फिसल गया और वह लटकने लगा । उस समय उसने अपनी ताई को बचाव के लिए पुकारा। परन्तु रामेश्वरी ने देरी की। जब तक उसने मनोहर को बचाने अपना हाथ बढाया, तब तक वह नीचे गिर गया । रामेश्वरी बेहोश गिर पडी । मनोहर की टाँग उखड गई । वह बिठा दी गई ।

विशेषता

- इस कहानी में नारी की मनोभावों की सुंदर झाँकी पस्तुत की गई है । इसमें बताया गया कि ममत्व से प्रेम और प्रेम से ममत्व उत्पन्न होता है।

3. **अब वह मनोहर की बहन चुन्नी से भी द्वेष और घृणा नही करती और मनोहर तो उनका प्रणाधार हो गया।**

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ ''ताई'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता श्री विश्वंभरनाथ शर्मा जी हैं। वे प्रभा नामक पत्रिका का संपादन किए। रक्षा बंधन, कल्प मंदिर, चित्रशाल, मणिमाला, कल्लोभ आदि आपके प्रमुख रचनायें है।

2. **व्याख्या :-** उस घटना के बाद रामेश्वरी के हृदय में भारी परिवर्तन आया । उसे अपने किये पर पश्चात्ताप हुआ। बेहोशी में भी प्रलाप करने लगी - 'बेटा मनोहार' मैने तुझे नहीं बचाया। हाँ-हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी - मैने देर कर दी।'' होश में आते ही उसने मनोहर को हृदय से लगा लिया। मनोहर और चुन्नी उसके प्राणाधार हो गये।

विशेषता

- इस कहानी मे नारी की मनोभावों की सुंदर झाँकी पस्तुत की गई है । इसमें बताया गया कि ममत्व से प्रेम और प्रेम से ममत्व उत्पन होता है।

Rahul Publications

दीर्घ प्रश्न

1. ताई कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए ?

ज. बाबू रामजीदास धनी आदमी है। उनकी धर्मपत्नी रामेश्वरी है। वे निस्सन्तान है। रामजीदास के छोटे भाई कृष्णादास के दो सन्तान है - मनोहर और चुन्नी। दोनो भाइयों का परिवार एक ही घर मे है। भाई की सन्तान से ताऊ रामजीदास बहुत प्यार करते है। और अपनी सन्तानहीनता का अनुभव नही करते। परन्तु रामेश्वरी को अपनी सन्तानहीनता का बडा दु:ख है। छोटे भाई की सन्तान पर पति का प्रेम उसकी आँख में कँाटें की तरह खटकता है। जब - जब रामजीदास उन बच्चों पर प्रेम दिखाते है, तब-तब रामेश्वरी बच्चों पर क्रोध और घृण दिखाती है।

बच्चों पर रामेश्वरी के क्रोध और द्वेष के दो कारण है - अपनी सन्तानहीनता और पति का पराये बच्चों पर प्यार । इसका मतलब यह नहीं कि रामेश्वरी में माता का हृदय नही। उसका हृदय माता के हृदय की पूरी योग्यता रखता था। कभी - कभी उसका हृदय उन बच्चों की ओर खिंच जाता था, किन्तु जब उसे यह ध्यान होता था कि बच्चे मेरे नही - पराये है, तब उसके हृदय मे बच्चों के प्रति घृणा पैदा होती थी।

एक दिन रामेश्वरी खुली छत पर बैठकर मनोहर और चुन्नी को खेलते देख रही थी। बच्चों का खेलना - कूदना, हँसना - बोलना उसे बहुत अच्छा लग रहा था। उनकी चेष्टाएँ रामेश्वरी के हृदय को शीतल कर रही थी। वह सारा व्देष भूल गयी। सहसा चुन्नी और मनोहर उसकी गोद मे आ गिरे रामेश्वरी ने बड़े प्रेम से बच्चों को गले लगा लिया । उसी समय उसके पति ऊपर आये और उसकी प्रशंसा करने लगे। किन्तु रामेश्वरी को उन बातों मे व्यंग्य का आभास हुआ और वह अपनी कमजोरी पर तिलमिला उठी। सोचने लगी कि इन्ही बच्चों के कारण यह दुर्गति है। वे मर जाते तो कितना अच्छा होता।

एक दिन शाम को रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी । अपनी सन्तान का अभाव, पति का भाई की सन्तान के प्रति प्रेम - ये ही विचार उसके हृदय मे आ रहे थे। मनोहर पास खडा आकाश में उडते पतंग देख रहा था। उसने ताई से पतंग मँगाने की भोली प्रार्थना की । करूणा स्वर से की गयी उसकी माँग से रामेश्वरी का हृदय पसीज गया।

सोचने लगी - ''यदि मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी नही होती । निगोडा - मरा कितना सुंदर है और कैसी प्यारी बातें करता है। जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लें''। इतने में मनोहर ने कहा कि तुम हमें पतंग नही मँगवा देगी तो ताऊजी से

कहकर पिटवा देंगे । रामेश्वरी को क्रोध आ गया । उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उनके घर के आंगन मे आ गिरा। उसे पाने के प्रयत्न में मनोहर का पैर मुंडेर से फिसल गया और वह लटकने लगा । उस समय उसने अपनी ताई को बचाव के लिए पुकारा। परन्तु रामेश्वरी ने देरी की। जब तक उसने मनोहर को बचाने अपना हाथ बढाया, तब तक वह नीचे गिर गया । रामेश्वरी बेहोश गिर पडी । मनोहर की टाँग उखड गई । वह बिठा दी गई ।

इस घटना के बाद रामेश्वरी के हदय मे भारी परिवर्तन आया । उसे अपने किये पर पश्चात्ताप हुआ। बेहोशी में भी प्रलाप करने लगी - 'बेटा मनोहार' मैने तुझे नही बचाया। हाँ-हाँ, मै चाहती तो बचा सकती भी - मैने देर कर दी।'' होश में आते ही उसने मनोहर को हदय से लगा लिया। मनोहर और चुन्नी उसके प्राणाधार हो गये।

2. ताई के हृदय परिवर्तन का विशलेषण कीजिए?

ज. मनोहर और चुन्नी कृष्णदास की संतानें हैं। बाबू रामजीदास और रामेश्वरी उन बच्चों के ताऊ और ताई है। वे निस्संतान है । ताऊ जी बच्चों को प्यार करते अपनी संतानहीनता का दुःख भूल जाती है। किन्तु रानेश्वरी को संतान के अभाव का दुःख बराबर खटकता रहता है। रामेश्वरी के दिल मे मातृत्व की भावना मौजूद है। किन्तु पति का बच्चो के प्रति अपार प्रेम रामेश्वरी मे बच्चों के प्रति व्देष का रूप धारण कर लेता है। मातृत्व की अपेक्षा करनेवाली रामेश्वरी उन बच्चों की प्यारी - प्यारी बातों और चेष्टओ से मुग्ध हो जाती और उन्हे हदय से लगा लेना चाहती है। किन्तु अकस्मात उसके हृदय में यह भाव पनप जाता है। कि ये मेरे नहीं, पराये बच्चे है । अन्त मे छज्जे से गिरता हुआ मनोहर ताई से बचाने की दीन याचना करता है, तब ताई दुविधा मे पडी थी कि क्या उसे बचाये या गिर मरने दे । आखिर उसका दिल पसीज गया और उसे बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। किन्तु तब तक वह गिर पडा। दुर्घटनाग्रस्त होने पर पश्यात्ताप से ताई का हृदय परिवर्तित हो गया । तदुपरांत बच्चे उसके प्राणाधार हो गये।

3. रामेश्वरी के चरित्र की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए?

ज. मनोहर और चुन्नी कृष्णदास की संताने है। बाबू रामजीदास और रामेश्वरी उन बच्चों के ताऊ और ताई है। वे निस्संतान है । ताऊ जी बच्चों को प्यार करते अपनी संतानहीनता का दुःख भूल जाते है। किन्तु रामेश्वरी को संतान के अभाव का दुःख बराबर खटकता रहता है। रामेश्वरी के दिल मे मातृत्व की भावना मौजूद है। किन्तु पति का बच्चो के प्रति अपार प्रेम रामेश्वरी मे बच्चों के प्रति द्वेष का रूप धारण कर लेता है। मातृत्व की अपेक्षा करनेवाली रामेश्वरी उन बच्चों की प्यारी - प्यारी बातो और चेष्टाओ से मुग्ध हो जाती और उन्हे हदय से लगा लेना चाहती है। किन्तु

Rahul Publications

अकस्मात उसके हदय में यह भव पनप जाता है। कि ये मेरे नहीं, पराये बच्चे है । अन्त मे छज्जे से गिरता हुआ मनोहर ताई से बचाने की दीन याचना करता है, तब ताई दुविधा मे पडी थी कि क्या उसे बचाये या गिर मरने दे । आखिर उसका दिल पसीज गया और उसे बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। किन्तु तब तक वह गिर पडा। दुर्घटनाग्रस्त होने पर पश्यात्ताप से ताई का हृदय परिवर्तत हो गया । तदुपरांत बच्चे उसके प्राणाधार हो गये।

लघु प्रश्न

1. बाबू रामजीदास की पत्नी कौन है?

ज. बाबू रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी है।

2. रामजीदास के छोटे भाई का नाम क्या है?

ज. रामजीदास के छोटे भाई का नाम कृष्णदास है।

3. रामेश्वरी किनकी ताई है?

ज. रामेश्वरी मनोहर और चुन्नी की ताई है।

4. रामेश्वरी के दुःख का क्या कारण है?

ज. अपनी सन्तानहीनता रामेश्वरी के दुःख का कारण है ।

5. रामेश्वरी को बच्चों के प्रति घृणा कब - कब पैदा होती थी ?

ज. रामेश्वरी को जब यह ध्यान होता था कि बच्चे मेरे नही - पराये है, तब उसके मन मे बच्चो के प्रति घृणा पैदा होती थी।

Rahul Publications

9. राजनीति का बँटवारा

- हरिशंकर परसाई

लेखक का परिचय :-

प्रस्तुत पाठ राजनीति का बँटवारा के लेखक हरिशंकर परसाई हैं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के जमानी में सन् 1922 में हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम ए की डिग्री प्राप्त की। उन्होने 'नई दुनिया', कल्पना, सारिका, आदि पत्रिकाओ में नियमित रूप से लेखन का कार्य किया। अनेक कहानियां निबंध लिखे। उनमें से हँसते है, रोते है, भूत के पाँव पीछे, रानी नागफनी की कहानी आदि प्रसुख है। परसाई जी व्यंग्यकार के रूप में अत्यंत प्रसिद्ध है। आपका निधन 10 अगस्त 1955 में हुआ।

सारांश :-

प्रस्तुत पाठ 'राजनीति का बँटवारा' में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया है। नगर निगम के चुनाव होनेवाले थे और समस्या यह थी कि किस पार्टी के हाथ में निगम जाता है। सेठ जी का परिवार कई करोडवाले है । सब देशभक्त है। वे गाँधीजी से नाराज है। वे राष्ट्रपिता बनना चाहते थे, पर गाँधीजी ने उन्हे नहीं बनने दिया।

कई एजेंसियाँ परिवार ने ले रखी है। कई चीजों के स्टाकिस्ट है। इस कारण देश भक्ति और बढ़ गई है। यह नैतिकता है - चुंगी- चोरी, स्टाक दबाना, मुनाफाखोरी करना, ब्लैक से देश का माल बेचना। ये देश भक्त ने बलिदान मंदिर बनवाकर काफी चंदा खा गए। लोग शक करे तो भैय्या जी ने कहा कि हर धंधे में कमीशन मिलता है। शहीदों ने खू दिया। तो मैंने यदि चंदे में से कमीशन नहीं खाया तो स्वर्ग में शहीदों की आत्मा को कैसे कष्ट होगा। वे तो मर गए। मैं जीवित हूँ। अमर शहीद तो मैं ही हुआ ना। वे तो अमर शहीद नहीं हुए।

राष्ट्रीय समस्या पर पूरा परिवार विचार कर रहा है। भैयाजी बडे होशियार है। आखरी बार जेल जाते समय छोंटे भाई से कहा कि दस हजार रूपया अंग्रेज कलेक्टर को ब्रिटिश वार - फंड में दे देना। लडाई खत्म होकर स्वराज्य मिल जाय तो मैं। अंग्रेज रहें तो तुम। यदि नगर निगम कांग्रेस के हाथ में आया तो मै तो हूँ ही। उनका एक भतीजा पढ़ा लिखा जवान था। एम.ए करके शोध कर रहा था।

वह पूछने लगा कि ''जेल में 'ए' कलास के मजे ही मजे है। 'ए' कलासवालों ने कई किताबें लिखी। आपने भी हजारों पृष्ठ लिखे थे। लोग कहते है कि यह सब आपने नहीं लिखा। किसी से लिखवाया है। परिवार में विद्रोही माने जाने वाल यह भतीजा है। कहता है कि मैं इन धन और प्रतिष्ठा के मलबे के नीचे दबकर नहीं मरूँगा। मैं शोध करके नौकरी करूँगा। भैय्याजी बोल रहे कि यदि कांग्रेस का कब्जा

निगम पर हो गया तो भी उसी मार्ग पर चलेगा। बडे भतीजे ने पूछा कि अगर जनसंघ का कब्जा हो गयातो, भैया जी का कहना था की जनसंघ और उनकी पट जाती है। उनकी निगम हो गई तो वे दिन में ही ट्रक बदला येंगे । युवक भतीजा ने पूछा कि कहीं कम्यूनिस्ट जोड तोड करके निगम पर हावी हो गए तो, भैया जी गुस्से में बोले कि लोगों को जेल भेज दूँगा। गाँधी मार्ग विराट मार्ग है। ये क्म्यूनिस्ट देशद्रोही है। लडका चुप नहीं रहा। अगर ये कम्यूनिस्ट जब रूस, लेकोस्लोवायिाँ, क्यूबा में देशद्रोही नहीं है। तो अपने देश में ही देशद्रोही कैसे भैया जी बरदाश नहीं कर सके लडके को डाँटे।

सारी राष्ट्रीय समस्याएँ उनके सामने आयी। भैया जी चिंतन में लग गए। कुछ देर आँख बंद कर लिए। बाद में आँखें खोलकर सभी भाइयों भतीजे को एक एक पार्टी के सदस्य बन जाने की सलाह दिए। परिवार ने संतोष की साँस ली। भैयाजी खुशी से कहने लगे कि इसे कहते है राजनीतिक ज्ञान। अब अपने घर में सब पार्टियाँ हो गई। हमने सारी पार्टियों को तिजोरी में बंद कर लिया है।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ ''राजनीति का बंटवारा'' में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यग्य किया है। भैया जी जैसे लोगों की लालची प्रवृत्ति पर व्यंग्य कर समाज को सचेत करना लेखक का उद्धेश्य है।

Rahul Publications

9. రాజకీయ పంపకం

రచయిత పరిచయం :

ప్రస్తుత పాఠము రాజనీతీకాఒంటవారా రచయిత శ్రీ హరిశంకర పరసాయీగారు. మధ్యప్రదేశ్‌లోని జమానీ అనే ప్రాంతంలో 1924వ సంవత్సరంలో ఆయన జన్మించారు. నాగపూర్ విశ్వవిద్యాలయం నుండి ఎమ్.ఎ. పట్టా పొందారు. "నయూ దునియా" "కల్పనా", సారిక లాంటి పత్రికలలో ధారావాహికంగా రచనలు చేశారు. అనేక వ్యాసాలు, కథలూ రాశారు. "హసతె హైరోతేహై" భూతికె పాంపీఛే" రాణి కీ నాగఫణీ కహానీ" మొదలగునవి ప్రసిద్ధమైనవి. పరసాయీ హాస్యరచయితగా సుపరిచితులు ఆగస్టు 10, 1955న స్వర్గస్థులైనారు.

సారాంశము

ప్రస్తుత పాఠము "రాజనీతీకా బంటవారా'లో పరసాయీగారు నేటి సమాజములో వ్యాపించిన రాజకీయాలపై వ్యంగ్యంగా విమర్శించారు. ఆ పట్టణంలో మున్సిపల్ కార్పోరేషన్ ఎన్నికలు జరగనుతున్నాయి. కార్పోరేటర్ పదవి ఏ పార్టీకి దక్కుతుందో? అని అందరూ ఎదురుచూస్తూన్నారు. సేర్‌క్ గారి కుటుంబం కోట్టీశులు అందరూ దేశభక్తులే. కానీ వారు గాంధీజీ పట్ల గుర్రుగా ఉండేవారు. వాళ్ళు జాతిపితలు కావాలనుకుంటున్నారు. కానీ గాంధీజీ వాళ్ళను కానివ్వలేదు.

ఈ కుటుంబానికి అనేక ఏజన్సీలున్నాయి. చాలా వస్తువులు స్టాక్‌లో వున్నాయి. దీనివలన ఇంకా దేశభక్తి పెరిగిపోయింది. స్టాకును గోడౌన్లులో దాచటం, లాభాలు/పన్ను గడించడం ఎగవేత, బ్లాకులో మాల్ అమ్ముకోవటం. ఇదీ వీళ్ళ నీతి. ఈదేశభక్తులు బలిదాన్ మందిర్ (త్యాగాల దేవాలయము) నిర్మించారు. ఆ నిర్మాణం కోసం

వసూలు చేసిన చందాలలో చాలాభాగం కొట్టేశారు. ప్రజలకు అనుమానం కలిగితే భయ్యాగారు ఇలా అన్నారు. "ప్రతిదందాలోనూ కమీషన్ దొరుకుతుంది. వీరులు బలిదానాలు చేశారు. కనీసం చందాలలో కమీషన్ అయినా దొరకకపోతే స్వర్గంలో వీరుల ఆత్మకు ఎంత నష్టం జరుగుతుందో? వాళ్ళేమో చనిపోయారు. నేను బతికే ఉన్నాను. నేను అమర వీరుడినయ్యాను కదా! వాళ్ళు అమరవీరులు కాలేకపోయారు కదా!

జాతీయసమస్య కార్పొరేట్ ఎన్నికల పై కుటుంబమంతా ఆలోచనలతో మునిగిపోయింది. భయ్యాగారు చాలా తెలివైనవారు చివరిసారిగా జైలుకు వెళ్ళుతున్నప్పుడు తన తమ్ముడితో ఇలా అన్నారు. 10 వేల రూపాయలు బ్రిటీష్ కలెక్టరుకు వారి ఫండ్ కోసం ఇవ్వు. యుద్ధం సమాప్తమయి. ఒకవేళ స్వాతంత్ర్యం కనుక వస్తే నేను బ్రిటీష్ వాళ్ళే కనుక ఉంటే నువ్వు. ఒకవేళ నగర కార్పొరేట్ పదవి కాంగ్రెస్ పార్టీ చేతుల్లోకి వెళితే నేను ఉండనే ఉన్నాను. కదా? భయ్యాగారి అన్నకొడుకు బాగా చదువుకుని ఎమ్.ఎ. చేసి, రిసెర్చ్ చేస్తున్నాడు.

అతని అడుగుతున్నాడు జైలులో 'ఎ' క్లాసులో ఎంజాయే ఎంజాయి. 'ఎ' క్లాసు ఖైదీలు చాలా పుస్తకాలు రాశారు. మీరు కూడా 1000 పేజ్ గ్రంథం రాశారు కదా! అందరూ ఆ గ్రంథం మీరు రాయలేదనీ ఎవరితోనూ రాయించారని అనుకుంటున్నారు. కుటుంబంలోనే ద్రోహిగా పిలవబడే ఈ యువకుడు ఇంకా ఇలా అన్నాడు. ఆ డబ్బు, ప్రతిష్ఠల క్రింద పడినలగిపోవాలని నేను అనుకోవడం లేదు. నేను రీసెర్చ్‌చేసి ఉద్యోగం చేస్తాను. అప్పుడు భయ్యాజీ కాంగ్రెస్‌కు కార్పొరేట్ దక్కితే నేనూ అనే మార్గంలో వెళ్తాను అని అన్నాడు. పెద్ద అన్న కొడుకు అడిగాడు ఒకవేళ జనసంఘుకు ఆసీటు దక్కితే? భయ్యాజీ ఒకవేళ జనసంఘాన్ని ఆ పదవి దక్కితే ఒక్కరోజులో నేను ప్లేటు ఫిరాయిస్తాను. ఒకవేళ కమ్యూనిస్ట్‌లు గొడవలు చేసి పదవి దక్కించుకుంటే అని అన్న కొడుకు అడిగిన దానికి ఒక్కసారిగా భయ్యాజీకి కోపం వచ్చి అందరినీ జైలులో పెట్టిస్తాను. అని గట్టిగా అరుస్తాడు. గాంధీ మార్గం విశాలమైనది. ఈ కమ్యూనిస్టులు దేశద్రోహులు అంటాడు. కుర్రవాడు మౌనంగా ఉండలేక ఒకవేళ ఈ కమ్యూనిస్టులు రష్యా, జెకొస్లేవేకియా, క్యూబా-లలో దేశ ద్రోహులుకానప్పుడు మన దేశంలోనే దేశద్రోహులు ఎలా అయ్యారు అని అంటాడు. భయ్యాజీ తట్టుకోలేక కుర్రవాడిని కేకలేస్తాడు.

అన్ని జాతీయ సమస్యలు వాళ్ళముందుకు వచ్చాయి. భయ్యాజీ ఆలోచనలో పడిపోయాడు. కళ్ళుమూసుకున్నాడు. తర్వాత కళ్ళు తెరిచి తనసోదరులనూ, సోదర కుమారులనూ పిలిచి ఒక్కొక్కరు ఒకొక్క పార్టీలో సభ్యులు కమ్మని సలహాఇస్తాడు. కుటుంబం మొత్తం ఊపిరి పీల్చుకుంది. భయ్యాజీ ఆనందంగా "దీన్ని రాజకీయ జ్ఞానం అంటారు. ఇప్పుడు మన ఇంట్లోనే అన్ని పార్టీలు ఉన్నాయి. మనం అన్ని పార్టీలను ఇనుపపెట్టెలో తాళం వేసి బంధించేశాము. అని అన్నాడు.

విశేషము :

ప్రస్తుత రాజనీతీ కా బంటవారా" పాఠములో పరసాయీగారు నేటి సమాజంలో వ్యాపించి వున్న రాజకీయలపై వ్యంగ్యాస్త్రం ప్రయోగించారు. భయ్యాజీ లాంటి వ్యక్తుల దురాశా ప్రవృత్తిని వ్యంగ్యంగా చిత్రించి సమాజాన్ని చైతన్యవంతం చెయ్యటం రచయిత ముఖ్య ఉద్దేశ్యం.

Rahul Publications

संदर्भ सहित व्याख्याए

1. नगर निगम के चुनाव होने वाले थे और समस्या यह थी कि किस पार्टी के हाथ में निगम जाता है।

उत्तर

1. **सामान्य संदर्भ :-** प्रस्तुत संदर्भ राजनीति का बँटवारा के लेखक हरिशंकर परसाई है। आपका जन्म मध्यप्रदेश के जमानी में सन् 1924 में हुआ था। परसाईजी व्यंग्याकार के रूप में अत्यंत प्रसिद्ध हैं। आपका निधन अगस्त 1955 में हुआ।

2. **व्यारव्या :-** प्रसतुत संदर्भ में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर तीखा व्यंग्य किया है। नगर निगम के चुनाव होनेवाले थे और समस्य यह थी कि किस पार्टी के हाथ में निगम जाता है। सेठ जी का परिवार सलाह करने बैठा है। समस्या राष्ट्रीय है। आखिर इस राष्ट्र का होगां क्या?

विशेषता

- प्रस्तुत संदर्भ में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया है।

2. वह मार्ग उचित नहीं है। गाँधीजी ने सत्य पर जोर दिया है।

उत्तर

1. **सामान्य संदर्भ :-** प्रस्तुत संदर्भ राजनीति का बँटवारा के लेखक हरिशंकर परसाई है। आपका जन्म मध्यप्रदेश के जमानी में सन् 1924 में हुआ था। परसाईजी व्यंग्याकार के रूप में अत्यंत प्रसिद्ध हैं। आपका निधन अगस्त 1955 में हुआ।

2. **व्यारव्या :-** प्रस्तुत संदर्भ में भैय्याजी का भतीजा उनके परिवार में विद्रोह माना जाता है। भैया जी के तीसरे भाई भतीजे को दारू पिलाने की सालाह देता है। तब भैया जी कहते है कि यह मार्ग उचित नही है। गाँधीजी ने सत्य पर जोर दिया है।

विशेषता

- प्रस्तुत संदर्भ में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया है।

Rahul Publications

3. राजनितिक ज्ञान इसे कहते है। अब अपने घर में सब पार्टियाँ हो गई।

उत्तर

1. **सामान्य संदर्भ :-** प्रस्तुत संदर्भ राजनीति का बँटवारा के लेखक हरिशंकर परसाई है। आपका जन्म मध्यप्रदेश के जमानी में सन् 1924 में हुआ था। परसाईजी व्यंग्याकार के रूप में अत्यंत प्रसिद्ध हैं। आपका निधन अगस्त 1955 में हुआ।

2. **व्यारव्या :-** भैया जी के घर में नगर निगम के बारे में चर्चा चल रही थी। भैया जी चिंतन में लग गए । आँख बंद कर लिया । बाद में आँखें खोलकर सभी भाइयो और भतीजों को एक एक पार्टी के सदस्य बन जाने की सलाह दिया ।

विशेषता

- प्रस्तुत संदर्भ में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया है।

दीर्घ प्रश्न

1. राजनिति का बँटवारा पाठ की विषय - वस्तु संक्षेप में लिखित?

ज. प्रस्तुत पाठ ‘राजनीति का बँटवारा’ में परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया है। नगर निगम के चुनाव होनेवाले थे और समस्या यह थी कि किस पार्टी के हाथ में निगम जाता है। सेठ जी का परिवार कई करोडवाले है । सब देशभक्त है। वे गाँधीजी से नाराज है। वे राष्ट्रपिता बनना चाहते थे, पर गाँधीजी ने उन्हे नहीं बनने दिया।

कई एजेंसियों को परिवार ने ले रखी है। कई चीजों के स्टाकिस्ट है। इस कारण देश भक्ति और बढ़ गई है। यह नैतिकता है - चुंगी- चोरी, स्टाक दबाना, मुनाफाखोरी करना, ब्लैक से देश का माल बेचना। ये देश भक्त ने बलिदान मंदिर बनवाकर काफी चंदा खा गए। लोग शक करे तो भैय्या जी ने कहा कि हर धंधे में कमीशन मिलता है। शहीदों ने खून दिया। तो मैंने यदि चंदे में से कमीशन नहीं खाया तो स्वर्ग में शहीदों की आत्मा को कितना कष्ट होगा। वे तो मर गए। मैं जीवित हूँ। अमर शहीद तो मैं ही हुआ ना। वेतो अमर शहीद नहीं हुए।

राष्ट्रीय समस्या पर पूरा परिवार विचार कर रहा है। भैयाजी बडे होशियार है। आखरी बार जेल जाते समय छोंटे भाई से कहा कि दस हजार रूपये अंग्रेज कलेक्टर को ब्रिटिश वार - फंड में दे देना। लडाई खत्म होकर स्वराज्य मिल जाय तो मैं। अंग्रेज रहें तो तुम। यदि नगर निगम कांग्रेस के हाथ में आया तो मै तो हूँ ही। उनका एक भतीजा पढ़ा लिखा जवान था। एम.ए करके शोध कर रहा था।

Rahul Publications

उसने पूछने लगा कि ''जेल में 'ए' कलास के मजे ही मजे है। 'ए' कलासवालों ने कई किताबें लिखी। आपने भी हजारों पृष्ठ लिखे थे। लोग कहते है कि यह सब आपने नहीं लिखा। किसी से लिखवाया है। परिवार में विद्रोही माने जाने वाल यह भतीजा है। कहता है कि मैं इन धन और प्रतिष्ठा के मलबे के नीचे दबकर नहीं मरूँगा। मैं शोध करके नौकरी करूँगा। भैयाजी बोल रहे है कि यदि कांग्रेस का कब्जा निगम पर हो गया तो भी उसी मार्ग पर चलेगा। बडे भतीजे ने पूछा कि अगर जनसंघ का कब्जा हो गया भैया जी का कहना था की जनसंघ उनका पट जाता है। उनकी निगम हो गई तो वे दिन में ही ट्रक बदला येंगे । युवक भतीजा ने पूछा कि कहीं कम्यूनिस्ट जोड तोड करके निगम पर हावी हो गए तो, भैया जी गुस्से में थे लोगों को जेल भेज दूँगा। बोले कि गाँधी मार्ग विराट मार्ग है। ये क्म्यूनिस्ट देशद्रोही है। लडका चुप नहीं रहा। अगर ये कम्यूनिस्ट जब रूस, लेकोस्लोवाकिया, क्यूबा में देशद्रोही नहीं है। तो अपने देश में ही देशद्रोही कैसे भैया जी बरदाश नहीं कर सके लडके को डाँटे।

सारी राष्ट्रीय समस्याएँ उनके सामने आयी। भैया जी चिंतन में लग गए। कुछ देर आँख बंद कर लिए। बाद में आँखें खोलकर सभी भाइयों भतीजे को एक एक पार्टी के सदस्य बन जाने की सलाह दिए। परिवार ने संतोष की साँस ली। भैयाजी खुशी से कहने लगे कि इसे कहते है राजनीतिक ज्ञान। अब अपने घर में सब पार्टियाँ हो गई। हमने सारी पार्टियों को तिजोरी में बंद कर लिया है।

Rahul Publications

2. राजनिति का बँटवारा पाठ में जहाँ जहाँ व्यंग्य कसे गए है। उनपर प्रकाश डालते हुए टिप्पणी कीजिए?

ज. भैया जी बडे होशियार है। आखरी बार जेल जाते समय छोटे भाई से कहा कि दस हजार रूपया अंग्रेज कलेक्टर को ब्रिटिश वार-फंड में दे देना। लडाई खत्म होकर स्वराज्य मिल जाएगा तो मैं अंग्रेज रहे तो तुम। यदि कांग्रेस का कब्जा निगम पर हो गया तो भी उन्ही मार्ग पर चलेगा। और कह रहे है कि जनसंघ पार्टी उनके साथ पट जाता है। उनकी निगम हो गई तो वे दिन में ही ट्रक बदला देंगे। वे गाँधीजी का विरोध करते थे। लेकिन जब कम्यूनिस्ट पार्टी के बारे में चर्चा आई तो वे गाँधी मार्ग को विराट मार्ग समझे बदल जाने का सलाह दिया। भैया जी जैसे लोगों की चालाकी प्रवृत्ति पर व्यंग्य कर समाज को सचेत करना लेखक का मुख्य उदेश्य है।

3. राजनीति का बंटवारा पाठ के आधार पर भैयाजी का चित्रांकन कीजिए?

ज. भैया जी बडे होशियार है। आखरी बार जेल जाते समय छोटे भाई से कहा कि दस हजार रूपया अंग्रेज कलेक्टर को ब्रिटिश वार-फंड में दे देना। लडाई खत्म होकर स्वराज्य मिल जाएगा तो मैं अंग्रेज रहे तो तुम। यदि कांग्रेस का कब्जा निगम पर हो गया तो भी उन्ही मार्ग पर चलेगा। और कह रहे है कि जनसंघ पार्टी से उनका पट जाति है। उनकी निगम हो गई तो वे दिन में ही ट्रक बदला देंगे। वे गाँधीजी का विरोध करते थे। लेकिन जब कम्यूनिस्ट पार्टी के बारे में चर्चा आई तो वे गाँधी मार्ग को विराट मार्ग समझे बदल जाने का सलाह दिया। भैया जी जैसे लोगों की चालाकी प्रवृत्ति पर व्यंग्य कर समाज को सचेत करना लेखक का मुख्य उदेश्य है।

लघु प्रश्न

1. राजनीती का बंटवारा पाठ के लेखक कौन है?

ज. राजनीति का बंटवारा पाठ के लेखक हरिशंकर परसाई है।

2. भतीजा ने भैयाजी से क्या कहे।

ज. भतीजा ने भैयाजी से कहा कि मै इन धन और प्रतिष्ठा के मलबे के नीचे दबकर नहीं मरूँगा।

3. भैयाजी क्या बनना चाहते थे?

ज. भैयाजी राष्ट्रपिता बनना चाहते थे।

4. गाँधीजी के मार्ग को भैयाजी कौनसा मार्ग कहते है?

ज. गाँधीजी के मार्ग को भैयाजी विराट मार्ग कहते है।

5. आखिर नगर निगम समस्या का हल भैयाजी ने कौन सी सलाह दि।

ज. एक एक पार्टी के सदस्य बन जाने की सलाह दि।

Rahul Publications

10. स्वामी विवेकानंद

- पं. वंशीधर विद्यालंकार

लेखक का परिचय :- प्रस्तुत लेख ''स्वामी विवेकानंद'' के लेखक पं. वंशीधर विद्यालंकार है। आप आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार है। आपका जन्म 22 जून 1900 ई.में. पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत डेरागाजी खाँ जिले में हुआ था। फूलो का भंडार माने जाने वाले स्थान पर वंशीधर जी का जन्म होने से फूलों से कविता लिखने की प्रेरणा उनको मिली । उन्होने फूलों का बाजार, फूलों का दरबार, गुलाब की पंखुडियाँ आदि कविताएं। इसके अतिरिक्त निबंध, आलोचना, कहानियाँ, नाटक आदि विधाओ पर भी लेखनी चलाई । 22 फरवरी 1966 को परलोक सिधारे।

सारांश :- प्रस्तुत पाठ ''स्वामी विवेकानंद'' में विवेकानंद के जीवन का बडा ही प्रभावशाली वर्णन किया गया है। स्वामी विवेकांनद का जन्म 12-01-1862 ई.में हुआ । माता, पिता का नाम श्रीमती भुवनेश्वरी देवी, श्री विश्वनाथ है। बचपन में उनका नाम नरेंद्र था । 1884 ई.में बी.ए. की डिग्री नरेंद्र ने प्राप्त की। नरेंद्र की माता महत्वाकांक्षी स्त्री थी । उनकी इच्छा थी कि उनका लडका वकील हो, अच्छे घर में ब्याह हो और दुनिया के सुख भोगे। लेकिन नरेन्द्र के अन्दर बचपन से ही एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी। समस्त मानव जाति के प्रति प्रेम और कल्याण ही उनके जीवन का उद्देश्य था। त्याग और सेवा उनके दो मूल मंत्र थे।

Rahul Publications

उन दिनों विवेकानंद स्काटिश चर्च कालेज के प्रथम वर्ष में पढ़ रहे थे । वे बचपन से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि और चिंतनशील थे । फिलासौफी उनका प्रिय विषय था । एक दिन प्रोफेसर हैस्टिक ने विद्यार्थियों से कहा कि ''ट्रांस एक तरह की अनुभूति है जो कि एक शुद्ध और पवित्र मन को होती है जब कि चिंतनशील मन किसी एक विषय पर ध्यानावस्थित हो जाता है और बताए कि एक व्यक्ति को उन्होंने समाधि के अवस्था में देखा है। बी ए की उपाधि को प्राप्त करने के बाद विवेकानंद्, ने वकील बनने के लिए सोच रहे थे । एक दिन उनके चाचा उन्हे रामकृष्ण के पास ले गये । विवेकानंद उनके पास घंटो बैठे रहते थे और उनसे धर्म और वेदांत के संबंध में शिक्षा ग्रहण करते थे । उनकी भक्त - मंडली में सम्मिलित हो गए। उस सच्चे गुरू से व्यक्तित्व और वेदांत रहस्य जानकर नरेद्रं पर ही आया। रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु 16 अगस्त 1886 को हुई रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि के बाद उनके शिव्यों के नेतृत्व का भार नरेंद्र पर ही आया। उन्होने साथियो के साथ सन्यास व्रत ले लिया। तब से नरेंद्रनाथ स्वामी विवेकानंद हुए। उच्च्य आध्यत्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए हिमालय की ओर चले गए । वे इस प्रकार समस्त भारत वर्ष की यात्रा तीन वर्ष तक करते रहे। वे आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी, संस्कृत, बंगाली या हिन्दी में लोगों को उत्तर देते थे। जिज्ञासु लोगों को धर्म और नीति कें तत्वों के उपदेश देते थे।

कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का संगम है। कन्याकुमारी के समुद्र में एक शिला है। उन्होंने इस शिला पर खडे होकर यह संकल्प किया कि वे भारतवर्ष को इन दीन परिस्थितियों में से निकालने का प्रयत्न करेंगे । कन्याकुमारी के समुद्र की यह शिला ''विवेकांनद शिला'' के नाम से प्रसिद्ध है। अपने शिष्यों की सहायता से स्वामी जी अमेरिका में होनेवाले सर्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उनकी यह यात्रा अमेरिका के इतिहास की अमर घटना है। वहाँ विभिन्न धर्मो के प्रतिनिधि बडे बडे पादरी और धर्मशास्त्र के आचार्य हजारों की संख्या में उपस्थित थे। विवेकानंद ने अपने व्यारव्यानों मे अमेरिका के लोगों को वेदांत तत्व समझाने का प्रयत्न किया। विवेकानंद ने अपने अमेरिका के व्याख्यानो में कहा था कि-पूर्व में सबसे बडी आवश्यकता धर्म की नहीं है। उनके पास धर्म पर्याप्त मात्रा में है। मैं अपने देश की दीन हीन जनता के लिए रोटी की सहायता की खोज में आया हूँ। स्वामीजी ने पांडित्यपूर्ण, ओजस्वी और धारा प्रवाह भाषण दिये । इससे श्रोता मंडली मुग्ध हो गये।

विवेकानंद चाहते थे भारतीय विदेश जाएँ और विदेश के लोग भारतवर्ष आएँ। जिस प्रकार गाँधीजी ने सर्वोदय समाज की स्थापना की थी उसी प्रकार विवेकानंद सर्वकता को व्यापक धर्म बनाना चाहते थे । वे भारतीयों में सब प्रकार की विषमताओं और भेदभावो को दूर करना चाहते थे। उन्होंने रामकृष्ण मिशन, मठों और आश्रमो की स्पापना की । 1897 में उन्होंने अकाल - पीडितों की सेवा के लिए अपने बहुत से शिष्यों को भेजा। रामकृष्ण मिशन के अस्पतालों, मठो और आश्रमों के द्वारा उन्होंने भारतवर्ष और विश्व की सेवा करने का प्रयत्न किया। स्वामी विवेकानद ने सानफ्रान्सिसको में ''शांति आश्रम''. और वेदांत सोसइटी की स्थापना की । उन्होंने बनारस मे एक पाठशाला और दीनों के लिए एक ''होम'' की स्थापना की । साधुओं के लिए मठो की स्थापना की, रामकृष्ण मिशन ने देश के अनेक भागों में जनता की बहुमूल्य सेवा की है। शिक्षा के संबंध में उनके विचार थे कि हमारी शिक्षा एक सूचना मात्र नहीं होनी चाहिए। वह हमारी जीवन का, मानवता का, चरित्र का निर्माण कर सके।

स्वामी विवेकानंद अधिक शक्ति से कार्य करने की वजह से बीमार हो गए, बहुत से इलाज किए लेकिन कार्य के बोझ से उनकी बीमारी बढ़ती ही गई । 4 जुल्ई सन् 1902 में स्वामी जी प्रातःकाल समाधिस्थ थे बाद मे नए विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाई । दुपहर में फिर समाधिस्थ हो गए। सायंकाल उन्होने थोडा सा भ्रमण किया और लैट कर वे प्रार्थना करते हुए समाधिस्थ हो गए। रात को 9 बजे को शरीर त्याग कर परम धाम को सिधार गए । स्वामी विवेकानंद से चलाए गए आध्यात्मिक ज्योति सदा के लिए संसार को प्रकाशित करती रहती है और रहेगी।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ जीवनी परक लेख है। स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व चरित्र और जीवन की प्रमुख घटनाओ का सजीव वर्णन किया गया। भाषा शौली सरल व सरस है।

Rahul Publications

10. స్వామి వివేకానందుడు

రచయిత పరిచయము:

"స్వామి వివేకానందుడు" అను ఈ పాఠ రచయిత పండిత వంశీధర విద్యాలంకార్ గారు. ఆధునిక హిందీ సాహిత్యంలో ఆయన ప్రముఖులు. 22 జూన్ 1900లో పశ్చిమోత్తర ప్రాంతమైన డెరాగాజ్ ఖా జిల్లాలో జన్మించారు. పువ్వుల ఖజానాగా పిలవబడే ఈ ప్రదేశంలో వంశీధర్ గారు జన్మించటం వలన కవితలు రాయటానికి పూవుల నుండి ప్రేరణ లభించింది. ఫ్లలోంకే బజార్, ఫ్లూలోంకే దర్బార్, గులాబ్‌కే పంఖడియా మొదలగు కవితలు రాశారు. వనదర్శన్, రాష్ట్రీయ భావనలకు సంబంధించిన అనేక రచనలు చేశారు. ఇవే కాకుండా వ్యాసాలు, విమర్శ, కథలు, నాటికలు మొదలగు అనేక ప్రక్రియలలో కూడా సాహిత్యం రాశారు. 22 ఫిబ్రవరి 1966నా స్వర్గస్థులైనారు.

సారాంశము:

ప్రస్తుత పాఠము స్వామి వివేకానందలో వివేకానందుడి జీవితాన్ని ప్రభావవంతంగా వర్ణించడం జరిగింది. స్వామి వివేకానందుడు 12-01-1863లో జన్మించారు. శ్రీమతి భువనేశ్వర్ దేవీ, శ్రీవిశ్వనాథత్తులు తల్లిదండ్రులు. బాల్యంలో ఆయన పేరు నరేంద్రనాథ్ 1884లో నరేంద్రుడు బి.ఎ.డిగ్రీని పొందాడు. నరేంద్రుడి తల్లికి ఆయనపై ఎన్నో ఆకాంక్షలు ఉన్నాయి. ఆమెకు తన కుమారుడు వకీలు కావాలని మంచి గృహస్థుడై సుఖపడాలని వుండేది. కానీ నరేంద్రుడిలో బాల్యము నుండే ఒక ఆధ్యాత్మిక దాహముండేది. సమస్త మానవ జాతి పట్ల ప్రేమ, శుభం కలగాలనీ ఆయన జీవిత ఉద్దేశ్యము. త్యాగము, సేవ ఆయన ప్రధాన సిద్ధాంతాలు.

ఆరోజులలో వివేకానందుడు స్కాటిష్ చర్చి కాలేజ్ ప్రథమ సంవత్సరం చదువుతుండేవారు. ఆయన బాల్యం నుండే అత్యంత చింతనశీలతను కలిగివుండేవారు. ఫిలాసఫీ ఆయన ప్రియ విషయము. ఒక రోజు ప్రొఫెసర్ హైస్టెక్ విద్యార్థులకు ట్రాన్స్ శబ్దము యొక్క అర్థాన్ని చెప్తూ ట్రాన్స్ అనేది ఒక అనుభూతి. ఒక పరిపూర్ణ పవిత్రమైన మనస్సుకు సంబంధించినది. చింతనశీల మనస్సు ఏదో ఒక విషయములో ధ్యానవస్థితమవుతుంది అని అన్నారు. ప్రొఫెసర్ రామకృష్ణ పరమహంసను మాత్రమే తాను సమాధివస్థతలో చూశానని చెప్పారు. బి.ఎ. డిగ్రీ పొందాక వివేకనందుడు వకీలు కావాలనుకున్నారు. ఒకసారి ఆయన బాబాయి ఆయనను రామకృష్ణుని దగ్గరకు తీసుకెళ్ళారు. ఆయన దగ్గర వివేకానందుడు గంటలతరబడి కూర్చొని మతము, వేదాంతానికి సంబంధించిన విషయాలను తెలుసుకునే వారు. ఆయన భక్తమండలిలో సభ్యులయ్యారు వివేకానందుడు. నిజగురులైన రామకృష్ణ పరమహంస దగ్గర ఆధ్యాత్మక తత్వాలను, వేదాంత రహస్యాలను తెలుసుకుని నరేంద్రుడి ఆధ్యాత్మక దాహతి శాంతించింది.

16 ఆగస్టు 1886న రామకృష్ణ పరమహంస సమాధివస్థకు వెళ్ళారు. రామకృష్ణ పరమహంస మహాసమాధి పొందాక ఆయన శిష్యుల నాయకత్వ బాధ్యత నరేంద్రుడి మీద పడింది. ఆయన సన్యాసిగా మారారు. అప్పటినురేచ నరేంద్రనాథ్ స్వామీ వివేకానంద అయ్యారు. ఆధ్యాత్మిక జ్ఞాన ప్రాప్తికోసం హిమాలయాలకు వెళ్ళారు. అక్కడి

నుండి టిబెట్ వెళ్ళారు. కలకత్తా నుండి భీహార్, ఉత్తరప్రదేశ్, ఢిల్లీ వెళ్ళారు. ఢిల్లీ నుండి రాజస్థాన్, గుజరాత్, మహారాష్ట్ర, కర్ణాటక, కేరళ మరియు మద్రాస్ వెళ్ళారు. ఆయన ఈ విధంగా సమస్త భారతదేశ యాత్ర 3 సంవత్సరాలలో చేశారు. ఆయన అవసరాన్ని బట్టి ఇంగ్లీషు, సంస్కృతము, బెంగాలీ లేదా హిందీలో ప్రజలకు సమాధానాన్ని ఇచ్చేవారు. జిజ్ఞాసులైన ప్రజలకు మతము, నీతి తత్వాలను ఉపదేశించేవారు.

కన్యాకుమారీలో మూడునదుల సంగమం వున్నది. కన్యాకుమారీ సముద్రంలో ఒకరాయి ఉంది. వివేకానందుడు ఈ రాయిపై నిలబడి భారతదేశాన్ని ఈదేశ దీనపరిస్థితుల నుండి బయటకు తేవటానికి సంకల్పించారు. కన్యాకుమారీ సముద్రంలోని ఈ రాయి "వివేకానందుని శిల" గా ప్రసిద్ధి నొందింది. తన శిష్యుల సహకారంతో స్వామి వారు అమెరికాలో జరిగే సర్వమత సమ్మేళనంలో పాల్గొన్నారు.

ఆయన అమెరికా యాత్ర చరిత్రలో శాశ్వతమైనది. అక్కడ విభిన్న మతాల ప్రతినిధులు పెద్దపెద్ద ఫాదర్‌లు మరియు మతాచార్యులు వేల సంఖ్యలు పాల్గొన్నారు. వివేకానందుడు తన ఉపన్యాసాలు ద్వారా అమెరికా ప్రజలకు వేదాంత తత్వాన్ని బోధించటానికి ప్రయత్నించారు. వివేకానందుడు తన ఉపన్యాసాలలో పదమటలో అన్నింటికంటే అత్యవసరం మతానిది కాదు. మతం చాలా తక్కువ. నేను నా దేశంలోని దీనులైన ప్రజల కోసం రొట్టె అందించటానికి సహాయాన్ని కోరుతూ వచ్చాను. అని చెప్పారు. స్వామీజీ పాండిత్యానికీ, తేజస్సుకూ ఇంకా ఉపన్యాస ప్రవాహనికీ శ్రోతలు మంత్రముగ్ధులయ్యారు.

భారతీయులు విదేశాలకు వెళ్ళాలని విదేశస్థులు భారతదేశం రావాలని వివేనందుడు అభిప్రాయపడ్డారు. ఏ విధంగా నయితే గాంధీజీ సర్వోదయ సమాజాన్ని స్థాపించారో అదే విధంగా వివేకానందుడు సర్వమత వ్యాప్తికి కృషిచేశారు. ఆయన భారతీయులలోని అన్ని రకాల భేదభావాలనూ దూరం చెయ్యాలనుకొన్నారు. ఆయన రామకృష్ణ మిషన్, మఠాలను ఆశ్రమాలనూ స్థాపించారు. 1897 లో ఆయన దుర్భిక్ష పీడితులకు సేవచేయటానికి ఎంతో మంది శిష్యులను పంపించారు. రామకృష్ణ మిషన్ హాస్పటల్, మఠాలు ఆశ్రమాల ద్వారా ఆయన భారతదేశంలోనే కాకుండా విశ్వసేవచేయటానికి ప్రయత్నించారు. స్వామి వివేకానంద శాన్‌ఫ్రాన్సెన్‌లో "శాంతి ఆశ్రమాన్ని" అలాగే వేదాంత సొసైటీని స్థాపించారు. ఆయన బెనారస్‌లో ఒక పాఠశాలను అభాగ్యుల కోసం ఒక "హోమ్"ను స్థాపించారు. సాధువుల కోసం మఠాలను నిర్మించారు. రామకృష్ణ మిషన్ దేశంలోని అనేక ప్రాంతాలలో ప్రజలకు అమూల్యమైన సేవలు అందించింది. విద్యను గురించి ఆయన అభిప్రాయాలు ఇలా ఉన్నాయి. "మన విద్య సూచన ఇచ్చేదిగా వుండకూడదు. విద్య మన జీవితాన్ని, మానవత్వాన్ని, వ్యక్తిత్వాన్ని నిర్మించేదిగా వుండాలి.

స్వామి వివేకానంద అత్యధికంగా శ్రమించటం వలన జబ్బున పడ్డారు. వైద్యం అందించినా ఫలితం లేకపోయింది. 4 జులై 1902లో స్వామిగారు ప్రాతఃకాల సమాధి వస్థలో ఉన్నారు. తరువాత కొత్త విద్యార్థులకు సంస్కృతం బోధించారు. మధ్యాహ్నం మరలా సమాధివస్థకు వెళ్ళారు. సాయంకాలం వాకింగ్ చేశారు. తిరిగి వచ్చి ప్రార్థన చేస్తూ సమాధివస్థకు వెళ్ళారు. రాత్రి 9 గంటలకు పరవలోకానికి వెళ్ళారు. స్వామి వివేకానందుడు వెలిగించిన ఆధ్యాత్మిక జ్యోతి ఎప్పటికి ప్రపంచంలో ప్రకాశిస్తూనే వుంటుంది.

విశేషము: ప్రస్తుత పాఠము జీవనపరమైన వ్యాసము. ఇందులో వివేకానందుని వ్యక్తిత్వము మరియు ఆయన జీవితంలోని ప్రముఖ ఘటనల సజీవ వర్ణన చేయబడింది. భాషాశైలి అత్యంత సరళము.

Rahul Publications

संदर्भ सहित व्याख्या

1. उनके व्याख्यानों का इतना गहरा प्रभाव पडा कि वहाँ के अनेक व्यक्ति स्वामी विवेकानंद के शिष्य बन गए और वे भारतीय संस्कृति के रंग में रंग गए।

सामान्य संदर्भः- प्रस्तुत संदर्भ 'स्वामी विवेकानंद' पाठ से दिया गया है। इस पाठ के लेखक पं. वंशीधर विद्यालंकार है । आप आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। आपकी रचनाओ मे प्रेम, जीवन दर्शन, बालपयोगी, राष्ट्रीय भावना संबंधी भी रचनायें अनेक है।

व्याख्याः- स्वामी विवेकानंद सर्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गए। वहाँ स्वामी जी के ओजस्वी भाषण से, सच्चाई भरे उपदेशों से लोग अत्यंत प्रभावित हुए । उनकी वाणी में सुनने वालों को आत्मविस्तृत कर देने का अव्दितीय प्रभाव था। अतः वे वहाँ सफल हो सके।

विशेषता :- प्रस्तुत संदर्भ से यह पता लगता है कि स्वामी विवेकानंद सफल वक्ता है। उनकी वाणी में सुनने वालों को प्रभावित, कर देने की शक्ति है । भाषा शैली सरल व सहज है ।

2. उन्होंने इस शिला पर खडे होकर यह संकल्प किया कि वे भारतवर्ष को इन दीन परिस्थितियों में से निकलने का प्रयत्न करेंगे। कन्याकुमारी के समुद्र की यह शिला विवेकानंद शिला 'के नाम से' प्रसिद्ध है।

सामान्य संदर्भः- प्रस्तुत संदर्भ 'स्वामी विवंकानंद' पाठ से दिया गया है। इस पाठ के लेखक पं. वंशीधर विद्यांलकार है । आप आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। आपकी रचनाओ में प्रेम, जीवन दर्शन, बालोपयोगी, राष्ट्रीय भावना संबधी भी अनेक रचनाये है।

व्याख्याः- कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का संगम है। कन्याकुमारी के समुद्र में एक शिला है । उन्होंने इस शिला पर खडे होकर यह संकल्प किया कि वे भारतवर्ष को इन दीन परिस्थितियो में से निकालने का प्रयत्न करेंगे, कन्याकुमारी के समुद्र की यह शिला ''विवेकांनद शिला'' के नाम से प्रसिद्ध है ।

Rahul Publications

विशेषताः- प्रस्तुत संदर्भ की बातो से हमे यह पता चलता है कि स्वामीजी सरल और विनम्र स्वभावाले है।

3. **हमारी शिक्षा एक सुचना मात्र नहीं होनी चाहिए। वह इस प्रकार की होनी चाहिए, जिससे कि हमारे जीवन का निर्माण हो सके । हमारी मानवता और चरित्र का निर्माण कर सके।**

सामान्य संदर्भ :- प्रस्तुत संदर्भ स्वामी विवेकानंद पाठ से लिया गया है। इस पाठ के लेखक पं. वंशीधर विद्यालंकार है। आप आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। आपकी रचनाओ में प्रेम, जीवन दर्शन, बालोपयोगी, राष्ट्रीयभावना संबंधी रचनाए अनेक है।

व्याख्या :- स्वामी विवेकानंद भारत के नव जागरण शंखध्वनि करनेवाले महापुरुषों में अव्दितीय है। शिक्षा के संबंध में उनके विचार थे कि हमारी शिक्षा एक तूलना मात्र नहीं होनी चाहिए। वह हमारी जीवन का मानवता का, चरित्र का निर्माण कर सकें ।

विशेषता :- प्रस्तुत संदर्भ में स्वामी विवेकानंद शिक्षा के संबंध में उनके विचारों को प्रस्तुत किया हैं।

Rahul Publications

दीर्घ प्रशन

1. **स्वामी विवेकानंद पाठ का सारांश लिखिए ?**

ज) सारांश :- प्रस्तुत पाठ ''स्वामी विवेकानंद'' मे विवेकानंद के जीवन का बडा ही प्रभावशाली वर्णन किया गया है। स्वामी विवेकांनद का जन्म 12-01-1862 ई.में हुआ । माता, पिता का नाम श्रीमती भुवनेश्वरी देवी, श्री विश्वनाथ दत्त है। बचपन में उनका नाम नरेंद्र था । 1884 ई.में बी.ए. की डिग्री नरेंद्र ने प्राप्त की। नरेंद्र की माता महत्वाकांक्षी स्त्री थी । उनकी इच्छा थी कि उनका लडका वकील हो, अच्छे घर में ब्याह हो और दुनिया के सुख भोगे। लेकिन नरेन्द्र के अन्दर बचपन से ही एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी। समस्त मानव जाति के प्रति प्रेम और कल्याण ही उनके जीवन का उद्देश्य था। त्याग और सेवा उनके दो मूल मंत्र थे।

उन दिनों विवेकानंद स्काटिश चर्च कॉलेज के प्रयम वर्ष में पढ़ रहे थे । वे बचपन से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि और चिंतनशील थे । फ्रिलासौफी उनका प्रिय विषय था । एक दिन प्रोफेसर हैस्टिक ने विद्यार्थी को ''ट्रांस एक तरह को अनुभूति है जो कि एक शुद्ध और पवित्र मन को होती है जब कि चिंतनशील मन किसी एक विषय पर ध्यानावस्थित हो जाता है। एक ऐसे व्यक्तित्व हैं। जिनको

उन्होंने समाधिस्य को अवस्था में देखा है। बी ए की उपाधि को प्राप्त करने के बाद विवेकानंद्, ने वकील बनने की सोच रहे थे । एक दिन उनके चाचा उन्हे रामकृष्ण के पास ले गाये । वे उनके पास घंटो बैठे रहते थे और उनसे धर्म और वेदांत के संबंध में शिक्षा ग्रहण करते थे । उनकी भक्त - मंडली में समुचित हो गए । उस समय गुरू से आध्यात्म तत्व और वेदांत रहस्य जानकर नरेद्रं पर ही आया। उन्होने साथियो के साथ सन्यास व्रत ले लिया। तब से नरेंद्रनाथ स्वामी विवेकानंद हुए। उस आध्यत्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए हिमालय की और चले गए । वे इस प्रकार समस्त भारत वर्ष की यात्रा तीन वर्ष तक करते रहे। वे आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी, संस्कृत, बंगाली या हिन्दी में लोगों को उत्तर देते थे। जिज्ञासु लोगों को धर्म और नीति कें तत्वों के उपदेश देते थे।

कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का संगम है। कन्याकुमारी के समुद्र में एक शिला है। उन्होंने इस शिला पर खडे होकर यह संकल्प किया कि वे भारतवर्ष को इन दीन परिस्थितियों में से निकालने का प्रयास करेंगे । कन्याकुमारी के समुद्र की यह शिला ''विवेकांनद शिला'' के नाम से प्रसिद्ध है। अपने शिष्यों की सहायता से स्वामी जी अमेरिका में होनेवाले सर्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उनकी यह यात्रा अमेरिका के इतिहास की अमर घटना है। वहाँ विभिन्न धर्मो के प्रतिनिधि बडे बडे पादरी और धर्मशास्त्र के आचार्य हजारों की संख्या में उपस्थित थे। विवेकानंद ने अपने व्यारव्यानो मे अमेरिका के लोगों को वेदांत तत्व को समझाने का प्रयप्न किया। विवेकानंद ने अपने अमेरिका के व्याख्यानो में कहा था कि-पूर्व में सबसे बडी आवश्यकता धर्म की नहीं है। उनेक पास धर्म पर्याप्त मात्रा में है। मैं अपने देश की दीन हीन जनता के लिए शेरी की सहायता की खोज में आया हूँ। स्वामीजी ने पांडित्यपूर्ण, ओजस्वी ओर धारा प्रवाह भाषण दीया। इससे श्रोता मंडली मुग्ध हो गई।

विवेकानंद चाहते थे भारतीय विदेश जाएँ और विदेश के लोग भारतवर्ष आएँ। जिस प्रकार गाँधीजी ने सर्वोदय समाज की स्यापना की थी उसी प्रकार विवेकानंद सर्वेकता को व्यापक धर्म बनाना चाहते थे । वे भारतीयों में सब प्रकार की विषमताओं और भेदभावो की स्यापना की । 1897 में उन्होंने अकाल - पीडितों की सेवा के लिए अपने बहुत से शिष्यों को भेजा। रामकृष्ण मिशन के अस्पतालों, मठो और आश्रमों के द्वारा उन्होंने भारतवर्ष और विश्व की सेवा करने का प्रयास किया। स्वामी विवेकानंद ने सानफ्रान्सिसको मैं ''शांति आश्रम''.

और वेदांत सोसइटी के स्थापना की । उन्होंने बनारस मे एक पाठशाला और दीनों के लिए एक ''होम'' की स्थापना की । साधुओं के लिए मठो की स्थापना की, रामकृष्ण मिशन ने देश के अनेक भागों में जनता की बहुमूल्य सेवा की है। शिक्षा के संबंध में उनके विचार थे कि हमारी शिक्षा

एक सूचना मात्र नहीं होनी चाहिए। वह हमारी जीवन का, मानवता का, चरित्र का निर्माण कर सके।

स्वामी विवेकानंद अधिक शक्ति से कार्य करने की वजह से बीमार हो गये, बहुत से इलाज किए लेकिन कार्य के कराण से उनकी बीमारी बडती ही गई । 4 जुलाई सन् 1902 मै स्वामी जी प्रातःकाल समाधि में थे बाद मे नए शिष्यों को संस्कृत पढ़ाई । दुपहर में फिर समाधिस्थ हुए । फिर सायंकाल उन्होने भ्रमण किया और लैट कर वे प्रार्थना करते हुए समाधिस्थ हो गए। रात को 9 बजे को शरीर त्याग कर परम धाम को सिधार गए । स्वामी विवेकानंद से जलाए गए आध्यात्मिक ज्योति सदा के लिए संसार को प्रकाशित करती रहती है और रहेगी।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ जीवनी परक लेख है। स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व चरित्र और जीवन की प्रमुख धटनाओ का सजीव वर्णन किया गया। भाषा शौली सरल व सरस है।

2. विदेशों में विवेकानंद की क्या छाप रही?

ज) भारत के नव जागरण करनेवाले महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का स्थान अद्वितीय है। स्वामीजी बडे आध्यात्मिक गुरु और देश भक्त थे। आप दार्शनिक और बहु भाषा विद् है। अपने शिष्यों की सहायता से स्वामी जी अमेरिका में होनेवाले सर्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उनकी यह यात्रा अमेरिका के इतिहास की अमर धर्मो है। वहाँ विभिन्न घटना के प्रतिनिधि बडे बडे पादरी और धर्मगुरु के आचार्य हजारों की संख्या में उपस्थित है। स्वामी जी ने पांडित्यपूर्ण धारा प्रवाह भाषण दीया। यह भाषण भगवद्गीता और उपनिषदों के ज्ञान का सार है। स्वामी विवेकानंद ने लगभग तीन साल अमेरिका में रहकर वेदांत प्रचार करने के बाद इंग्लैड, की यात्रा स्वामीजी अपने दृढ़ संकल्प से सफल हुए। स्वामी जी से चलायी गयी आध्यामिक ज्योतिं की मशाल हमेशा के लिए संसार को प्रकाशित करती रहेंगी।

3. स्वामी विवेकानंद का जीवन नैतिक गुणों का प्रेरणा स्त्रोत है? अपने शब्दों में लिखिए?

ज) स्वामी विवेकानंद के जीवन से हमें ये प्रेरणाएँ मिलती है - अभ्यास और प्रबल संकल्पो से हम बाधाओं पर विजयी हो सकते है। कर्म को कर्त्तव्य समझकर करना है। उसमें फल सुख या दुख की भावना न रहती थी । धर्म, वेदांत और समाज सेवा अलग अलग नहीं है।

लघु प्रश्न

1. स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था?

ज) स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था।

2. स्वामी विवेकानंद के गुरू कौन थे?

ज) स्वामी विवेकानंद के गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस थे?

3. सर्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए स्वामी विवेकानंद कहाँ गए ।

ज) सर्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए स्वामी विवेकानंद अमेरिका गए ।

4. रामकृष्ण मिशन की स्थापना किसने की?

ज) रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने की ।

5. रामकृष्ण मिशन की स्थापना किस उद्धेश्य से की गई है।

ज) रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य यह है कि लोक-सेवा करते हुए वेदांत का प्रचार करना है ।

Rahul Publications

11. पर्यावरण और हम

- राजीव गर्ग

लेखक का परिचय :- हिन्दी में विज्ञान संबंधी लेखकों में राजीव गर्ग एक है। राजीव गर्ग ऐसे विषयों पर पुस्तके लिखी है जिन विषयों की चर्चा तो बहुत है लेकिन साधारण लोगों को उनके संबंध में ज्ञान बहुत कम है। राजीव गर्ग पर्यावरण समस्या के हर पहलू पर बहुत व्यापक प्रकाश डाला है।

सारांश :- पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गंभीर रूप धारण कर लिया है। यह समस्या किसी एक गाँव, नगर, प्रदेश या देश भी नहीं बल्कि समस्त विश्व की है। आज दुनिया भर के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता दुनिया को इस समस्या से मुक्त करने का प्रयास कर रहे है। इस समस्या को समझने के लिए यह जानने की आवश्यकता है कि प्रदूषण क्या है। और इसे पैदा करने वाले कौन कौन से कारक है। तथा इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड रहा है?

प्रदूषण का तात्पर्य है जल, भूमि और वायु में अवांछित एंव हानिकारक पदार्थो का सम्मिलन अथवा उपयोगी पदार्थो की कमी। प्रदूषण के लिए अंग्रेजी भाषा में पाल्युशन शब्द है। जल, वायु और भूमि को दूषित होने से मानव स्वास्थ पर बुरे प्रभाव पडते है और अनेक रोगो तथा विकारों का जन्म होता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व के 60 देशा में प्रदूषण से संबंधित एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इन सर्वेक्षण में सलफरडाइआक्साइड, निलंबित धुआ, नाइट्रोजन के आक्साइड कार्बन मोनोआकसइड और ओजोन की मात्राएँ मापी गई। विश्व की 70 प्रतिशत से अधिक शहरी जनता अर्यात लगभग 1.7 अरब लोग निरंतर विषैली वायु में सांस लेते है। सल्फर डाईआक्साइड गैस सबसे अधिक मिनान, शौनियान, तेहरान,सोल, रायोडिजेनिरो, पेरिस, बीजिंग और मैड्रिड कुछ शहर जैसे मेलबोर्न, आकलैंड, टोरेंटो, बैंकॉक, शिकागो आदि का वायुमंडल अभी प्रदूषण से मुक्त है। संसार में 10 प्रतिशत नदियाँ बूरी तरह से प्रदूषित हो चुकी है। बढ़ते हुए औधोगिकरण से ब्राजील, चीन, इंडोनेशिया, मैक्सिको और नाइजीरिया की नदियाँ भी तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। पेय जल के लिए 40 देशों के 340 स्थलों पर परीक्षण किया गया। इनमे 240 नदियाँ, 40 झीले और 60 भूमिगत स्त्रोतों में अनेक बैक्टीरिया है।

संसार में हर वर्ष 2000 करोड टन कार्बनडाइआक्सइड उत्पन्न होती है। 200 वर्षो से पृथ्वी की तापमान से 9 डिग्री बढ़ जाएगा। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे पर्यावरण को महान खतरा पैदा हो गया है। कुछ लोग सोचते है कि पर्यावरण के दूषित होने के कुप्रभाव केवल मानव जीवन पर ही पडते है। सुंदर भवनों की भव्यता के साथ-साथ, पेड पौधे तया जीव जंतु पर भी घातक प्रभाव पडते है।

सफेद रंग का डि.डि.टि एक जाना माना कीट नाशक है। यह मलेरिया फैलानेवाले मच्छरों, प्लेग और पीत ज्वर पैलानेवाले कीटाणुओ का विनाश कर देता है। उसके अविष्कारक पाल हरमन मूलर को सन् 1947 में नोबल पुरस्कार दिया गाया। उसके प्रयोग से मलेरिया जैसे घातक रोंग से लोगों को छुटकारा मिला लेकिन इसका विषैले प्रभाव मानव स्वास्थ और दूसरे जीवों पर भी बुरा असर डालते थे । 1982 में इस कीटनाशक के प्रयोग पर अमेरिक पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। प्रदूषण का प्रभाव भव्य इमारतो पर भी पडता है। ताजमहल इसका ज्वलंत उदाहरण है। प्रदूषण का प्रभाव वायुमंडल तथा धरती के तापमान पर भी हुआ है। धुआ और धूल हम वायुमंडल में भेज रहे है उनके कारण सूरज की गर्मी धरती तक कम पहुँच पाती है । इसका परिणाम समस्त संसार का तापमान कम हो जाए और फिर से धरती पर एक नया हिमयुग आ जाये । भविष्य में यह मानव जीवन के लिए घातक सिद्ध होता है।

प्रदूषण का प्रभाव समुद्रो पर भी हुआ है। अब यह प्रश्न उठता है कि प्रदूषण का मुख्य कारण क्या है? पहला कारण है विश्व की बढ़ती हुई जन संख्या और दूसरा है औधोगिक विकास। विश्व की जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है। आनेवाले दशको में आदमी को शायद धरती पर रहने के लिए जगह ही न मिल पाए। आज अंतरिक्श में भी यानों। राकेटों उपग्रहों से प्रदूषण की शुरूआत हो गई है। पिछले ५० वर्षो में औद्योगीकरण इतनी अधिक तीव्रता से हुआ कि पर्यावरण का ढ़ाँचा ही बदल गया है। बढ़ती हुई जन संख्या और उसकी अवश्यकताओं की पूर्ती के लिए औघोगिक विकास ही विश्व प्रदूषण के मूल कारण है।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ पर्यावरण और हम में यह बताया गया कि प्रदूषण की समस्या विश्व में सभी लोगों को जूझ ना पड़ रहा है। प्रदूषण पर्यावरण के लिए अभिशाप है।

Rahul Publications

11. పర్యావరణము మరియు మనము

రచయిత పరిచయం :

హిందీలో సైన్సు విషయాలను రాసే రచయితలలో రాజీవ్ గర్గ్ ఒకరు. చాలా కాలంగా చర్చలలో వుంటూ సాధారణ ప్రజలకు తెలియని జ్ఞానాన్ని రాజీవ్ గర్గ్‌గారు తన సాహిత్యంలో రాశారు. రాజీవ్‌గర్గ్‌గారు పర్యావరణానికి సంబంధించిన ప్రతిఒక్క విషయాన్ని విస్తృతంగా రాశారు.

సారాంశము :

గత 5 దశాబ్దాలుగా పర్యావరణ కాలుష్యసమస్య చాలా తీవ్రంగా అవుతుంది. ఈ సమస్య ఒక గ్రామానికే, నగరానికే, ప్రదేశానికే లేదా ఒక దేశానికి సంబంధించినది కాదు. మొత్తం విశ్వానికి సంబంధించినది. ఈనాడు ప్రపంచం మొత్తంలో సైంటిస్టులు, బుద్ధిజీవులు రాజకీయ వేత్తలు విశ్వాన్ని ఈ సమస్య నుండి విముక్తి కలిగించటానికి ప్రయత్నిస్తున్నారు. ఈ సమస్యను అర్థంచేసుకోవటానికి అసలు కాలుష్యం అంటే ఏమిటి? కాలుష్యానికి కారకాలు ఏమేమిటి? అవి మనజీవితాలు మీద ఎటువంటి ప్రభావం వేస్తుందో తెలుసుకోవలసిన అవసరం ఎంత్తైనావుంది.

కాలుష్యం అంటే నీటిలో, భూమిలో, గాలిలో అవాంఛిత, హానికారక పదార్థాల సమ్మేళనము లేదా ఉపయోగకర పదార్థాల లోపం. కాలుష్యాన్ని ఇంగ్లీషులో పోల్యూషన్ అని అంటారు. నీరు, గాలి, భూమి కలుషితమవటానికి మానవుల ఆరోగ్యం మీద చెడు ప్రభావాన్ని వేస్తాయి. ఇంకా అనేక రోగాలకు కారకాలు అవుతాయి.

సంయుక్త రాష్ట్ర పర్యావరణంలో కార్యక్రమం భాగంగా ప్రపంచంలోని 60 దేశాలలో కాలుష్యానికి సంబంధించిన సర్వే చేసి ఒక రిపోర్టును తయారుచేయడం జరిగింది. ఈ సర్వేలో సల్ఫర్‌డయాక్సైడ్, నల్లని పొగ, నైట్రోజన్ ఆక్సైడ్, కార్బన్ మోనాక్సైడ్, ఓజోన్ శాతాలను లిఖించటం జరిగింది. ప్రపంచంలో 70% పైగా నగర ప్రజలు అంటే దాదాపుగా 1.7 అరబ్బు ప్రజలు నిరంతరం విషవాయువులను పేలుస్తున్నారు. సల్ఫర్ డైఆక్సైడ్ వాయువు అల్యధికంగా మెనాన్, షైనియాన్ తెహనాన్, సోల్, రాయోడిజనిరో, పారిస్, బీజింగ్ ఇంకా మేడ్రిడ్, కొన్ని నగరాలు మెల్‌బోర్న్, ఆక్సిలైడ్, టోర్జెంట్, నైకాక్, షికాగో మొదలైన నగరాలలో కాలుష్యం తక్కువగా వుంది. ప్రపంచంలో 10% నదులు చాలా ఎక్కువగా కాలుష్యానికి గురి అయ్యాయి. వృద్ధి చెందుతున్న పట్టణీకరణ వలన బ్రెజిల్, చైనా, ఇండోనేషియా, మెక్సికో, ఇంకా నైజీరియాలలోని నదులు చాలావేగంగా కాలుష్యానికి గురవుతున్నాయి. తాగు నీటిని 40 దేశాలలోని 340 ప్రదేశాలలో పరీక్షించారు. ఇందులో 240 నదులు, 40 కాలువలు, 60 భూగర్భజలాలలో అనేక రకాలైన బాక్టీరియా ఉన్నది.

ప్రపంచంలో ప్రతి 2000 కోట్ల టన్నుల కార్బన్‌డైఆక్సైడ్ ఉత్పన్నమవుతుంది. 200 సంవత్సరాల నుండీ భూమి ఉష్ణోగ్రత 9 డిగ్రీల చొప్పున పెరుగుతుంది. పర్యావరణానికి చాలా మొప్పు రాబోతుందని దీనిని బట్టి మనకు స్పష్టమవుతుంది. కొంత మంది అనుకుంటారు. పర్యావరణ దుష్ప్రభావం కేవలం మానవ జీవితం మీద మాత్రమే పడుతుంది కాని సుందర భవనాల వైభోగంతో పాటు చెట్లు, మొక్కలు మరియు జీవజంతుజాలం మీదకూడా ప్రమాదకరమైన ప్రభావం పడుతోంది.

తెల్లని రంగులో ఉండే డి.డి.టి. ఒక పేరెన్నిక గన్న కీటనాశని. ఇది మలేరియాని వ్యాపింపచేసే దోమలు, ప్లేగు, విషజ్వరాలను వ్యాపింపజేసే బాక్టీరియాని కూడా నాశనం చేస్తుంది. దీనిని ఆవిష్కరించిన పాల్ హరమన్ మూలర్‌కు 1947 సంబలో నోబల్ బహుమతి ఇచ్చారు. ఆ పురుగుల మందు వలన మలేరియా లాంటి రోగాల నుండి ప్రజలకు విముక్తి జరిగింది. కానీ దీని విష ప్రభావం మానవుల మీద ఇతర జీవరాశుల మీదపడింది. 1982లో అమెరికా దీనిని నిషేధించింది. కాలుష్య ప్రభావం భవంతుల మీద కూడా పడుతుంది. తాజ్‌మహల్ దీనికి ఒక ఉదాహరణ. కాలుష్య ప్రభావం ఉష్ణోగ్రత మీద వాయువు మండలం మీద మోప పడుతుంది. ధూళి, పొగల వలన సూర్యునితాపం పెరుగుతోంది. దీనివలన భూమి మీద ఉష్ణోగ్రతపెరిగి మరొక హిమయుగం వచ్చే ప్రమాదం లేకపోలేదు. భవిష్యత్తులో ఇది మానవ జీవితం మీద అత్యంత ప్రమాదకర ప్రభావాన్ని చూపుతుంది.

సముద్రాల మీదకూడా కాలుష్యం ప్రభావం ఉంటుంది. అసలు కాలుష్యానికి కారణం ఏమి ఉన్న ప్రశ్న మనముందుకు వస్తుంది? దీని కారణం మొదటిది పెరుగుతున్న జన సంఖ్య రెండవది పట్టణీకరణ. రాబోయే రోజులలో మనిషికి బహుశా ఈ భూమిమీద ఉండటానికి స్థలమే దొరకపోవచ్చు. నేడు అంతరిక్షంలో కూడా విమానాలు, రాకెట్లు, ఉపగ్రహాల వలన కాలుష్యం పెరిగిపోయంది. గత 40 సంబలుగా పట్టణీకరణ వలన వాతావరణ స్థితి మారిపోయాయి.

విశేషము :

ప్రస్తుత పాఠము 'పర్యావరణము మనము' లో ప్రపంచంలోని ప్రజలందరికీ పర్యావరణ కాలుష్యం పెనుముప్పుగా మారుతున్న దన్న విషయాన్ని రచయిత చెప్పటం జరిగింది.

संदर्भ सहित व्याख्या

1. पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गम्भीर रूपधारण कर लिया है ।

सामान्य संदर्भः- प्रस्तुत संदर्भ पर्यावरण और हम से दिया गया है । हिन्दी में विज्ञान संबंधी लेखको में राजीव गर्ग एक है। राजीव गर्ग पर्यावरण समस्या के हर पहलू पर बहुत व्यापक प्रकाश डाला है ।

व्याख्या :- पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गंभीर रूप धारण कर लिया है। यह समस्या किसी एक गाँव, नगर, प्रदेश या देश की नहीं बल्कि समस्त विश्व की है। आज दुनिया भर के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता दुनिया को इस समस्या से मुक्त करने का प्रयास कर रहे है।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ पर्यावरण और हम में यह बताया गया कि प्रदूषण की समस्या विश्व में सभी लोगों को जूझ ना पड रहा है। प्रदूषण पर्यावरण के लिए अभिशाप है।

Rahul Publications

2. प्रदूषण का प्रभाव भव्य इमारतो पर भी पडता है । ताजमहल इसका एक ज्वलंत उदाहरण है ।

सामान्य संदर्भः- प्रस्तुत संदर्भ पर्यावरण और हम नामक पाठ से दिया गया है। इसके लेखक राजीव गर्ग है। राजीव गर्ग पर्यावरण समस्या के हर पहलू पर बहुत व्यापक प्रकाश डाला है।

व्याख्या :- 17 वीं शताष्दी में बेगम मुमताज की यादगार में शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई ताजमहल एक दर्शनीय स्थल है। दूनिया के लाखों लोग इसे प्रतिवर्ष देखने आते है। यह सफेद संगमरमर से बनी हुई है। चांदनी रातों में यह दुविधा रंग में नहा जाती है। मथुरा तलशोधक कारखाने और आसपास में बनी फैक्टरियों के धुंए से चमक फीकी पडने लगी है।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ पर्यावरण और हम ने यह बताया गया कि प्रदूषण की समस्या विश्व में सभी लोगो को जूझ ना पड रहा है। प्रदूषण पर्यावरण के लिए अभिशाप है।

3. अब प्रश्न यह उठता है कि प्रदूषण का मुख्य कारण क्या है। पहला कारण है विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या और दूसरा है औद्योगिक विकास।

सामान्य संदर्भ :- प्रस्तुत संदर्भ पर्यावरण और हम नामक पाठ से दिया गाया है। इसके लेखक राजीव गर्ग है। हिन्दी में विज्ञान संबंधी लेखको में राजीव गर्ग एक है । राजीव गर्ग पर्यावरण समस्या के हर पहलू पर बहुत व्यापक प्रकाश डाला है।

व्याख्या :- विश्व को जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है। आनेवाले दशको में आदमी को शायद रहने के लिए धरती पर जगह ही न मिल पाये । पिछले ५० वर्षो में औद्योगीकरण इतनी अधिक तीव्रता से हुआ कि पर्यावरण का ढ़ांचा ही बदल गया है।

विशेषता :- प्रस्तुत पाठ पर्यावरण और हम ने यह बताया गया कि प्रदूषण की समस्या विश्व में सभी लोगो को जूझ ना पड़ रहा है। प्रदूषण पर्यावरण के लिए अभिशाप है।

दीर्घ प्रशन

1. पर्यावरण और हम पाठ का सारांश लिखिए ?

ज) पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गंभीर रूप धारण कर लिया है। यह समस्या किसी एक गाँव, नगर, प्रदेश या देश की नहीं बल्कि समस्त विश्व की है। आज दुनिया भर के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता दुनिया को इस समस्या से मुक्त करने का प्रयास कर रहे है। इस समस्या को समझने के लिए यह जानने की आवश्यकता है कि प्रदूषण क्या है। और इसे पैदा करने वाले कौन कौन से कारक है। तथा इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड रहा है?

प्रदूषण का तात्पर्य है जल, भूमि और वायु में अवांछित एंव हानिकारक पदार्थों का सम्मिलन अथवा उपयोगी पदार्थो की कमी। प्रदूषण के लिए अंग्रेजी भाषा में पाल्युशन शब्द है। जल, वायु और भूमि को दूषित होने से मानव स्वास्थ पर बुरे प्रभाव पडते है और अनेक रोगो तथा विकारों का जन्म होता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व के 60 देशा में प्रदूषण से संबंधित एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इन सर्वेक्षण में सलफरडाइआक्साइड, निलंबित धुआ, नाइट्रोजन के आक्साइड कार्बन मोनोआकसइड और ओजोन की मात्राएँ मापी गई। विश्व की 70 प्रतिशत से अधिक शाहरी जनता अर्यात लगभग 1.7 अरब लोग निरंतर विषैली वायु में सास लेते है। सल्फर डाईआक्साइड गैस सबसे अधिक मिनान, शौनियान, तेहरान,सोल, रायोडिजेनिरो, पेरिस, बीजिंग और मैड्रिड कुछ शहर जैसे मेलबोर्न, आकलैंड, टोरेंटो, बैंकॉक, शिकागो आदि का वायुमंडल अभी प्रदूषनों से मुक्त है। संसार में 10 प्रतिशत नदियाँ बूरी तरह से प्रदूषित हो चुकी है। बढ़ते

Rahul Publications

हुए आद्योगिकरण से ब्राजील, चीन, इंडोनेशिया, मैक्सिको और नाइजीरिया की नदियाँ भी तेजी से प्रदूषित होती जा रही है्। पेय जल के लिए 40 देशों के 340 स्थलों पर परीक्षण किया गया। इनमे 240 नदियाँ, 40 झीले और 60 भूमिगत स्त्रोतों में अनेक बैक्टीरिया है।

संसार में हर वर्ष 2000 करोड टन कार्बनडाइआक्सइड उत्पन्न होता है। 200 वर्षो से पृथ्वी का तापमान से 9 डिग्री बढ़ जाएगा। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे पर्यावरण को महान खतरा पैदा हो गया है। कुछ लोग सोचते है कि पर्यावरण के दूषित होने के कुप्रभाव केवल मानव जीवन पर ही पडते है। सुंदर भवनों की भव्यता के साथ-साथ, पेड पौधे तथा जीव जंतु पर भी घातक प्रभाव पडते है।

सफेद रंग का डि.डि.टि एक जाना माना कीट नाशक है। यह मलेरिया फैलानेवाले मच्छरों, प्लेग और पीत ज्वर फैलनेवाले कीटाणुओ का विनाश कर देता है। उसके अविष्कारक पाल हरमन मूलर को सन् 1947 में नोबल पुरस्कार दिया गाया। उसके प्रयोग से मलेरिया जैसे घातक रोग से लोगों को छुटकारा मिला लेकिन इसका विषैले प्रभाव मानव स्वास्थ और दूसरे जीवों पर भी बुरा असर डालते थे । 1982 में इस कीटनाशक के प्रयोग पर अमेरिका पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। प्रदूषण का प्रभाव भव्य इमारतो पर भी पडता है। ताजमहल इसका ज्वलंत उदाहरण है। प्रदूषण का प्रभाव वायुमंडल तथा धरती के तापमान पर भी हुआ है। धुआ और धूल हम वायुमंडल में भेज रहे है उनके कारण सूरज की गर्मी धरती तक कम पहुँच पाती है । इसका परिणाम समस्त संसार का तापमान कम हो जाए और फिर से धरती पर एक नया हिमयुग आ जाये । भविष्य में यह मानव जीवन के लिए घातक सिद्ध होता है।

Rahul Publications

प्रदूषण का प्रभाव समुद्रो पर भी हुआ है। अब यह प्रश्न उठता है कि प्रदूषण का मुख्य कारण क्या है? पहला कारण है विश्व की बढ़ती हुई जन संख्या और दूसरा है औद्योगिक विकास। विश्व की जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है। आनेवाले दशको में आदमी को शायद धरती पर रहने के लिए जगह ही न मिल पाए। आज अंतरिक्ष में भी यानों। राकेटों उपग्रहों से प्रदूषण की शुरूआत हो गई है। पिछले ५० वर्षा में औधोगीकरण इतनी अधिक तीव्रता से हुआ कि पर्यावरण का ढ़ाँचा ही बदल गया है। बढ़ती हुई जन संख्या और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए औघोगिक विकास ही विश्व प्रदूषण के मूल कारण है।

2. पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ क्या है। अपने शष्दों में लिखिए?

ज) पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गंभीर रूप धारण कर लिया है। यह समस्या किसी एक गाँव, नगर, प्रदेश या देश की नहीं बल्कि समस्त विश्व की है। आज दुनिया भर के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता दुनिया को इस समस्या से मुक्त करने का प्रयास कर रहे है। इस समस्या को समझने के लिए यह जानने की आवश्यकता है कि प्रदूषण क्या है। और इसे पैदा करने वाले कौन कौन से कारक है। तथा इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड रहा है?

प्रदूषण का तात्पर्य है जल, भूमि और वायु में अवांछित एंव हानिकारक पदार्थों का सम्मिलन अथवा उपयोगी पदार्थों की कमी। प्रदूषण के लिए अंग्रेजी भाषा में पोल्युशन शब्द है। जल, वायु और भूमि को दूषित होने से मानव स्वास्थ पर बुरे प्रभाव पडते है और अनेक रोगो तथा विकारों का जन्म होता है।

3. प्रदूषण से मानव को क्या हानियाँ है?

ज) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व के 60 देशा में प्रदूषण से संबंधित एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इन सर्वेक्षण में सलफरडाइआक्साइड, निलंबित धुआ, नाइट्रोजन के आक्साइड कार्बन मोनोआकसइड और ओजोन की मात्राएँ मापी गई। विश्व की 70 प्रतिशत से अधिक शाहरी जनता अर्थात लगभग 1.7 अरब लोग निरंतर विषैली वायु में सास लेते है। सल्फर डाईआक्साइड गैस सबसे अधिक मिनान, शौनियान, तेहरान,सोल, रायोडिजेनिरो, पेरिस, बीजिंग और मैड्रिड कुछ शहर जैसे मेलबोर्न, आकलैंड, टोरेंटो, बैंकॉक, शिकागो आदि का वायुमंडल अभी प्रदूषण से मुक्त है। संसार में 10 प्रतिशत नदियाँ बूरी तरह से प्रदूषित हो चुकी है। बढ़ते हुए औद्योगिकरण से ब्राजील, चीन, इंडोनेशिया, मैक्सिको और नाइजीरिया की नदियाँ भी तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। पेय जल के लिए 40 शों के 340 स्थलों पर परीक्षण किया गया। इनमे 240 नदियाँ, 40 झीले और 60 भूमिगत स्त्रोतों में अनेक बैक्टीरिया है।

लघु प्रश्न

Rahul Publications

1. पर्यावरण और हम नामक पाठ के लेखक कौन है?

ज. पर्यावरण और हम नामक पाठ के लेखक राजीव गर्ग है।

2. प्रदूषण का अर्थ क्या है?

ज. प्रदूषण का अर्थ है जल, थल और वायु में अवांछित एवं हानिकारक पदार्थो का सम्मिलन अथवा वांछित एवं उपयोगी पदार्थो की कमी या विलोपन।

3. प्रदूषण का प्रभाव किन किन चीजों पर पडता है?

ज. जल, वायु, धरती, इमारत आदि अनेक चीजों पर हो रहा है।

4. प्रदूषण के मूल कारण क्या है?

ज. प्रदूषण के दो मुख्य कारण है एक विश्व की बढ़ती हुई जन संख्या और दूसरा औद्योगिक विकास।

5. पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव भवनों पर पडता है। या नहीं?

ज. हाँ पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव भवनों पर भी पडता है। इसका ज्वलंत उदाहरण ताजमहल है।

कथा सिंधु

Rahul Publications

कथा सिंधु

7.	गदल	-	रांगेय राघव
8.	हँसू या रोऊँ	-	विनायकराव विद्यालंकार
9.	वापसी	-	उषा प्रियंवदा
10.	सेवा	-	ममता कालिया
11.	सिलिया	-	सुशीला टाकभौरे

Rahul Publications

7. गदल

- रांगेय राघव

लेखक का परिचय :-

प्रस्तुत पाठ गदल के लेखक रांगेय राघव है। यह एक बहु चर्चित कहानी है। उनका जन्म सन् 1923 में हुआ था। रांगेय राघव उनका कलम का नाम था। उनका असली नाम तिरूमल्ले नांबकम वीर राघवाचार्य था। वे दार्शनिक और शोधकर्ता भी थे । ''देवदासी'', 'समुद्र के फेनं' जीवन के दाने, अधुरी मूरत आपके प्रमुख रचनाएँ है। रांगेय राघव का देहांत सन् 1962 में हुआ। गदल कहानी के प्रमुख पात्र नारी है और एक शक्ति की प्रतीक माना गया है ।

सारांश :-

गदल एक पहाडी विधवा नारी थी। वह गुजर जाति की थी । उनका देवर डोडी भी विधुर था। लेकिन अपने कुल की परंपरा के अनुसार गदल से विवाह नहीं किया। अपनी पूरी कमाई भाई के बेटों को देता था और उनके साथ मिलकर रहता था।

गदल ऐसी नारी थी जो जाति - पांति के दबाव की परवाह नहीं की। दूसरे गाँव के दूसरी जाति के विधुर मौनी के साथ रहने लगी। घरवालों ने इसका विरोध किया। पुत्र निहाल उसको बाँधकर ले गया। उसने घरवालो को गाँलियाँ सुनाई। कहा कि उसके स्वर्गीय पति के प्रति उनके लोगों के मन में कोई श्रद्धा नही है। इसलिए उन्होने उसके मरने के बाद सारी बिरादरी को दावत नहीं दी। सरकार की आज्ञा के अनुसार केवल पच्चीस आदमियों को खिलाया।

दूसरे दिन सवेरे गदल फिर से मौनी के घर गयी। मौनी की भाभी ने व्यंग्य किया। गदल ने उसका मुँहतोड जवाब दिया। मौनी ने सवाल किया तो उसको साथ साथ बता दिया। कहा कि वह अलग रहेंगी। उस दिन दोपहर को उनका छोटा बेटा नारायण आया। गदल ने उसका गलत अर्थ समझा और अपने कडे और हँसुणी उसकी तरफ ''फेंक दिए''।

यह समाचार उसका देवर डोडी को मालुम हुआ । उसका मन विकल हुआ । उस रात को भोजन नहीं किया। दूसरे दिन वह मर गया। गदल को पता चाला कि डोडी मरते समय उसीका नाम ले रहा था। उसने मौनी को बताया कि वह अपने पुराने घर जाना चाहती है । मौनी ने इनकार किया और गदल को घर में बंद कर दिया। रात का समय था। मौनी गाढ़ी नींद ले रहा था, तब गदल छतपर लांघकर भाग गई। सबेरे यह जान कर मौनी उसके घर जाकर लडाई करना चाहता था। लेकिन बिरादरीवालों ने समझाया कि बूढ़ी औरत के लिए झगडा करना अच्छी बात नहीं है।

Rahul Publications

गदल अपने देवर का कारज धूम - धाम से करना चाहती थी। उसने दारोगा को रिश्वत दिया। पूरी बिरादरी को भोजन के लिए बुलाया। इस तरह उन्होंने कानून तोडा। उसका विचार था कि बिरादरी कानून से ऊपर है। परंतु मौनी ने बडे दारोगा को उसकी खबर देदी। दरोगा से गदल को आदेश मिला कि वह कारज रोक दे। लेकिन उसने कार्य पूरा किया और बिरादरीवालो को पीछे के दरवाजे से विदा किया । पुलिस की ओर से गोलियाँ चली । गदल और उसके घरवालो ने डटकर मुकाबला किया । गदल के पैर में गोली लगी। मरने से पहले गदल ने दारोगा से अपना संतोष व्यक्त किया, कारज पूरा हो गया है, डोडी की आत्मा को शांति मिल गयी है।

विशेषता :- प्रस्तुत कहानी में रांगेय राघव ने नारी के व्यक्तित्व की सभी रेखाएँ यथार्थ की भूमि पर खींची गयी है। गदल एक विद्रोही चरित्र की नारी है। यह एक विशिष्ट कहानी है।

चरित्र चित्रण

'गदल' डॉ. रांगेय राघव की अत्यंत रोचक कहानी है। इसकी नायिका गदल है। गदल एक शक्ति का प्रतीक है। बाहरी समाज में उनका व्यक्तित्व विद्रोहपूर्ण है। कमजोर नारी के लिए गदल बल और प्रेरणा देने वाली नारी है।

गदल गूजर जाती की नारी है। वह पहाडों में रहती है। उसका पति मर गया है। उनकी देवर की बीबी भी मर गयी है। गदल देवर से विवाह करना चाहती है। मगर देवर विवाह का प्रस्ताव नहीं करता। नारी होकर वह स्वयं ऐसा करके वह अपनी बिरादरी परंपरा का विरोध करती है। अपने गहने देकर वह बिरादरी का दंड भरती है। वह अपने ऊपर किसी का एहसान नहीं चाहती। वैसा ही वह मौनी का अधिकार भी नहीं मानती। वह उसके घरवालों से भी नहीं दबती। स्वच्छंद प्रवृत्ति की है। किसी के आगे नहीं झुकती।

मौनी के घर गदल चली जाने की खबर उनके देवर को मालूम होती है। उसका मन विकल होकर वह उस रात को भोजन नहीं करता । दूसरे दिन ही वह मर जाता है। इसके मन में पति और देवर की प्रति प्रेम भावना है। वह अपने पति का कारज धूम - धाम से नहीं कर पाती। उसके लिए बेटा और देवर को गाली देती है।

गदल देवर के कारज में कमी नहीं होना चाहती। इस विषय में वह सरकारी कानुन से भी बिरादरी को ही ज्याद अधिक मानती है। पच्चीस लोगों की जगह पर सारी बिरादरी को बुलाती है। दारोगा को रिश्वत देती है। पुलिस आने पर बिरादरीवालों को पीछे के दरवाजे से भेज देती है।

पुलिसवालों से गदल और उनके घरवाले डटकर मुकाबला करते है। गदल के पैर में गोली लगी। मरने से पहले वह दारोगा से कहती है कि कारज पूरा हो गया और अपनी देवर की आत्मा को शांति मिल गयी ।

Rahul Publications

సారాంశము

7. గదల్

రచయిత పరిచయము

ప్రస్తుత "గదల్" పాఠరచయిత రాంగేయ రాఘవ్‌గారు. ఇది ఒక చర్చనీయాంశమైన కథ రాంగేయ రాఘవ్ గారు 1923లో పుట్టారు. రాంగేయ రాఘవ్ ఆయన కలం పేరు. ఆయన అసలు పేరు తిరుమళ్ళై నాంబకమ్ వీర రాఘవాచార్య. ఆయన దార్శనికుడు, పరిశోధకుడు, "దేవదాస్", సముద్రకేఫేర్ "జీవన్ కెదానె" "అధూర్ మూరత్" ఆయన ప్రముఖ రచనలు. 1962లో రాంగేయ రాఘవ్ స్వర్గస్థులైనారు. "గదల్" కథలోని ప్రముఖ పాత్ర స్త్రీ. ఈకథలో ఆమె శక్తికి ప్రతీకగా చిత్రీకరించారు.

సారాంశము

గదల్ ఒక పర్వత ప్రాంతాల్లో ఉండే కొండ జాతి స్త్రీ. ఆమె గూజర జాతి స్త్రీ ఆమె విధవరాలు. ఆమె మరిదికి కూడా భార్యాపోయింది. కానీ డోడీ తమ జాతి ఆచారం ప్రకారం గదల్‌ను వివాహమాడలేదు. తన సంపాదనంతా అన్న పిల్లలకు ఇస్తాడు. గదల్‌తో కలిసి వుంటాడు. ఈ నిర్లక్ష్యాన్ని గదల్ సహించచలేకపోంది.

గదల్ ఆత్మగౌరవం కలిగిన మనిషి ఆమె ఎటువంటి అణిచివేతను లెక్కచేయదు. వేరే గ్రామంలోని మరొక జాతికి చెందిన వ్యక్తితో ఉండసాగింది. ఇంట్లో అందరూ దీనిని వ్యతిరేకించారు. కొడుకు నిహాల్ ఆమెను బంధించి తీసుకువెళ్ళాడు. ఆమె ఇంట్లోవాళ్ళను తిట్టిపోస్తూ. చనిపోయిన తన భర్తపై ఎవరికీ శ్రద్ధలేదనీ. అందుకే వాళ్ళు కుల పోళ్ళకు దావతు ఇవ్వలేదనీ. కేవలం గర్నమెంటు నియమాలననుసరించి 25 మందికి మాత్రమే తినిపించారునీ అంటుంది.

మరసటి రోజు ఉదయమే గదల్ మళ్ళీ మౌనీ ఇంటికి వెళ్ళిపోయింది. మౌనీ వదిన గదల్‌ను ఎగతాళి చేసింది. గదల్ ఆమెకు మొహం మీద కొట్టినట్టు జవాబు చెప్తుంది. మౌనీ అడిగిన దానికి సరియైన సమాధానం చెప్పింది. ఆమెకు వేరే ఉండాలని అనుకుంటున్నట్టూ చెప్పింది. ఆరోజు మధ్యాహ్నానికి గదల్ చిన్నకొడుకు నారాయణ వస్తే గదల్ మరోలా అర్థం చేసుకుని తన నగలను అతనిపై విసిరివేసింది.

ఈ విషయం ఆమె మరిది డోడీకి తెలిసింది. అతని మనసు వికలమయ్యింది. ఆ రోజు రాత్రి భోజనం చేయలేదు. మరుసటిరోజు అతను చనిపోయాడు. డోడీ చనిపోయేముందు తన పేరునే కలవరించాడని గదల్‌కు తెలిసింది. ఆమె మౌనీకి తన ఇంటికి వెళ్తావని చెప్పింది. మౌనీ ఒప్పుకోలేదు. గదల్‌ను గదిలో బంధిస్తాడు. రాత్రి సమయం. మౌనీ గాఢ నిద్రలో ఉన్నప్పుడు గదల్ పారిపోతుంది. ఉదయం మౌనీకి ఈ విషయం తెలియగానే గొడవ పెట్టుకోవాలనుకుంటాడు. కానీ కులస్థులు ముసలామె కోసం గొడవపడటం మంచిదికాదని చెప్తారు.

Rahul Publications

గదల్ తన మరిది దిన ఖర్మలను గొప్పగా చెయ్యాలనుకుంటుంది. ఆమె పోలీస్ ఇన్స్పెక్టర్ లంచం ఇస్తుంది. కులస్థులందరినీ భోజనానికి పిలుస్తుంది. ఈ రకంగా శాసనాన్ని ధిక్కరిస్తుంది. ఆమె అభిప్రాయంలో కులాచారం శాసనం కంటే గొప్పది. కానీ మౌనీ పెద్ద ఆఫీసరుకు ఈ విషయాన్ని చేరవేస్తాడు. ఇన్స్పెక్టరు దినఖర్మలు ఆపమని గదల్‌ను ఆదేశిస్తాడు. కానీ గదల్ కులస్థలందరికీ భోజనాలు పెట్టి వెనుక గుమ్మం నుంచి పంపించి వేస్తుంది. పోలీసులు వచ్చారు. కాల్పులు జరిగాయి. గదల్, ఆమెకుంటుంబీకులు గట్టిగా పోరాడతారు. గదల్ పొట్టలో తూట తగుల్తుంది. చనిపోవటానికి ముందు తన కులస్థలందరూ తృప్తిగా భుజించారు. కనుక డోడీ ఆత్మ శాంతిస్తుంది అని చెప్తుంది.

విశేషము: ప్రస్తుత కథలో రాంగేయ్ రాఘవ్ స్త్రీ వ్యక్తిత్వాన్ని అన్ని కోణాల నుండి చిత్రించారు. గదల్ ఒక గొప్ప కథ తెగువ కలిగిన ఒక స్త్రీ కథ.

Rahul Publications

8. हँसूँ या रोऊँ

- विनायकराव विद्यालंकार

लेखक का परिचय :-

प्रस्तुत कहानी के कहानीकार विनायकराव विद्यालंकार है। आपका जन्म सन् 1895 में हुआ था। वे हैदराबाद कें प्रमुख समाज सेवी और आर्यसमाजी नेता थे। उन्होंने निजाम के कुशासन के प्रति किए गए संघर्ष में भाग लिया और जनता का नेतृत्व किया। उन्होने वित्तमंत्री के पद पर सराहनीय कार्य किया उन्होने ''आर्यभानु'' नामक साप्ताहिक का संपादन किया। वे कई कहानियाँ लिखें । ये कहानियाँ 'चाबुक' के नाम से प्रकाशित है।

सारांश :-

राय छोटेलाल उस शहर में मुंसिफ थे । एक भले अधिकारी भी थे । अनेक सार्वजनिक कार्यो में भाग लेते थे। दान-धर्म भी पर्याप्त मात्रा मे किया करते थे। गरीबो से उनका व्यवहार अच्छा रहता था। हृदय की गति बन्द होने से एकाएक उनकी मृत्यु हो गई। लेखक भी शव यात्रा में सम्मिलित हो गए। चिता सिलग चुकी, चिता की गर्मी दूर तक अनुभव की जा रही थी। सब लोग कपाल - क्रिया की प्रतीक्षा कर रहें थे। जहाँ धूप से बचाव हो सके वहाँ बैठ रहे थे। लेखक भी एक पेड की छाया में चुपचाप बैठे। किसी ने लेखक को पहचानकर अभिवादन किया। कितनी कोशिश करने पर भी उनको वे पहचानने में असमर्थ हो गए। लेकिन अभिवादन किया । शिष्टाचार के नियम के अनुसार उनके बारे में पूछे। वे जवाब दिए उनका धंधा - बंदा कुछ ठीक नहीं है कुछ दिन पूर्व इन्फलूएंजा की बीमरी बडे जोरों पर थी। रोज लगभग पाँच - पाँच सौ लोग मरते थे। इस घाट पर 30 या 40 आर्थियाँ आ जाती थी। व्यापार अच्छा चल रहा था। अब मुश्किल से दो चार मुर्द आते हैं। आप मेरी स्थिति का इससे अनुमान लगा सकेंगे। यह सुनकर लेखक दंग रह गए । वह एक लकडहारा था। उसका दुकान स्मशान में था। लेखक के मन में यह प्रश्न उठा हँसूँ या रोऊँ?

लकडहारे के दाम चुका दिये गए। ब्राहमनों की दक्षिणा भी चुका दी गई थी। सारा काम यथाविधि किये जा रहे थे। चिता निस्तेज हो रही थी। लोगों के चेहरों पर उदासी, कलांती, और म्लानता भी कम होती जा रही थी। वे लोग रामशान से फाटक तक भी नहीं पहुँचे थे चिता की लकडियो को जमाकर सिलगाया था वह उनके सामने आकर सिर झुकाकर इनाम माँगा।

मुकद्दमा हारे या जीते अदालत के चपरासी को इनाम मिलता था। वैसे ही शमशान पर काम करनेवाले ये कर्मचारी चिता जमाने के लिए मृतक के संबधियों से इनाम मांग रहे थे। लेखक ने सोचा की मृत्यु के अतिरिक्त ये लोग लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे । लेखक को पहले आये हुई वाद में एक

Rahul Publications

रुपए का नोट उन्हे दे दिया। वे लोग राय छोटेलाल के संबंधियों की तरफ इशारा करते हुए कहे कि ऐसी धनी-मानी लोगों की मौत रोज-रोज नहीं होती जब ऐसी अर्थी आती तो अधिक कुछ मिलने की आशा उनको रहती है। चिता रचने वाले दस रूपए माँगे। उनको दस रुपये देकर शमशान से बाहर निकले।

सब लोग शमशान भूमि के फाटक के बाहर निकले । लोगों में स्मशान वैराग्य के चिन्ह मरते जा रहे थे। कोई रूई का भाव पूछ रहा था तो कोई होटल का पता पूछ रहा था। कोई ट्रेन का समय मालुम कर रहा था तो कोई कचहरी का रस्ता, कोई सिनेमा घर के बारें में जानकारी ले रहे थे। हर व्यक्ति अपने विषय में मस्त थे।

इतने में लेखक के एक नैाजवान मित्र लेखक की तरफ आए। उनके चेहरे पर कुछ लज्जा और कुछ आशा कुछ संकोच और कुछ उमंग के लहर दिखाई दे रहा था। उनका आवेदन पत्र गाड़ी में लेखक के साथ बैठे हुए चीफ जस्टिस को देने के लिए दिए, लेखक दौड कर मोटर का पहिया धरती पर घूमे उसे पहले ही उनके नौजवान दोस्त कां प्रार्थना - पत्र उनके हाथ में थमा दिया। चीफ जस्टिस सहानुभूति पूर्ण स्वर में बोले कि लेखक के मित्र बहुत देर से आए । और प्रार्थना पत्र को लेखक के हाथ में वापस दे दिए। लेखक का मित्र एक वकील था। राय छोटेलाल की मृत्यु के कारण मुंसिफ का स्थान हुआ था लेखक के मित्र ने चीफ जस्टिस साहब को इसी रिक्त स्थान के नियुक्ति के लिए प्रार्थना - पत्र दिया था। लेखक के चेहरे पर आशाथी कि सबसे पहले प्रार्थना पत्र उसी का होगां। लेखक के चेहरे पर आशा थी कि सबसे पहला प्राथा पत्र उसी का होगां। लेखक अपने मित्र की दृष्टता पर विचार किया कि वह व्यक्ति श्मशान भूमि पर अपना प्रार्यना पत्र लाने का साहस कैसा कर सका। यह सोचते सोचते लेखक फिर से एक बार कह उठा - हँसूँ या रोऊँ ।

विशेषता :- मृत्यु के अवसर पर मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति पर व्यंग्य हँसूँ या रोऊँ कहानी में किया गया है।

चरित्र चित्रण

मै पात्र : - (लेखक)

लेखक राय छोटेलाल के शव यात्रा में भाग लिए थे। राय छोटेलाल उस शहर में मुंसिफ थे। एक भले अधिकारी भी थे। अनेक सार्वजनिक कार्यो में भाग लेते थे । गरीबों से उनका व्यवहार अच्छा रहता था। हुदय की गति बन्द होने से एकाएक उनकी मृत्यु हो गई। श्मशान भूमि में कोई लेखक को पहचानकर अभिवादन किया। वह एक लकडहारा था। उसका दूकान श्मशान में था। उन्होंने बताया कि पहले उस घाट पर ३० या ४० आर्थियाँ आ जाती थी। व्यापार अच्छा चलता था। अब मुश्किल से दो चार मुर्दे आते है। यह सुनकर लेखक दंग रह गया। लेखक के मन में यह प्रश्न उठा हँसँ या रौऊँ ?

चिता निस्तेज हो रही थी। लोगों के चेहरों पर उदासी । कंलाती, और म्लानता भी कम होती जा रही थी। वे लोग श्मशान से फाटक तक भी नहीं पहुँचे थे चिता की लकडियों को जमाकर सिलगाए कर्मचारि सिर सुकाकर इनाम माँगा । लेखक ने उन्हे एक रूपए दिया लेकिन वे लोग दस रूपए माँगे। उनको दस रूपए देकर श्मशान से लेखक को बाहर निकलना पडा । श्मशान भूमि मे फांरक के बाहर निकलने के बाद हर व्यक्ति अपने विषय में मस्त थे।

लेखक के एक नौजवान मित्र चीफ जस्टिस को उनका आवेदन पत्र देने के लिए कहे। लेखक का मित्र एक वकील था। राय छोटेलाल की मृत्यु के कारण मुंसिफ का स्थान रिक्त हुआ था। इसी रिक्त स्थान पर अपनी नियुक्ति के लिए आवेदन पत्र दिया। लेखक सोच रहे थे कि श्मशान भूमि पर अपना प्रार्थना पत्र लाने का साहस नौजवान मित्र कैसा कर सका। लेखक फिर से एक बार कह उठा - हँसुँ या रौऊँ। थमा दिया चीफ जस्टिस सहानुभूति पूर्ण स्वर में बोले कि लेखक के मित्र बहुत देर से आए और प्रार्थना पत्र को लेखक के हाथ में वापस दे दिया। लेखक का मित्र एक वकील थे। राय छोटेलाल की मृत्यु के कारण मुंसिफ का स्थान रिक्त हुआ था। लेखक के मित्रने चीफ जस्टिस साहब को इसी रिक्त स्थान पर अपनी नियुक्ति के लिए प्रार्थना - पत्र उसी का होगा। लेखक अपने मित्र की दृष्टता पर विचार किया कि वह व्यक्ति श्मशान भूमि पर अपना प्रार्थन पत्र लाने का साहस कैसा कर सका। यह सोचते सोचते लेखक फिर से एक बार कह उठा - हँसूँ या रोऊँ।

विशेषता :- मृत्यु के अवसर पर मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति पर व्यंग्य हँसूँ या रोऊँ कहानी में किया गया है।

Rahul Publications

సారాంశము

8. హసూం యా రోవూ

రచయిత పరిచయము

ప్రస్తుత కథహసూం యా రోవూ కథాకారుదు వినాయకరావు విద్యాలంకార్. 1895లో ఆయన జన్మించారు. ఆయన హైద్రాబాద్‌లోని ప్రముఖ సమాజ సేనకుడు, ఆర్య సమాజ నాయకుడు. ఆయన నిజాం నిరంకుశత్వానికి వ్యతిరేకంగా జరిగిన పోరాటాలలో పాల్గొన్నారు. ప్రజలకు నాయకత్వం వహించారు. ఆర్థిక శాఖా మంత్రిగా పనిచేశారు. "ఆర్యభాను" అనే వార పత్రికకు సంపాదకీయం చేశారు. అనేక కథలు రాశారు. "బాబుక్" అన్న పేరుతో ప్రచురించబడ్డాయి.

సారాంశము

రాయ్ ఛోటేలాల్ ఆ నగర కచేరీలో పనిచేస్తారు. ఆయన ఒక గొప్ప ఆఫీసరు. అనేక సామాజిక కార్యక్రమాలలో పాల్గొనేవారు. దాన ధర్మాలు కూడా చేసేవారు. పేదలతో ప్రేమగా మెలిగేవారు. హఠాత్తుగా గుండెపోటుతో మరణించారు. రచయిత కూడా శవ యాత్రలు పాల్గొన్నారు. చితిమండుతుంది. అందరూ కపాల క్రియ కోసం ఎదురుచూస్తున్నారు. ఎండ వేడి తగలకుండా అందరూ రచయితలో సహా చెట్టునీడ కూర్చున్నారు. ఎవరోఒకతను రచయితను చూసి నమస్కరించాడు.

ఎంత గుర్తు తెచ్చుకున్నా అతను ఎవరో రచయితకు గుర్తుకు రాలేదు. అయినా పద్ధతి ప్రకారం రచయిత కూడా ప్రతి నమస్కారం చేశారు. అతను తన వ్యాపారం సరిగా సాగటంలేదని వాపోయాడు. కొద్ది సంవత్సరాల క్రితం ఇన్‌ఫ్లూయంజా జబ్బుతో చాలా మంది రోగాన పడేవారు. రోజుకు 4,5 వందల మంది మరణించేవారు. ఈ స్మశానికి 30, 40 శనాలు వస్తుండేవి. వ్యాపారము బాగా నడిచేది. ఇప్పుడు రోజుకు రెండు శవాలు కూడా రావడం లేదని చెప్పాడు. అతను ఒక కట్టెల వ్యాపారస్థుడు అతని దుకాణం స్మశానంలో వున్నది. రచయిత ఆశ్చర్యపోయాడు. మనసులో అనుకున్నాడు "నవ్వాలా? ఏడ్వాలా?"

కట్టెలతనికీ, బ్రాహ్మణులకూ దక్షిణలు ఇచ్చారు. పని అంత సజావుగా జరుగుతోంది. చితికాలుతూనే ఉంది. క్రమక్రమంగా అందరి ముఖాలలో ఉదాసీనత, బాధ, విచారమూ తగ్గుతూ వచ్చాయి. వాళ్ళు స్మశానము బయట గేటు దగ్గరకు రాగానే చితికట్టెలు పేర్చి, చితి అంటించిన అతను రచయిత ముందుకు వచ్చి తల వంచుకుని దానము అడిగాడు.

కోర్టుకేసుగెలిచినా, ఓడినా బంట్రోతుకు దానం ఇవ్వవలసిందే! అలాగే స్మశానడిన పనిచేసే చితిపేర్చిన వాళ్ళు మృతుడి బంధువుల నుండి దానం అడుగుతున్నారు. రచయిత అనుకున్నాడు చావు సమయంలో తప్ప మరే విధముగానూ వీళ్ళు లాభం పొందలేదు. రచయితకు మొదలు ఆశ్చర్యమేసింది తరువాత ఒక రూపాయి నోటు అతనికి ఇచ్చాడు. వాళ్ళు రాయ్ ఛోటేలాల్ బంధువుల వైపుచూస్తూ ఇలాంటి ధనవంతుల మృత్యువు రోజు జరగదు. ఇలాంటప్పుడే కదా ఎక్కువ డబ్బులు ఆశించేది అన్నారు. పదిరూపాయలు అడిగారు. చితిపేర్చిన వాళ్ళకు పదిరూపాయలు ఇచ్చిస్మశానం నుండి బయటకు, రావటం జరుగుతుంది.

Rahul Publications

అందరూ స్మశాన భూమి నుండి బయటకు వచ్చారు. వాళ్ళు స్మశాన వైరాగ్యం తాలూకు ఛాయలు తగ్గుతూ వచ్చాయి. ఒకరు దూది ధర అడిగితే మరొకరు హోటలు అడ్రస్సు, ఇంకొకరు రైలు సమయాలు మరొకరు కోర్టుకు వెళ్ళేదారి సినిమా హోటలకు వెళ్ళేదారి ఇలా ప్రతి ఒక్కరూ తమ తమ పనులలో మునిగిపోయారు

ఇంతలోకి రచయిత మిత్రుడు ఒకాయన సంకోచంగా వచ్చి రచయిత చేతికి దరఖాస్తు పత్రం ఇస్తాడు. కారులో ఉన్న ఛీఫ్ జస్టిస్ ఇవ్వమని చెప్తాడు. రచయిత అప్పుడే కదలబోతున్న కారులో ఉన్న చీఫ్ జస్టిస్ దగ్గరకు పరిగెత్తుకుంటూ వెళ్ళి ఆదరఖాస్తు పత్రాన్ని ఇస్తాడు. ఛీఫ్‌జస్టిస్ సానుభూతి కలిసిన స్వరంలో చాలా ఆలస్యంగా ఇచ్చారని అంటూ తిరిగి ఆ పత్రాన్ని రచయిత చేతిలో ఉంచుతాడు. రాయ్ ఛోటేలాల్ మరణం వలన ఏర్పడిన ఖాళీ పోస్టు కోసం రచయిత మిత్రుడు దరఖాస్తుపత్రాన్ని ఇస్తాడు. అందరి కంటే తానే ముందుగా ఇచ్చిఉంటాడని భ్రమిస్తాడు. రచయిత తన మిత్రుడి ప్రవర్తనకు ఆశ్చర్యపోతాడు. అసలు ఇలాంటి సమయంలో అతను దరఖాస్తు పత్రాన్ని ఎలా ఇవ్వాలనుకొన్నాడు. అని ఆలోచిస్తూ “నవ్వాలా? ఏడ్వలా? అని మరొకసారి మనసులో అనుకుంటాడు.

విశేషము : మృత్యుసమయంలో కూడా మనుషుల స్వార్థపూరిత ప్రవృత్తిని గురించి రచయిత వ్యంగ్య చిత్రణ ఈ కథలో చేశారు. నేడు మనిషి ధనము, పదవి కాంక్షలతో సంవేదనశూన్యుడిగా ఎలా మారుతున్నాడో. ఈ కథలో రచయిత చెప్పటం జరిగింది.

Rahul Publications

9. वापसी

- उषा प्रियंवदा

लेखिका का परिचय :-

उषा प्रियंवदा का नाम ''नयी कहानी'' के प्रतिभा संपन्न कहानीकारों मे प्रमुख है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. प्राप्त किया । वही पर अंग्रेजी विभाग में आध्यापिका नियुक्त हो गई। जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा तथा कितना बडा झूठ उनके प्रमुख कहानी संग्रह है। 'पचपन खंभे लाल दीवारे' तथा रूकोगी नही राधिका उनके बहुचर्चित उपन्यास है। मध्यवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याये, सूक्ष्म संवेदनशील, यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों में है।

कहानी का सारांश :-

गजाधर बाबू रेल विभाग में छोटे अफसर है, जो छोटे स्टेशन पर अकेले रहते है। पत्नी को कुछ दिन साथ रखने के बाद बच्चों की पढाई की सुविधा से उन्होने बड़े शहर में मकान बनवाकर वही रख दिया है। स्वयं अकेले रहते है और उसी सपने को पालते है कि रिटायर होकर वापस चलेगें और स्त्री-बच्चों के साथ भरे-पूरे परिवार से आनंदी रहेंगें। बीच बीच में अपनी युवावस्था के मादक चित्र उनकी आँखों में झलकतें रहते है और भविष्य के जीवन के सपने को और भी रंगीन बनाये रहते है। गणेशी उनका चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी है, जो नौकर भी है और अंतरंग भी। वह गजाधर बाबू को देखरेख में सदा सतर्क रहता है। रिटायर होने की खुशी में गजाधर बाबू कस्बे के सेठ राम जी की मिल में मिली नौकरी को यों ही छोड़ देते है।

जब गजाधर बाबू पैतीस साल की नौकरी के बाद रिटायर होकर इतवार के दिन घर लौटते है, तो देखते है कि उनके सब बच्चे मिलकर नास्ता कर रहे थे। उनके चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ जाती है। उस समय नरेन्द्र किसी फिल्मी नृत्य की नकल कर रहा था, बसंती हँस - हँस कर बेहाल हो रही थी, अमर की बहू को अपने तन-बदन का कोई होश नही था। गजाधर बाबू को देखते ही नरेन्द्र चुप से बैठ जाता है और चाय का प्याला उठाकर मुँह से लगा लेता है। बहू को होश आता है और वह झट से माथा ढक लेती है। बसन्ती का शरीर हँसी दबाने के प्रथत्न में हिलता है। गजाधर बाबू मुस्कराते हुए यह पूछते है कि क्यो नरेन्द्र क्या नकल हो रही थी? नरेन्द्र दबते हूए उत्तर देता है कि कुछ नही बाबूजी। गजाधर बाबू चाहते थे कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जब कुण्ठित हो चुप हो जाते है। उनकी पत्नी भी पहले पूजा-पाठ मे, फिर घरेलु काम-काज मे व्यस्त रहती है। अपने घर पहुँचकर पहले दिन में वे अनुभव करते है कि वहाँ के स्वच्छन्द जीवन में उनके आने से कुछ अवरोध उत्पन्न हो गया है।

उनके लिए पूरे घर में कोई जगह नही है, बैठक में चारपाई पडती है और बाद में स्टोर रूम मे रख दी जाती है, जो उनकी पत्नी का कमरा भी है। घर की पूरीव्यवस्था मे उनकी दखल किसी को भी बरदाश नही है और यहाँ तक कि उनकी पत्नी भी उनके प्रति सहानुभूतिशील नही है। वे भी शिकायत करती है। वे सुखी जीवन का सपना देखते हुए गजाधर बाबू पत्नी के प्रांरभिक दिनों के मिलता - जुलता चित्र बनाते थे। अब उन्हे लगता है कि कोई यह तो कोई और है, जिसका सारा जीवन ही रसोई घरके डिब्बे और चीनी के बर्तन है।

Rahul Publications

बच्चों के प्रति उनके मन में स्नेह भी है, किन्तु उन्हें पिता की भावनाओं की कोई चिंता नही है,। पिता अब श्रद्धा और ममत्व के पात्र नही रहे, केवल आय के स्रोत है। वे किसी प्रकार स्थिति के काम में हस्तक्षेप करना बंद कर देते है अपनी सीमित आमदनी का ध्यान रखकर जब वे नौकर को निकाल देते हैं, तब घर में तूफान उठता है। उन्हें सब का विरोध करना पडता है। वे चुपके से राम जी लाल सेठ की मिल में नौकरी स्वीकार करके वापस चले जाते है। उनकी पत्नी अपनी गृहस्थी छोडकर उनके साथ चलने को तैयार नही। जब गजाधर बाबू अपना बिस्तर लेकर चल देते हैं, तो फिर घर में वही स्वच्छन्द खुशहाली लौट आती है।

विशेषता

वापसी में मध्यवर्गीय बदलते पारिवारिक संबंधो की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की गई है । नयी पीढ़ी की आधुकि जीवन शैली तथा हुदयहीनता पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है ।

चरित्र चित्रण

गजाधर बाबू

गजाधर बाबू रेलवे में नौकरी करते हैं। बच्चों की शिक्षा के लिए उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को शहर में रखा है। पैंतीस वर्ष गुजर गए । अब रिटायर होकर लौट रहे है। उनकें घर में अलग एक व्यवस्था बन चुकी है। रहने, बैठने सोने के स्थान निश्चित हो चुके हैं। उनके आने से घर का वातावरण बदल गया। सब को असुविधा होने लगती है। वे घर के प्रबंन्ध में जब दखल देते हैं तो उनके बच्चे विद्रोह करने लगते है। घर में उनकी दशा एक परदेशी की सी हो जाती है। वे बच्चों के काम में हस्तक्षेप करना बन्द कर देते है।

जब नौकर को निकाल देते है। तब घर में तूफान उठता है। उनकी पत्नी भी उनका विरोध करने लगती है। बच्चों के प्रति उनके मन में स्नेह है, लेकिन बच्चों को उनकी भावनाओं की कोई चिंता नहीं है। अपने घर में अपने लिए स्थान न देखकर वे रामजी लाल सेठ की मिल में नौकरी स्वीकार करके वापस चले जाते है। गजाधर बाबू अपना पुराने एकांत जीवन में फिर से चले जाते है।

बसंती

बसंती - का चरित्र चित्रण

नयी कहानी के प्रतिभा संपन्न कहानीकारों मे उष प्रियंवदा का नाम अग्रगय है । नये बदलते पारिवारिक मूल्यों ने पुरानी पीढ़ी को परिवार में कितना नगय बना दिया है । उसका अत्यंत संवेदनात्मक चित्र 'वापसी' में देखने को मिलता है । पिता ने बंसती से चाय बनाने के लिए कहा बंसती ने अपने 35 वर्ष बाद वापस आए पिता को एक फिकी चाय दी । शादी की उर्म हो आई थी बसंती की अभी तक उसे चाय बनाना भी नही सिका था । पिता के न रहने के सारण अपने परिवार में बंसती भाई, भाभी जैसा रहते थे वैसे वह भी अधुनिक जीवन जी रही थी । कॉलेज पढ़ती थी बंसती, पडोस में सहेली के घर पर पढ़ाई के नाम पर देर रात तक बाते करते रहती थी । क्योंकी की सहेली के घर पर जवान लडके थे फिर भी वह देरतक रुक जाती थी। उसे कहने वाला कोई भी नही था । माँ से वह डरती नहीं थी । भाई, और भाभी भी हम उर्म वाले थे जिसके कारण उसे अच्छे संस्कार नही मिले । वह सिनेम जाती, खाने के लिए बाहर जाती । उसे अपने मध्यवर्ग और पारिवारिक संस्कारों का भान नही था । पिता इन सबके आधुनिक जीवन की बाधा बन गये थे । घरवालों के साथ बंसती भी मौज मस्ती मे अपना समय बिताना पसंद करती थी । पिताजी वापस काम पर जाने के लिए विचार करते है । अपने आप को अकेला पाकर तब बंसती भी उन्हें नहीं रोकती है । बंसती के चरित्र से नयी पीढी के और पुरानी पीढी के मूल्यों का पता चलता है ।

సారాంశము
9. వాపసీ

రచయిత పరిచయము

ఉషా ప్రియంవద గారి పేరు "నయూ కహనీ" చెందిన కథాకారులతో ప్రముఖమైనది. అలషబాదు విశ్వవిద్యాలయము నుండి ఇంగ్లీషు సాగిత్యంలో ఎమ్.ఎ.చేశారు. అక్కడే ఇంగ్లీషు, విభాగానికి లెక్చరర్‌గా వున్నార. "జిందగీ జార్ గులాబ్ కె ఫూల్' 'ఎక్ కోయూ దూసరా మరియు ఇతనా బడా ఝూట్' ఆమె ప్రముఖ కథాసంపుటాలు. 'పచపన్ కుంభే లాల్ దివారె మరియు రుకోగీ నహీ రాధికా ఆమె బహృచర్చిత నవలలు. మధ్యతరగతి జీవితాలలోని విభిన్న సమస్యలు, సూక్ష్మ సంవేదన శీలత, యదార్థ చిత్రణలు ఆమె కథలలో వుంటాయి.

సారాంశము

గజాధర్ బాబు రైల్వేలో చిన్న ఆఫీసరు. ఒక చిన్న స్టేషన్‌లో వుంటుండేవారు. పిల్లలు చదువుల కోసం భార్యను, ఫ్లిలలను నగరంలో ఒక ఇల్లు తీసుకుని ఉంచాడు. ఆయన ఎప్పుడూ ఉహాలలో ఉండేవాడు. రిటైర్‌మెంట్ తర్వాత ఇంటికి తిరిగి వెళ్ళిపోవాలని కలలు కనేవాడు. అప్పుడప్పుడు యవ్వనంలో జరిగిన అనుభూతులు ఆయన కళ్ళముందు కదలాడుతుండేది. భవిష్యత్ జీవితం మరింత ఆనందమయం అనిపించేది. గణేష్ నాలుగవ తరగతి ఎంప్లాయ్. నీకరే కాకుండా ఆయన ఆంతరంగికుడు కూడా. గణేష్ గజాధర్‌బాబును కంటికిరెప్పలా చూసుకునేవాడు. రిటైర్ అయ్యే ఆనందంలో గజాధర్‌బాబు సేఠ్‌రామ్‌జీ మిల్లులో దొరికిన ఉద్యోగాన్ని వదులుకున్నాడు.

గజాధర్‌బాబు 35 సం॥రాలు ఉద్యోగం చేసి రిటైర్ అయి ఆదివారం ఇంటికి తిరిగి వెళ్ళి సరికి పిల్లలందరూ టిఫన్ చేస్తున్నారు. ఆయన ముఖంలో చిరునవ్వు కనపడుతుంది. నరేంద్ర సినిమాలో చూపించిన నృత్యాన్ని అభినయిస్తున్నాడు. బసంతీ నవ్వి నవ్వి క్రింద పడిపోతున్నది. అమర్ భార్య ఒంటిపై సృహలేకుండా నవ్వుతోంది. గజాధర్ బాబును చూస్తుండగానే నరేంద్రమౌనమైపోతాడు. టీ తాగడం మొదలు పెడతాడు. కోడలు సృహలోకి వచ్చి తలమీద చీరకొంగు కొప్పుకుంటుంది. బసంతి నవ్వును ఆపుకునే ప్రయత్నం చేస్తుంది. గజాధర్ బాబు నవ్వుతూ నరేంద్ర ఏమె అభినయిస్తున్నావు? అని అడుగుతాడు. నరేంద్ర ఆగిఆగి సమాధానం చెప్తాడు. ఏమీ లేదు నాన్నగారు అని కానీ గనజాధర్ బాబు ఆ ఆనందంలో తనూ పాలుపంచుకోవాలనుకుంటాడు. ఆయన ఇంటి పనులో మునిగి పోయింది. తన ఇంటిలో వచ్చాక మొదటిరోజు అనుభవంలోనే అక్కడి స్వచ్ఛంద జీవితాలలో తనురావటం వలన కొంతి అవరోధం కలిగినట్టుగా అనుకున్నాడు.

అతని కంటు ఇంటిలో ఎటువంటి స్థానము లేదు. ముందు రూములో చాపవేస్తారు. తరువాత స్టోర్‌రూములో వేస్తారు. ఆయన భార్య గది అది. ఇంటిలో ఎవరికీ అతని పట్ల సానుభూతిలేదు. భార్యతో సహా. ఆమె ఏదో ఒక కంప్లైట్ ఇస్తూనే వుంటుంది. సుఖవంతమైన జీవితాన్ని గడపాలని జీవితపు ప్రారంభ రోజులలో అనుకునేవాడు ఈమె ఎవరో తన మనిషికాదు. ఈమె జీవితం నెయ్యి డబ్బలలో, పంచదార గిన్నెలలో మునిగిపోయింది. అని అతనికి అనిపిస్తుంది.

Rahul Publications

పిల్లల పట్ల ఆయన మనసులో స్నేహభావం ఉన్నా పిల్లలకు మాత్రం తండ్రి భావాలను గురించిన ఆలోచనే లేదు. తండ్రి వాళ్ళ దృష్టిలో శ్రద్ధ, మమకార పాత్రుడకాకుండా కేవలం డబ్బు సంపాదించే మనిషిగానే మిగిలిపోయాడు. గజాధర్‌బాబు ఏదోఒకరకంగా ఇంటి సమస్యలను సర్దుబాటు చేసే ప్రయత్నం చేయాలనుకునేవాడు. పిల్లల పనులలో తను కల్పించుకోవటం తగ్గించేశారు. ఇంటి ఆదాయాన్ని దృష్టిలో పెట్టుకుని నీకరును తీసివేసినప్పుడు ఇంట్లో చాలా గొడవ జరిగింది. అందరూ అతడిని వ్యతిరేకించారు. ఆయన ఇవన్నీ ఆలోచించుకుని మౌనంగా సేఠ్ రామ్‌జీ లాల్ మిల్లులో ఉద్యోగాన్ని స్వీకరించి తిరిగి పనిలోకి వెళ్ళిపోతాడు. ఆయన భార్య ఇంటి బాధ్యతలను వదిలివేసి అతనితో వెళ్ళటానికి సిద్ధపడదు. గజాధర్ బాబు తన సామాను సర్దుకుని బయలుదేరగానే మరలా ఆ ఇంట్లో వెనుకటి స్వేచ్ఛా స్థితి ఆనందం మొదలవుతుంది.

Rahul Publications

10. सेवा

- ममता कालिया

लेखिका का परिचय :-

प्रस्तुत कहानी ''सेवा'' की लेखिका का जन्म सन् १९४० नवंबर २ को वृंदावन में हुआ था। उनके पिता विद्याभूषण अग्रवाल बडे विद्वान थे। उन्ही का प्रभाव ममताजी पर पडा। समकालीन लेखिकाओं में वे प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है। उनके आठ उपन्यास, चार कविता संग्रह प्रसिद्ध है। उनका 'कल परसों' के बरसो या संस्मरण भी प्रसिद्ध है। ममता कालिया के रचनाओं में हमारे भारतीय समाज मे मध्यवर्गीय नारी की पीडा, और सामान्य जीवन के अनुभव है।

सारांश :-

नरोत्तम सहाय जी सेवानिवृति होने के बाद घर पर ही रहते है। एक दिन उनकी पत्नी बाथरूम में पाँव फिसल जाने से उसकी कनपटी पर हलकी सी चोट आई थी वह बेहोश हो गयी थी। उनको ब्रेनहैमरेज हो गया था। अस्पताल में भर्ती करवाना पडा। पंद्रह दिन से बेहोश है। नरोत्तम सहाय भयंकर अकेले हो गए । अस्पताल में पत्नी के पलंग के पास कुर्सी डाले बैठे थे। कहने की उनके हाथ में आज का अखबार था लेकिन पिछले आधे घंटे से उन्होंने इसका एक भी शब्द नहीं पढ़ सके । उनके अंदर अकस्मात् एक बियाबान फैलने लगा। वे नौकरी से रिटायर हुए। इनकी बेटियों की शादी हुई, उनके बेटे विस्मय को घर छोडकर दिल्ली जाना पडा जब भी वे उदास नहीं हुए । लेकिन पत्नी की आकस्मिक बीमारी ने उनको एकदम निरूपाय बना डाला। उन्होने तीन बच्चों को खबर कर दी।

बेटियाँ तीन दिन अस्पताल का उपचार देखकर संतोष प्रकट किए, पत्नी को नली के रास्ते दूध, जूस और पानी दे दिया जाता था। नर्स नियम से तीन घंटे बाद आती और उन्हे पथ्य पिला जा रही थी। बेटियों ने अफसोस में सिर हिलाकर बोले कि ममी होश होता तो हम कोई ताकत की चीज बनाकर इन्हे खिलाते लिक्विड थे । अब तो लिक्विड डायट के सिवा कुछ दिया ही नहीं जा सकता। हमारा रूक ने का कोई फायदा नही पापा, हम जाएँ। नरोत्तम जी का मन बेटियों के आने से थोडा संभाला था। उनके जाने की सुनकर वे फिर चिंतित हो गए। हमें अपनी माँ सारे संसार से ज्याद प्यारी है। हमारी माँ अभी है। बडी बेटी की बातों ये उन्हे बार बार याद आ रहे थे।

पुराने दिनों की साथियों को खबर लगी तो उनमें से कई आकर मिसेज सहाय को देख गए। सबने अपने अपने फोन नंबर नरोत्तमजी को दे दिए जिससे किसी भी जरूरत में वे उनसे फोन नंबर नरोत्तमजी को दे दिए जिससे किसी भी जरूरत में वे उनसे संपर्क कर सकें। एक दिन पडोंसी भी उनसे मिले आये। मरीज की हालत में इतना तो सुधार था कि वे कभी कभी अपने बच्चों के नाम दोहरातीं । पत्नी की चेतना जब जब लौटती वह 'विस्सू - विस्सू' पुकार रही थी। विस्मय को फोन कर रहे थे लेकिन चार दिन तक नहीं आये । उसने कोई खबर भी नहीं भेजी पाँचवें दिन विस्मय की नीली मारूति कार वार्ड के सामने

Rahul Publications

आकर रूकी। उनका बेटा, बहू, दोनों पोते और उनके साथ पालतू कुत्ता नॉरी भी आया । बेटें ने कहा कि वे जापान गया था कांफ्रेसं में । बहू डॉली कार गैरेज गई हुई थी बाबूजी कह रही थी ।

विस्मय अपने पापा से पूछ रहा कि ममी इतनी कमजोर थीं तो उनके बिस्तर के पास कमोड कयों नहीं रखा दिया। नरोतमजी को अपनी गलती महसूस हूई। वे बेटे के सामने अपने को अनाडी और पूराना पा रहे थे। एक नर्स को रख लेने की सलाह दी । विस्मय बेचैनी से एक बार माँ को, एक बार पिता को देख रहा था। कभी डाक्टरों की पर्चे देख रहा, कभी दवाईयों की शीशायाँ। विस्मय कहा कि आप ममी का बुरा मत सोचिए । अगर मेरी ममी है तो इन्हें कुछ नहीं होगा चियर अप पापा, ममी ठीक हो जायेगी। नरोत्तमजी के कलेजे मै बेटे की बेचैनी। हडबडी और शब्द बर्फ की नोक की तरह चुभ गए। विस्मय डॉली को छोडकर जाना चाहता था डॉली बच्चों के स्कूल में पेरेटं - टीचर मीटिंग है। मैं नहीं रुकती कहती है।

बेटा, बहू, पोते चले जाने के बाद नरोत्तमजी वापस कमरे में आ गये । पत्नी अर्थ चेतन अवस्था मै 'विस्सू' को याद कर रही थी। नरोत्तम जी पत्नी से बोले ''चला गया तुम्हारा विस्सू । आधे घंटे के लिए आया था। इसे तुमने पैदा किया, पाला पोसा। तुम इनके लिए मेरी नाक में दम कर देती थी। इनका होमवर्क तुम्ही करती । आधी रात तक । आज तुम बेहोश पडी हो और बेटे को पुर्सत नहीं है तुम्हारे पास बैठने की। किसी को पुर्सत नही है तुम्हारे लिए। तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा, मैंने अभी से देख लिया है। तुम जल्दी से ठीक हो जाओ। तुम्हारे शिवा मेरा और है ही कौन''.

विशेषता :- 'सेवा' कहानी में ममता कालिया ने आज के समाज को तार-तार कर देनेवाले कटु सत्य के बारे में बताया हैं। वृध्द दंपती की व्यथा का अत्यंत यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण इसमें किया गया है।

नरोत्तम सहाय **चरित्र चित्रण**

नरोत्तम सहाय जी सेवानिवृत्ति के बाद वे घर पर ही रहते है। एक दिन उनकी पत्नी बाथरूम में पाँव फिसल जाने से बेहोश हो गयी थी। उनको ब्रेनहैमरेज हो गया । अस्पताल में भर्ती करवाना पडा। बेटा, बेटी, बहू, दामाद कहने को तो सभी है। लेकिन किसी के पास इतना समय नहीं कि वे नरोत्तम सहाय की पत्नी की देखभाल कर सकें। वे सब अपने अपने कार्यो मे व्यस्त है।

बेटियाँ तीन दिन अस्पताल का उपचार देखकर संतोष प्रकट किए। उनका रूकने से कोई फायदा नहीं है। कह कर चले जाते है। बेटा, बहू, पोते आए । आधा घंटा रहे और नर्स को रखने की सलाह दी। विस्मय अपने पिताजी नरोत्तम सहाय से कहा कि अगर मेरी ममी है तो इन्हें कुछ नहीं होगा, ममी ठीक हो जाएगी। नरोत्तमजी के कलजे मैं बेटे की बैचैनी, हडबडी और शब्द बर्प की नोक की तरह चुभ गया।

अंत में पत्नी से नरोत्तम सहाय का यह कहना है कि सुना तुमने । किसी को फ़ुर्सत नहीं है तुम्हारे लिए । तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा, मैने अभी से देख लिया है। तुम जल्दी से ठीक हो जओ। देखो। आंखे। तुम्हारे सिवा मेरा और है ही कौन। कहानी की पीडा को उद्धारित करता है। वृद्ध दंपती की व्यथा का अव्यंत यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण इसमें किया गया है।

Rahul Publications

10. సేవా

రచయిత పరిచయం

ప్రస్తుత "సేవా" అనే కథను రాసింది మమతా కాలియా గారు. ఆమె 1940 నవంబరు 2న బృందావనంలో జన్మించారు. ఆమె తండ్రిగారైన విద్యాభూషణ్ అగ్రవాల్ మహాపండితుడు. ఆయన ప్రభావమే మమతాజీ మీదవుంది. సమకాలీన రచయిత్రులలో ఆమె సుసంపన్న రచయిత్రి. ఆమె 8 నవలలు, 4 కవితా సంపుటాలు అత్యంత ప్రసిద్ధి పొందాయి. ఆమె రచించిన "కల్ పరసోం కె. బరసోం' గ్రంథం కూడా ప్రసిద్ధి పొందింది. మమతా కాలియా మనభారతీయ సమజాంలోని మధ్యతరగతి స్త్రీల బావాలు, జీవిత అనుభావలను తన రచనలలో రచించారు.

సారాంశము

నరోత్తమ సహాయ్ రిటైర్ అయ్యాక ఇంటివద్దనే ఉండేవాడు. ఒకరోజు అతని భార్య బాత్‌రూమ్‌లో జారి కిందపడి తుంటి ఎముక విరిగి కోమాలోకి వెళ్ళిపోతుంది. ఆమెకు బ్రయిన్ డామేజ్ అవుతుంది. హాస్పటల్‌లో చేర్పిస్తారు. 15 రోజులుగా కోమాలోనే వున్నది. నరోత్తమ సహాయ్ అత్యంత ఒంటరితనానికి లోనవుతాడు. హాస్పటల్‌లో భార్య మంచం దగ్గర కుర్చీవేసుకుని కూర్చుంటాడు. చెప్పుకోవటానికి ఆయన చేతిలో ఈరోజు దిన పత్రిక కానీ అరగంట నుంచీ ఒకే ముక్క కూడా చదవలేకపోయాడు. ఆయనలో హఠాత్తుగా ఒక దిగులు వచ్చేసింది. ఆయన ఉద్యోగం నుంచీ రిటైర్ అయ్యాడు. ఆయన కూతళ్ళు పెళ్ళిఅప్పుడు, అతని కొడుకు విస్మయ్‌కు ఇళ్ళు వదలి ఢిల్లీ వెళ్ళవలసి వచ్చినా ఆయన దిగులు పడలేదు. కానీ భార్య అకస్మాత్తుగా రోగాన పడటం ఆయనను నిరుపాయంగా చేసేసింది. ఆయన ముగ్గురు పిల్లలకు రమ్మని కబురుపంపాడు.

కూతుళ్ళు మూడు రోజులు ఉండి హాస్పటల్ వారి సపరిచర్యలకు సంతోషాన్ని ప్రకటిస్తారు. భార్యకు పైపుద్వారా పాలు, జూస్ ఇంకా నీళ్ళు ఇస్తున్నారు. నర్సు ప్రతి మూడు గంటలకూ వస్తుంది. పత్యం ఇచ్చి వెళ్తుంది. కూతుళ్ళు భాదపడుతూ అమ్మ స్పృహలో వుండి వుంటే మేము ఏమన్నా ఘన పదార్థాలు ఇచ్చేవాళ్ళము. ఇప్పుడు ద్రవపదార్థాలు తప్ప ఏమీ ఇవ్వడానికి కూడా లేదు. మేముండటం వలన ఉపయోగం ఏముంది నాన్నా? మేము వెళ్తాము అని అంటారు. కూతుళ్ళు వచ్చేసరికి నరోత్తమ్ సహాయ్‌కు కొంత గండె ధైర్యం వచ్చినట్లుయ్యింది. వాళ్ళు వెళ్ళిపోగానే మరలా దిగులుగా అయిపోయారు. మాకు మాఅమ్మ ఈ ప్రపంచంలో అన్నింటికంటే ఇష్టమయినది. మా అమ్మ ఇంకా బతికే వుంది. పెద్ద కూతురన్న ఈ మాట ఆయనకు మరలా మరలా గుర్తువస్తునే వున్నాయి.

పాత స్నేహితులకు విషయం తెలిసి చాలా మంది వచ్చి మిసెస్ సహాయ్‌ను చూసివెళ్ళారు. అందరూ ఫోన్ నెంబర్లు అవసరం అయితే పిలవమని చెప్పారు. ఒకరోజు ఇంటి పక్కవాళ్ళు కలవటానికి వచ్చారు. రోగి పరిస్థితిలో తన పిల్లల పేర్లు పిలిచేంత మార్పువచ్చింది. ఆమె మాటిమాటికీ విస్సూ, విస్సూ అని పిలుస్తునేవుంది. విస్మయ్‌కు ఎన్ని సార్లు ఫోన్ చేసినా నాలుగురోజుల దాకా రాలేదు. ఎటువంటి కబురూ పంపలేదు. ఐదవ రోజు నీలం రంగు మారుతికారు హాస్పటల్ ముందు వచ్చి ఆగింది. ఆయన కొడుకు, కోడలు, మనవళ్ళు ఇంకా 'నాటీ' పెంపుడు కుక్క కూడా వచ్చింది. కొడుకు చెప్పాడు జపాన్ కాన్ఫవెర్స్‌కు వెళ్ళానని. కోడలు డాల్ కారు బాగోలేదని చెప్పింది.

Rahul Publications

విస్మయ్ అడుగుతున్నాడు. అమ్మ ఇంత బలహీనంగా వుంటే మీరెందుకు ఆమె మంచం దగ్గర కమోడ్ పెట్టించలేదని నరోత్తమ్‌కు తన తప్పుతెలిసివచ్చింది. కొడుకు ముందు తనను తాను మూర్ఖుడిగా, అజ్ఞానుడిగా ఉండవలసి వచ్చింది ఆయనకు. విస్మయ్ విసుగ్గా ఒకసారి తల్లినీ, ఒకసారి తండ్రినీ చూస్తూన్నాడు. డాక్టర్ల రిపోర్టు, మందులనూ చూశాడు. మీరు అమ్మ గురించి చెడ్డగా అలోచించకండి. ఒకవేళ నాతల్లే అయివుంటే ఆమెకేం ఏమీకాదు. అమ్మ బాగుపడుతుంది నాన్నా అన్నాడు. విస్మయ్ భార్యను అక్కడ వదిలి వెళ్ళాలనుకుంటాడ. కానీ ఆమె పిల్లలకు స్కూల్లో పేరేంట్ – టీచర్ మీటింగు వుందనే చెప్తుంది–ఉడడం కుదరదు అంటుంది.

కొడుకు, కోడలు, మనవళ్ళు వెళ్ళిపోయాక నరోత్తమ్‌గారు తిరిగి గదిలోకి వచ్చారు. భార్య సగం స్పృహలో వుంది. విస్సూ, విస్సూ అని పిలుస్తోంది. నరోత్తమ్‌గారు భార్యతో ఇలా అంటారు. “నీ విస్సు వెళ్ళిపోయాడు. అర్ధగంట కోసం వచ్చాడు. వీడిని నువ్వు పెంచి పెద్దచేశావు. వీడికోసం నువ్వు నున్న ఇబ్బంది పెట్టేదానివి. హోమ్‌వర్కులు నువ్వే చేసేదానివి అర్ధరాత్రి దాకా. ఈ రోజు నువ్వు స్పృహలేకుండా ఉన్నావు. నీ కొడుకుకు నీదగ్గర ఉండటానికి టైమ్‌లేదు. ఎవరికీ టైములేదు నీకోసం. నీ తరువాత నా పరిస్థితి ఏమవుతుందో ఇప్పుడే నేను చూశాను. నువ్వు తొందరగా కోలుకో. నువ్వు తప్ప నాకు ఎవరున్నారు.

విశేషము : “సేవా” కథలో మమతా కాలియాగారు నాటి సమాజంలోని పచ్చియదార్థాన్ని చెప్పారు. వృద్ధ దంపతుల బాధను అత్యంత యదార్థంగా, మార్మికంగా చిత్రించారు.

Rahul Publications

11. सिलिया

- सुशीला टाकभौरे

लेखिका का परिचय :-

प्रस्तुत कहानी ''सिलिया'' की लेखिका सुशीला टाकभौरे समकालीन प्रसिद्ध लेखिकाओ में एक है। उन्होंने डॉ. अंबेडकर की विचारधारा से प्रभावित होकर तथा वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता समझकर बाबा साहब के विचारों को अपनाया है। उनकी कहानिओ के मुख्य पात्र दलित है। स्वाति बुँद और खारे मोती, यह तुम भी जानो, तुमने उसे कब पहचाना, हमारे हिस्से का सूरज आदि उनके काव्य संग्रह है। रंग और व्यंग्य एकांकी संग्रह,नीला आकाश उपन्यास तथा शिकंजे के दर्द आत्मकथा प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वाए उन्हे विशिष्ट सेवा सम्मान किया गया है।

सारांश :-

सन् 1970 की बात है। सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। उनकी स्वस्थ देह के कारण वह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही लगती थी। लोग उसकी शादी के विषय में चर्चा करने लगे। उसी साल हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में ''एक विज्ञापन छापा गया''। क्षूद्रवर्ण की वधू चाहिए महयप्रदेश की राजधानी भोपाल के जाने माने युका नेता सेठजी समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे । उनकी केवल एक ही शर्त थी कि लडकी कम से कम मैट्रिक हो।

गाँव के बडे लोग सिलिया की माँ को सलाह दी कि सिलिया मैट्रिक पढ़ रही है। बहुत होशियार है। समझदार भी है। उसका फोटो, परिचय पता लिखकर भेज दो। इस विषय में घर में भी चर्चा हुई। रिश्तेदार, पडोसी सब यही कहते थे। लेकिन सिलिया की माँ साफ-साफ कह रही थी की आज समाज को और सबको दिखाने के लिए हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड देंगे। यह सब बडे लोगों के चोचले है। हम तो नहीं देंगे अपनी बेटी को। हमें उसको खूब पढ़ायेंगे - लिखायेंगे। अपनी किस्मत वह खुद बना लेगी।

माँ की बात को सुनकर सिलिया के मन में आत्मविश्वास जाग उठा। सिलिया को वह दिन आज याद आया । तब सिलिया बारह साल की थी। उनकी मामा की लड़की मालती को कुएं से पानी भरती मामी मालती को मार रही थी। बेचारी मालती दोनों बाहों में अपना मुँह छुपाए रो रही थी। मामी का गुस्सा और मालती का रोना देखकर सिलिया स्वयं अपराधी महसूस कर रही थी। सिलिया ने साहस बटोरकर कहा कि बाजार से यहाँ तक दौडते आए है। प्यास के मारे दम निकल रहा था। मामी बिफर कर बोली कि घर कितना दूर था, मर तो न जाती । जिनकी रस्सी बालरी और कुँए को छू कर मालती ने अपवित्र

कर दिया था, वह औरत बकरियाँ के रेवडे पालती है । गाडरी मुहल्ले में अधिकांश घरों में भेडों, बकरियों का पालने - बेचने का व्यवसाय किया जाता है। गाडरी मुहल्ले से लगकर ही आठ दस घर भंगी जाती के है। सिलिया के मामा-मामी बहीं रहते है। सिलिया गंभीर और सीधे सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लडकी है।

इसके एक साल पहले की बात है। पांचवी कक्षा के टूर्नामेटं हो रहे थे । अपने सहपाठियों और कक्षा शिक्षक के साथ वह तहसील के स्कूल में गयी थी। आसपास अनेक गाँओ के विद्यार्थी टूर्नामेटं में भाग लेने आये थे । सिलिया लंबीदौड और कुर्सीदौड स्पर्थाओं में प्रथम आई थी। खो खो टीम भी उसी के कारण जीती थी। खेलकूद शिक्षक गोाकुल प्रसाद ठाकुर जी सिलिया से पूछे कि तहसील में तुम्हरें रिश्तेदारों का पता बता दो। हम तुम्हारें वहाँ पहुँचा देंगे। शर्म के कारण वह कुछ नहीं बता पायी। सर ने उसकी सहेली हेमलता से कहा था कि तुम इसे भी अपनी बहन के घर ले जाओ। शाम को सभी एक साथ गाँव लौटेंगे। हेमलता ठाकुर सिलिया को अपनी बडी बहन के घर लेकर गयी। बहन की सास सिलिया की जाति के बारे में हेमलता से पूछी। हेमलता ने धीरे से बता दिया। जाति का नाम सुनकर मौसीजी पानी का गलास वापस लिया साइकिल पर सिलिया को गाडरी मुहल्ले के पास छोड ने को भेजती है ।

सिलिया मौसीजी से पानी माँगने की हिम्मत नहीं कर सकी। मौसीजी के बेटे ने उसे गाडरी मुहल्ले के पास छोड दिया था। बरसो पुरानी पातनाएँ उनके मन मस्तिष्क में बार बार उथल पुथल मना देती है। सिलिया ने मन ही मन दृढ़ संकल्प किया कि वह आगे तक पढ़ी । झाड नहीं कलम। हाँ कलम ही उसके समाज का भाग्य बदलेगी। वह एक चिंगारी है। जो मशाल बनकर अपने समाज की प्रगति के मार्ग को प्रकाशित करेगी।

लगभग बीस वर्ष के बाद देश की राजधानी के सबसे प्रख्यात सभागृह मे एक प्रतिष्ठित साहित्य संस्था व्दारा एक महिला को सम्मानित किया जा रहा है। दलित मुक्ति आंदोलन की सक्रिय कार्यकर्ता, विदुषी, समाज सेवी, कवियत्री साहित्य जगत की प्रसिद्ध लेखिका आदि अनेक विशेषनों का प्रयोग उसके लिए किया जा रहा है वह महिला कोई और नहीं सिलिया थी।

Rahul Publications

विशेषता :- सिलिया नारी चेतना प्रधान कहानी है। इस कहानी में डॉ. सुशीला टाकमैारे ने 'सिलिया' नामक मुख्य पात्र के माध्यस से नारी का आत्मसमान के लिए किया गया संघर्ष दर्शया है।

चरित्र चित्रण

सिलिया :-

सिलिया आत्मसमान के लिए संघर्ष करनेवाली लडकी है। युवा नेता सेठजी के द्वारा सुद् वर्ण की लडकी से विवाह करने का विज्ञापन देने पर सिलिया सेठ जी के ढ़ोंग के विरूद्ध में आक्रोश प्रकर करती है। इस विषय में घर में चर्चा होती है। गाँव के बहुत पढ़े लिखे भी सिलिया की माँ को फोटो भेजने की सलाह देते है। लेकिन सिलिया की माँ सिलिया को खूब पढ़ाना चाहती है। सिलिया भी यही निर्णय कर लेती है।

बरसों पुरानी घटनाएँ उनके मस्तिष्क में बार-बार उथल-पुथल मचा देती है। सिलिया का स्वभाव चितंनशील बनता जा रहा था। पंरपरा से अलग, नये नये विचार उसके मन में आने लगे थी। अब यह विज्ञापन युक वर्ग का नवयुवक, सामाजिक कार्यकर्ता, जानता का नेता जातिभेद मिटाने के लिए शूद्रवर्ण की अछूत कन्या से विवाह समाज के सामने एक आदर्श रखने की बात यह सेठ जी महाशाय का ढोंग-आडंबर है। सिलिया पढ़ना चाहती है।

लगभग बीस वर्ष के बाद देश की राजधानी के सबसे प्रख्यात सभागृह में एक प्रतिष्ठित साहित्य संस्था द्वारा एक महिला को सम्मानित किया जा रहा है। दलित मुक्ति आंदोलन की सक्रिय कार्यकर्ता, विदूषी, समाज सेवी, कवियत्री साहित्य जगत की प्रसिद्ध लेखिका आदि अनेक विशेषणों का प्रयोग उसके लिए किया जा रहा है वह महिला कोई और नहीं सिलिया है।

Rahul Publications

11. సిలియా

రచయిత పరిచయం

ప్రస్తుత కథ "సిలియా"ను సుశీలా టాక్‌భౌరే రచించారు. ఆమె సమకాలేన సుప్రసిద్ధి రచయిత్రి. ఆమె డా॥అంబేద్కర్ భావజాలంతో ప్రభావితురాలై వర్తమాన మరియు భవిష్యత్తు ఆవశ్యకతలను అర్థ చేసుకుని బాబా సాహెబ్ భావజాలాన్ని స్వీకరించారు. ఆమె కథల ముఖ్య పాత్రలన్నీ దళితులే. "స్వాతి బూంద్ అవుర్ ఖారే మోతీ" "యహ్ తుమ్ భేజోవో" తుమేన ఇస్‌కబ్ పెహబానా, "హమార్ హెస్సేకా సూరజ్" మొదలైనవి ఆమె కావ్యసంపుటాలు. రంగ్ జార్ వ్యంగ్ అనే నాటికల సంపుటి నీలి ఆకాశం అనే నవల, షికంజె కెదర్ద్." ఆత్మకథ మొదలైనవి ప్రసిద్ధరచనలు మధ్యప్రదేశ్ దళిత సాహిత్య అకాడమీ ద్వారా ఆమె ప్రత్యేక సేవలకు సన్మానం చేయబడింది.

సారాంశము

1970వ సంవత్సర నాటిమాట. సిలియా 11వ తరగతి చదువుతుంది. ఆమె ఆరోగ్యవంతమైన దేహము మూలకంగా ఆమె వయస్సు కిండే పెద్దదిగా కనపడుతుంది. ఆమె పెళ్ళిగురించి గ్రామస్థులు చర్చిస్తున్నారు. అదే సంవత్సరం హిందీ ప్రతిక "నయీదునెయా"లో మధ్యప్రదేశ్ రాజధాని భోపాల్‌లోని పేరెన్ని కగన్న సేఠ్ గారికి శూద్రవర్ణ వధువు కావలెను. అన్న ప్రకటన వచ్చింది. వధువు మెట్రిక్ చదువుకోలన్నది ఆయన షరతు.

గ్రామ పెద్దలు "సిలియా మెట్రిక్ చదివి వున్నది. చాలా తెలివైనది. ఆమె ఫోటో, అడ్రస్సు పేరు రాసి పంపమని సలహా ఇస్తారు. ఈ విషయంగా ఇంట్లో చర్చ జరుగుతుంది. చుట్టాలు పక్కాలూ అందరూ ఇదే విషయాన్ని చెప్పారు. కానీ సిలియా తల్లి వ్యతిరేకిస్తుంది. ఈ రోజు సమాజానికి చూపించటానికి వాళ్ళు వివాహం చేసుకుని రేపు వదిలేస్తారు. ఇవన్నీ పెద్దమనుషుల నాటకాలు నేను నాబిడ్డను ఇవ్వను. నేను ఆమెను చదివిస్తాను. తన అదృష్టాన్ని తనే రాసుకుంటుంది అని అంటుంది.

తల్లి మాటలు విన్నాక సిలియాలో ఆత్మవిశ్వాసం పెరుగుతుంది. సిలియాకు గతం గుర్తుకు వస్తుంది. అప్పుడు సిలియాకు 12 సం॥రాల వయస్సు వుంటుంది. ఆమె స్నేహితురాలు మాలతీ నూతిలోంచి నీళ్ళు తోడుకుందని మామీ మాలతీని కొడుతుంది. పాపం మాలతి రెండు చేతులలో ముఖం వుంచుకొని ఏడుస్తూవుంటుంది. మామీ కోపాన్ని మాలతీ ఏడుపునూ చూసి సిలియా తనను అపరాధిగా భావిస్తుంది. సిలియా ధైర్యం తెచ్చుకుని బజారు నుండీ ఇక్కడి దాకా పరుగెత్తుకుంటూ వచ్చాము. దాహమేస్తోంది అన్నది. మామీకోపతా మీ ఇల్లు ఎంత దూరంలో వుంది. ఇంటికి వెళ్ళేలోపు చచ్చిపోయారుగా అన్నది. ఎవరి ఒక్కెట్, తాడు, బావిని మాలతి అపవిత్రం చేసిందో ఆమె మేకలను కాస్తుంది. అక్కడ వున్న పేటలోన కుటుంబాలలో ఎక్కువశాతం మేకలనూ, గొర్రెలనూ కాస్తుంటారు. అక్కడ నుండి కొంత దూరంలో ఒక 8, 10 ఇల్లు భంగ్ జాతికి సంబంధించినది. సిలియా అత్తా, మామ అక్కడే వుంటారు. సిలియా గంభీర స్వభావం కలది.

ఈ సంఘటన జరగటానికి ఒక సంవత్సరం ముందు 5వ తరగతి టోర్నమెంట్ జరుగుతున్నది. సిలియా తన తోటి విద్యార్థిని విద్యార్థులతో వెళ్ళింది. చుట్టుపక్కల అనేక గ్రామాల విద్యార్థులు టోర్నమెంట్‌లో పాల్గొనటానికి తహశీల్ వచ్చారు. సిలియా లాంగ్ జంప్, కుర్చీలు ఆటలలో మొదటి స్థానంలో గెలిచింది. ఖోఖోటీమ్ కూడా

ఆమె మూలకంగానే గెలిచింది. డ్రిల్ మాస్టర్ గోకుల ప్రసాద్ ఠాకుర్ 'తహశీల్'లో ఎవరైనా చుట్టాలున్నారా? అని అడుగుతాడు. సిగ్గుతో ఆమె ఏమీ చెప్పలేక పోయింది. ఆమె స్నేహితురాలు హేమలతతో వాళ్ళ ఇంటికి తీసుకువెళ్ళమని చెప్తాడు. హేమలతా ఠాకుర్ సిలియాను తనపెద్దక్క ఇంటికి తీసుకువెళ్తుంది. హేమలతా అక్క వాళ్ళ అత్తగారు సిలియాది ఏకులమని అడుగుతారు. హేమలత నెమ్మదిగా చెప్పింది. కులం పేరు చెప్పగానే ఆమె చేతికిచ్చిన నీళ్ళగ్లాసును తీసుకుని గాడర్ పేట దగ్గర పెట్టమని తనకొడుకు నిచ్చిపంపింది.

సిలియా నీళ్ళు తాగటానికి అడిగే ధైర్యం చేయ్యలేకపోయింది. ఆమె కొడుకు గాడర్ పేట దగ్గర సిలియాను వదిలేస్తాడు. చాలా సంవత్సరాల క్రితం జరిగిన ఈ సంఘటన ఆమెకు ఇంకా గుర్తువుంది. సిలియా అప్పుడే నిర్ణయించుకుంది తమ బాగా చదువుకోవాలని కలము సమాజాన్ని మారుస్తుందని నమ్ముతుంది. కలము ఒక వెలుగలాగా సమాజ ప్రగతికి మార్గాన్ని నిర్దేశిస్తుందిని నమ్ముతుంది.

దాదాపుగా 20 సం॥రాల తరువాత దేశ రాజధానిలో ప్రఖ్యాత మీటింగ్ హాలులో ఒక ప్రసిద్ధి సాహితీ సంస్థ ద్వారా ఒక మహిళకు సన్మానం జరుగుతుంది. దళిత ఆందోళల కార్యకర్త, సమాజ సేవకురాలు, విదూషీ, కవయిత్రీ, సాహిత్య జగుత్తులో ప్రసిద్ధ రచయిత్రి లాంటి అనేక గుణాలను చెపూ ఆమెను గౌరవిస్తారు. ఆమె ఎవరోకాదు సిలియానే.

విశేషము : సిలియా స్త్రీ చైతన్యాన్ని తెలియపరిచే కథ. ఈ కథలో డా॥ సుశీలా టాక్‌భౌరే. "సిలియా" అనే ముఖ్య పాత్ర ద్వారా స్త్రీలు తమ ఆత్మాభిమానం కోసం చేస్తున్న ఘర్షణను తెలియపరచారు.

Rahul Publications

व्याकरण

Rahul Publications

व्याकरण

- संधि - विच्छेद
- विलोम शब्द
- पत्रलेखन

Rahul Publications

व्याकरण

संधि विच्छेद

1. **संधि का अर्थ है जोड या मेल। संधि में दो वर्ण या अक्षरो के मेल से नये शब्द उत्पन्न होते है। दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, वह संधि कहलाती है।**

उदाः- सम् + तोष = संतोष, राज+इन्द्र = राजेंद्र,

संधि तीन प्रकार की होती है।

1) स्वर संधि 2) व्यंजन संधि 3) विसर्ग संधि

स्वर संधिः- दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन या विकार को स्वर संधि कहते है।

क) दीर्घ संधिः- दो सजातीय स्वर पास-पास आकर मिलने से दीर्घ स्वर आता है।

उदाः- अ + अ = आ

अ) अ + अ = आ - देव + आलय = देवालय

आ + अ = आ - विद्या + अर्थि = विद्यार्थी

आ) इ + इ = ई - कवि + इन्द्र = कवीन्द्र

इ + ई = ई - गिरि + ईश = गिरीश

इ) उ + उ = ऊ - भानु + उदय = भानोदय

ऊ + ऊ = ऊ - वधू + ऊर्मि = वधूर्मि

ख) गुण संधिः- इसमे अ, आ के बाद इ, ई, उ, ऊ दोनो मिल कर ए, ओ और ऋ मिले तो अर हो जाता है। इसे गुण संधि कहते है।

जैसेः- नर + इन्द्र = नरेंद्र

देव + इन्द्र = देवेंन्द्र

महा + ईश = महेश

महा + इन्द्र = महेंद्र

देव + ऋषि = देवर्षि

Rahul Publications

ग) वृद्धि संधिः- अ आ का ए ऐ से मेल होने पर 'ऐ' अ, आ, का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है । इसे वृद्धि संधि कहते है ।

जैसेः- एक + एक = एकैक

मत + ऐक्य = मतैक्य

सदा + एव = सदैव

राजा + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य

महा + औषध = महौषध

घ) यण संधिः- इ, ई आगे कोई असमान स्वर होने पर इ, ई का 'य' हो जाता है । उ, ऊ के आगे के साथ विजातीय स्वर के आने पर उ, ऊ का रुप व हो जाता है। 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर 'ऋ' का स्वरुप 'र' बन जाता है। इन्हें यण संधि कहते है। य, व, र, ल बन जाते हैं ।

उदाः- यदि + अपि = यधपि

अति + अधिक = अत्यधिक

सु + आगत = स्वागत

सु + अच्छ = स्वच्छ

मातृ + उपहार = मातृपहार

ड) अयादि संधिः- ए, ऐ और औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमश : अय्, आय् अब और आव हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

उदाः- ने + अन = नयन

पो + अन् = पवन

नै + इका = नायिका

नौ + इक = नाविक

श्रो + अन = श्रवण

2) **व्यंजन संधिः-** व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है। उसे व्यंजन संधि कहने है।

क) क, च, ट, त, प के आगे कोई स्वर वर्ण य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये तो उनके मेल के फल स्वरुप व्यंजन वर्ण अपने ही वर्ण के तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

उदाः- वाक् + ईश = वागीश

षट् + आन्न = षडानन

अच + अंत = अजंत

अप् + ज = अब्जा

ख) यदि किसी वर्ण के पहले वर्ण (क, च, ट, त, प) का मेल न या म् वर्ण हो उसके स्थान पर वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है।

जैसेः- वाक् + मय = वाड्मय

ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, म, य, र, ल, व या किसी स्वर से हो जा तो तन्त् का द् हो जाता है।

उदाः- भगवत + भक्ति = भगवद्भक्ति

घ) त् के बाद य् या छ् होने पर च, ज या झ होने पर ज्, द या ठ् होने पर, ड् और ल होने पर ल् हो जाता है।

उदाः- उत् + चारण = उच्चारण

उत् + लास = उल्लास

ड) त् का मेल यदि श, से त् का च् और श् का छ् बन जाता है।

उदाः- उत् + श्वास = उच्छवास

च) त् का मेल यदि ह से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है।

उदाः- उत् + हरण = उध्दरण

छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है।

उदाः- अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद,

अन् + छेद = अनुच्छद

Rahul Publications

ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बन जाता है।

उदाः-किम् + चित = किंचित

सम् + चय = संचय

सम् + मान = सम्मान

झ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष, स्, ह् मे से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है।

उदाः- सम् + योग = संयोग

सम् + वाद = संवाद

ट) ऋ, र्, ष्, से परे न् का ण्, हो जाता है, पर च वर्ग, त वर्ग श और स भेद हो जाने पर न् का ण् नही होता,

उदाः- र् + न = ण - परि + नाम = परिणाम - प्र + मान = प्रमाण

ठ) स से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् का ष हो जाता है।

उदाः- अभि + सेक = अभिषेक, वि + सम = विषम

3. **विसर्ग संधिः-** विसर्ग (ः) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है। उसे विसर्ग संधि कहते है।

उदाः- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी आ अथवा वर्गो के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व हो तो विसर्ग का हो जाता है।

उदाः-अधः + गति = अधोगति

मनः + बल = मनोबल

ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड कर कोई स्वर हो और बाद मे कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा यू, र्, ल, व, ह मे से कोई हो तो विसर्ग का र य र् हो जाता है।

उदाः-निः + आशा = निराशा

Rahul Publications

ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ, या श हो विसर्ग का श् हो जाता है।

उदाः- निः + चल = निश्छल

दुः + शासन = दुश्शसन

घ) विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है।

उदाः- निः + संतान = निःसंतान

ड) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में सें कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है ।

जैसेः- निः + कलंक = निष्कलंक

च) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद मे कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसेः- निः+ रस = नीरस

छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नही होता

जैसेः- अंत + करण = अतःकरण

संधि - विच्छेद

1. **विद्यालय** = विद्या + आलय
2. **रवींद** = रवि + इन्द्र
3. **महेश** = महा + ईश
4. **मतैक्य** = मत + एक्य
5. **इत्यादि** = इति + आदि
6. **स्वागत** = सु + आगत
7. **वागीश** = वाक + ईश
8. **जगदीश** = जगत + ईश
9. **सज्ञन** = सत् + जन

Rahul Publications

10. **मनोनुकूल** = मनः + अनुकूल
11. **निर्धन** = निः + धन
12. **नीरस** = निः + रस
13. **षडानन** = षड् + आनन
14. **निष्फल** = निः + फल
15. **मनोबल** = मनः + बल
16. **संलग्न** = सत् + लगन्
17. **मुनींद्र** = मुनि + इन्द्र
18. **महोत्सव** = महा + उत्सव
19. **एकैक** = एक + एक
20. **यधपि** = यदि + अपि
21. **लघूर्मि** = लधु + उर्मि
22. **देवर्षि** = देव + ॠषि
23. **महर्षि** = महा + ॠषि
24. **सदैव** = सत् + एव
25. **अन्वेषण** = अन् + वेषण
26. **दिग्गज** = दिक् + गज
27. **सद्गति** = सत् + गति
28. **सद्भावना** = सत् + भावना
29. **अधोगति** = अधः + गति
30. **निष्कलंक** = निः + कलंक
31. **अनन्य** = अन + अन्य
32. **कवीन्द्र** = कवी + इंद्र
33. **दिग्गज** = दिक + गज
34. **सुरेंद्र** = सुरः + इंद्र
35. **निराकार** = निः + आकार

Rahul Publications

36. **रामावतार** = राम + अवतार
37. **अत्याचार** = अति + आचार
38. **सदानंद** = सदा + आनंद
39. **निराशा** = निः + आशा
40. **अत्याधिक** = अति + अधिक
41. **देवेश** = देव + ईश
42. **उच्चारण** = उत् + चारण
43. **तपोवन** = तप + अपवन
44. **नारीश्वर** = नारी + ईश्वर
45. **दावानल** = दाव + आनल
46. **निर्गुण** = निः + गुण
47. **हरेक** = हर + एक
48. **अहंकार** = अहं + कार
49. **राजेश** = राज्य + ईश
50. **भावुक** = भौ + उक

Rahul Publications

विलोम शब्द

जो शब्द एक दूसरे से उल्टा या विपरीत अर्थ देते है उन्हें विपरीतार्थक शब्द या विलोम शब्द कहते हैं। विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग प्रायः साथ साथ भी होता है। जैसे सुख-दुख, दिन-रात आदि। कुछ विलोम शब्द उपसर्गों के योग से एवं कुछ उपसर्गों के परिवर्तन से बनते हैं ।

विलोम शब्द बनावट की दृष्टि से निम्न लिखित वर्गों मे होते है। उलटे अर्थवाले शब्द :-

1. **गरम** × ठंडा
2. **देना** × लेना
3. **तन्दुरुस्त** × बीमार
4. **अंदर** × बाहर
5. **बढ़िया** × घटिया

6. **सूरत** × बदसूरत
7. **नुकसान** × लाभ
8. **उत्तर** × दक्षिण
9. **पाना** × खोना
10. **जनन** × मरण
11. **ईमान** × बेईमान
12. **भूलना** × याद करना
13. **सबेरा** × शाम
14. **मान** × अपमान
15. **होशियार** × बेवकूफ

(क) मूलतः विलोम शब्द

1. **अधिक** × कम
2. **अल्प** × अधिक
3. **कनिष्ठ** × ज्येष्ठ
4. **कृतज्ञ** × कृतघ्न
5. **क्रय** × विक्रय
6. **गुप्त** × प्रकट
7. **गौण** × मुख्य
8. **जीवित** × मृत
9. **दुष्ट** × सज्जन
10. **र्निबल** × सबल
11. **सफल** × विफल
12. **संयोग** × वियोग
13. **नूतन** × पुरातन
14. **प्राकृतिक** × कृत्रिम
15. **विशेष** × सामान्य

Rahul Publications

ख) उपसर्ग के योग से बननेवाले विलोम शब्द

1. **अर्थ** × अनर्थ
2. **इज्जत** × बेइज्जत
3. **उत्तीर्ण** × अनुत्तीर्ण
4. **कानूनी** × गैर कानूनी
5. **कसूर** × बेकसूर
6. **घात** × प्रतिघात
7. **आशा** × निराशा
8. **अपराध** × निरपराध
9. **कीर्ति** × अपकीर्ति
10. **चर** × अचर
11. **भाव** × अभाव
12. **राग** × विराग
13. **वाद** × प्रतिवाद
14. **लोक** × परलोक
15. **शुभ** × अशुभ

Rahul Publications

ग) उपसर्ग के परिवर्तन से बननेवाले विलोम शब्द :-

1. **अनुरक्त** × विरक्त
2. **असीम** × सीमित
3. **आकर्षण** × विकर्षण
4. **संपदा** × विपदा
5. **सुगन्ध** × दुर्गन्ध
6. **स्वदेश** × परदेश, विदेश
7. **स्वाधीन** × पराधीन
8. **सुबुद्धि** × कुबुद्धि
9. **स्वार्थ** × निस्वार्थ
10. **स्वतंत्रता** × परतंत्रता

11. **सचेत** × अचेत
12. **उपचार** × अपचार
13. **आदान** × प्रदान
14. **अशेष** × सशेष
15. **अपकार** × उपकार

घ) विलोम शब्द

1. **अपना** × पराया
2. **अस्त** × उदय
3. **आकाश** × पाताल
4. **आय** × व्यय
5. **आदि** × अंत
6. **उतार** × चढाव
7. **उत्तम** × अधम
8. **ऊँच** × नीच
19. **कठिन** × सरल
10. **कोमल** × कठोर
11. **नया** × पुराना
12. **खरीदना** × बेचना
13. **क्रय** × विक्रय
14. **खंडन** × मंडन
15. **खेद** × प्रसन्नता
16. **गर्मि** × सर्दी
17. **गरीब** × अमीर
18. **गुरू** × शिष्य
19. **गुप्त** × प्रकट

Rahul Publications

20. **जड** × चेतन
21. **जवानी** × बुढापा
22. **जीत** × हार
23. **जीवन** × मुत्यु, मरण
24. **सच** × झूठ
25. **दिन** × रात
26. **नवीन** × प्राचीन
27. **दुष्ट** × सज्जन
28. **निंदा** × स्तुती
29. **पंडित** × मूर्ख
30. **मीठा** × कडुवा
31. **प्रत्यक्ष** × परोक्ष
32. **विष** × अमृत
33. **हर्ष** × शोक, विषाद
34. **पूर्ण** × अपूर्ण
35. **प्रमुख** × गौण
36. **बाहर** × भीतर
37. **वीरता** × कायरता
38. **स्पष्ट** × अस्पष्ट
39. **पराधीन** × स्वाधीन
40. **बस्ती** × नगर
41. **असली** × नकली
42. **दृढ़** × दुर्बल
43. **विख्यात** × कुख्यात
44. **भला** × बूरा
45. **उजाला** × अंधेरा
46. **निर्मल** × मलिन

Rahul Publications

पत्र - लेखन

पत्र - लेखन को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है ।

1. **पारिवारिक पत्र**
2. **सामाजिक पत्र**
3. **व्यावसायिक पत्र (या) व्यापारिक पत्र**
4. **सरकारी पत्र**

पारिवारिक पत्रों के विविध अंग इस प्रकार है:-

1. **स्थान :-** पत्र के सब से ऊपर दाए हाथ की ओर लिखना है।
2. **तारीख :-** स्थान के नीचे तारीख लिखना है।
3. **संबोधन :-** बडों को पूज्य और छोटों को आशीर्वाद करना है।
4. **अभिवादन :-** बडों का प्रणाम, छोटों को आशीर्वाद संबोधन के नीचे।
5. पत्र का विषय सक्षिप्त, स्पष्ट और सरल रहना है।
6. **समापन :-** बडों का लिखते वक्त 'आपका', छोटो को तुम्हारा नीचे दाये हाथ की ओर।
7. **पता :-** पानेवालो को पता पत्र के नीचे समापन के नीचे बाएँ हाथ की ओर। सामाजिक और व्यावसायिक पत्रों के अंग प्रायः एक ही है। वे इस प्रकार है -

स्थान :- पत्र के सबसे ऊपर, दाए हाथ की ओर लिखना है ।

तारीख :- स्थान के नीचे तारीख लिखना है।

प्रेषक :- तारीख के नीचे बाएं हाथ की और लिखाना है। भेजनेवाले का पता इसमे लिखना।

सेवा मे :- प्रेषक के नीचे बाएँ हाथ की और लिखना है इसमें पानेवाले का पता लिखना है।

संबोधन :- प्रायः संबोधन मान्य महोदय ही लिखना है यह । सेवा में के नीचे दाएँ हाथ की ओर लिखना हैं ।

अभिवादन :- संबोधन के नीचे बीच में अभिवादन लिखना है। यह प्रायः सादर प्रणाम ही रहता है।

पत्र का विषय :- यह तो सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त होना है। अन्त में पंक्ति के बीच में 'धन्यवाद' भी अंकित करना है।

समापन :- यह पत्र के नीचे दाएँ हाथ की और लिखाना है। समापन के शष्द.

प्रायः भवदीय या विश्वनीय रहते है।

सरकारी पत्र इंटर परिक्षा के लिए नही रखे गए है। इसलिए विवरण नहीं दिया जा रहा है।

पत्र-लेखन मे और एक ध्यान रखने योग्य बात यह है कि विराम चिन्हों को ठीक तरह मे लगाएँ।

Rahul Publications

1. छुट्टी माँगते हुए प्रधानाचार्य के नाम पत्र।

छुट्टी पत्र

हैदराबाद,

दिनाकः- **08-02-2020**

प्रेषकः

अ आ इ,

बि.काम प्रथम वर्ष,

डेविड मेमोरियल डिग्री कालेज

सेवा मेः-

श्रीमान् प्रधानाचार्य

डेविड मेमोरियल डिग्री कालेज,

सिकंदराबाद ।

माननिय महोदय,

सादर प्रणाम ।

सेवा में निवेदन है कि, मेरी बहन की शादी दस तारीख को होनेवाली है। घर के काम काज के लिए मेरी उपस्थिति अनिवार्य है। इसलिए पाँच दिन छुट्टी देने की कृपा कीजिए। अर्थात 08-02-2020 से 12-02-2020 तक।

धन्यवाद ।

भवदीय,

× – × – × – × – ×

Rahul Publications

2. अपनी पढ़ाई का विवरण देते हुए फीज भरने के लिए रूपये माँगते हुए पिता के नाम पत्रः

पिता को पत्र

हैदराबाद,

दिनाकः- 08-02-2020

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम ।

मैं यहाँ कुशल हूँ । आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ सकुशल रहें । यहाँ मेरी पढाई अच्छी तरह चल रही है। अर्धवार्षिक परीक्षाओं मे मुझें अच्छें अंक मिले, कालेज में सर्वप्रथम आने की कोशिश कर रहा हूँ ।

अब मुझे परीक्षा फीस भरनी है। कुछ आवश्यक किताबें खरीदनी है। इसलिए जल्दी से जल्दी रू 2,500 धनादेश द्वारा भेजने की कृपा कीजिए।

माताजी और बड़े भाई को प्रणाम कहिये ।

आपका प्रिय पुत्र

× – × – × – × – ×

पता :- शमाराव जी,
12-1-652, शन्तिनगर,
सिकेन्दराबाद.

Rahul Publications

3. हिन्दी सीखने की आवश्यकता बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए ।

पत्र

निजामबाद,
दिनाकः- 08-02-2020

प्रिय मित्र,

यहाँ मै सकुशल हूँ और आशा है कि तुम भी ऐसे ही हो। आजकल मै हिन्दी अच्छा सीख रहा हूँ क्योकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी भाषा में साहित्य सुसंपन्न है।

तुलसी, सूर, कबीर, मीरा, प्रेमचन्द्र आदि का साहित्य हिन्दी सीखने पर ही हम पढ़ सकते है । हिन्दी संसार भर में तीसरी भाषा है। हमारे देश में हिन्दी बोलने वालो की संख्या अधिक है। इसीलिए आज हर एक को हिन्दी सीखना जरूरी है। तुम भी हिन्दी सीखना शुरू करो। उसकी आवश्यकता तुम को भविष्य मे पता चलेगी।

धन्यवाद ।

तुम्हारा प्रिय मित्र

× – × – × – × – ×

पता :- जी नारयणराव,
आदिलाबाद.

Rahul Publications

4. सफाई न होने की शिकायत करते हुए स्वास्थ अधिकारी के नाम पत्र -

सिकंदराबाद
दिनाकः- 08-02-2020

प्रेषक

वि रामाराव,
शांतिनगर,
सिकदराबाद

सेवा मेः

श्रीमान् स्वास्थ अधिकारी,
नगर निगम,
हैदराबाद ।
माननिय महोदय,

सादर प्रणाम

निवेदन है कि हमारे मुहल्ले में गंदगी बहुत बढ गई है। सड़को पर - निरंतर पानी ठहरा रहता है। जिससे मच्छर की संख्या अधिक हो रही है। इतना ही नही है। इससे बीमार होने का खतरा है । अतः आपसे सविनय निवेदन है कि आप जल्द से जल्द सफाई का प्रबन्ध करो आप इस पर विचार करके ठोस कदम उठाकर मुहल्ले के लोगों के स्वास्थ की रक्षा करें

धन्यवाद ।

भवदीय

× – × – × – × – ×

Rahul Publications

5. नौकरी के लिए आवेदन पत्रः

पत्र

निजामबाद,

दिनाकः- 08-02-2020

प्रेषक

रविराज,
गाँधी रोड,
निजामाबाद

सेवा मेः

श्रीमान् प्रधानाचार्य,
लयोला काँलेज,
सिकंदराबाद.

मान्यवर महोदय,

मुझे 08-02-2020 की इन्डियन एक्सप्रेस पत्रिका द्वारा यह विदित हुआ कि, आपके काँलेज में हिन्दी अध्यापक की आवश्यकता है। मैं इसी हेतु यह आवेदन - पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं उस्मानिया विश्वविधालय की एम. ए. हिन्दी परीक्षा 70% अंको से उत्तीर्ण हुआ। हिन्दी - अग्रेजी अनुवाद में डिप्लोम उस्मनिया से प्राप्त किया। फिल हाल मै अस्मनिया विद्यालय में पी. एच. डी कर रहा हूँ।

मेरी इच्छा है कि आपकी संस्था मे काम करने का अवसर मिले, ताकि मै अपनी योग्यता तथा क्षमता का सही परिचय दे सकूँ। मुझे विश्वास है कि यदि मुझे अवसर प्रदान किया गया, तो मै इस पद के योग्य सिध्द हो सकूँगा। अपने कठोर परिश्रम, कर्मनिष्ठता तथा सदव्यवहार से निशचय ही आपको संतुष्ट कर सकूँगा।

आवश्यक प्रमाण - पत्रों को तथा प्रशंसा पत्रों की प्रतिलिपियाँ इसी के साथ भेज रहा हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय

× – × – × – × – ×

Rahul Publications

नौकरी के लिए रेझूम (आवेदन पत्र)

नाम : डॉ. नागेश्वर राव

पिता : लक्ष्मी नारायण

पता : 16-9-2-1, एम.जी.रोड, निजामाबाद.

जन्मतिथि : 02-02-1980

शिक्षा : एम. ए (उस्मनिया विश्वविद्यालय हैदराबाद)
पी.एच.डी. (उस्मनिया विश्वविद्यालय हैदराबाद)
एम.ई.डी. (उस्मनिया विश्वविद्यालय हैदराबाद)

अनुभाव : छत्रावस्था से ही पढानें में रूचि हैदराबाद लयोला कालेज प्राध्यापक के रूप में २०१० से काम कर रहा हूँ।

प्रतिभा : कंम्पूटर का ज्ञान, शोध कार्य में शिक्षण देने की कुशलता।

Rahul Publications

6. छात्रावास से छुट्टियों में घर ले जाने के लिए माँ से पत्र लिखिए ।

उत्तर

100 राजु छात्रावास

हैदराबाद - 500001

दिनांक - 30-11-21

पूजनीय माताजी,

सादर चरण स्पर्श, माताजी मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी कुशल से होंगी। मेरी पढ़ाई भी अच्छे से हो रही है । माताजी 'मकर संक्रांति' नज़दीक आ रहा है और मेरे विद्यालय की भी छुट्टियाँ आ रही है मैं चाहती हूँ की इस बार की छुट्टियाँ मैं आपके साथ बिताऊँ इसलिए मैं घर आना चाहती हूँ । इसके लिए आपको यहाँ आना होगा ।

कृप्या यहाँ आइए और जाने की अनुमति प्राचार्य महोदय से ले लीजिए । पिताजी को प्रणाम तथा गुड़िया को स्नेह कहिएगा ।

आपकी प्यारी बेटी

चाँदनी

लिफ़ाफे पर पता

डा. बी राजकुमारं

राम नागर कांलनी

तेलंगाना, हैराबाद.

Rahul Publications

7. समाचार पत्र में संवाददाता की नौकरी के लिए संपादक को आवेदन पत्र लिखिए ।

उत्तर

सेवा में
प्रधान संपादक,
दैनिक जागरण समाचार पत्र,
नई दिल्ली ।

आदरणीय महोदय

आपके द्वारा ०७-८-२१ के 'दैनिक जागरण'' में प्रकाशित विज्ञापन के संदर्भ में मैं संपादक पद के लिए स्वयं को अभ्यर्थी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ । मेरी योग्यता एवं अनुभव इस प्रकार है ।

पूरा नाम	:	राजकुमार
जन्म तिथि	:	07-08-1982
शैक्षणिक योग्यताएँ	:	BBA
संपादन अनुभव	:	3 वर्ष
विशेष रूचि	:	फोटोग्राफी
लेखन अभिरूचि	:	कहानी लेखन

प्रमाणपत्रों की यथावत प्रतिलिपियाँ आवेदन पत्र के साथ संलग्न प्रेषित हैं । मुझे आशा है कि उपर्युक्त पद पर सेवा प्रदान करने का अवसर देकर आप मुझे अवश्य अनुगृहीत करेंगे ।

भवदीय
राजकुमार
E.C.I.L (ई.सी.आई.एल)
तेलंगाणा।

Rahul Publications

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

Model Paper - I

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (4 × 5 = 20 Marks)

ANSWERS

सूचनाः- किन्ही चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. 'ताई' के हृदय परिवर्तन है । अपने शब्दो में लिखिए ? **(Page No. 16, Q.No. 2)**
2. विदेशों मे विवेकानंद की क्या छाप रही ? **(Page No. 32, Q.No. 2)**
3. 'वापसी' कहानी की विशेषता क्या है ? **(Page No. 53, विशेषता)**
4. गदल कहानी में नारी पात्र के महत्व को समझाइए ? **(Page No. 44, चरित्र चित्रण)**
5. संधि का अर्थ क्या है? संधि विच्छेद करके उदाहरण सहित समझाइए ? **(Page No. 67)**
6. 'विलोम' शब्दों के परिभाषा लिखिए ? उदाहरण दीजिए ? **(Page No. 73,**

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए **(12 × 1 = 12 M)**

   क) धूमते रहने से मेरी आँखे ठीक रही है । नई - नई चीजे देखता हूँ तो ज्योति जैसे और आति है । **(Page No. 5, Q.No. 1)**

   ख) निगोडा मरा कितना सुन्दर है और कैसी प्यारी - प्यारी बाते करता है । **(Page No. 10, 11)**

   ग) उनके व्याख्यानों का इतना गहरा प्रभाव पडा है कि वहाँ के उनके व्यक्ति स्वामी विवेकानंद के शिष्य बन गए और वे भारतिय संस्कृति के रंग मे रंग गए ? **(Page No. 29, Q.No. 1)**

   घ) प्रदूषण का प्रभाव भव्य इमारतों पर भी पडता है ? ताजमहल उसका एक ज्वलंत उदाहरण है? समझाए? **(Page No. 37, Q.No. 2)**

8. क) राजनिती का बंटवारा पाठ के आधार पर भैयाजी का चरित्रांकन कीजिए । **(12 × 1 = 12 M)** **(Page No. 24, Q.No. 3)**

अथवा

ख) पर्यावरण और हम पाठ का सारांश संक्षिप्त में लिखिए । **(Page No. 34, 35, सारांश)**

9. क) हसुँ या रौऊँ कहानी के द्वारा लेखक क्या बताना चाहते है । **(12 × 1 = 12 M)**
अपने शब्दों में लिखिए । **(Page No. 47, 48, सारांश)**

अथवा

ख) 'सिलिया' कहानी में लेखक क्या सिध्द करना चाहती है? समझाइए । **(Page No. 60, 61, सारांश)**

10. निम्नलिखित में से किसी दो का चरित्र-चित्रण कीजिए? **(6 × 2 = 12 M)**

क) गदल **(Page No. 44)**

ख) गजाधर बाबू **(Page No. 53)**

ग) नरोन्तम सहाय **(Page No. 57)**

घ) सिलिया **(Page No. 61, 62)**

11. किन्हीं तीन शाब्दों का संधि विच्छेद कीजिए । **(1 × 3 = 3 M)**

क) 1) विद्यालय **(Page No. 71)**
2) स्वागत **(Page No. 71)**
3) अनाथालय **(अनाथ + आलय)**
4) प्राणाधार **(प्राण + आधार)**
5) निर्मल **(निः + मल)**
6) विधार्थी **(Page No. 76)**

ख) किन्हीं तीन के विलोम शब्द लिखिए । **(1 × 3 = 3 M)**
1) अंदर **(Page No. 73)**
2) दुर्गंध **(Page No. 75)**
3) उजाला **(Page No. 77)**
4) भला **(Page No. 77)**
5) निर्मल **(मलिन)**
6) नया **(Page No. 76)**

ग) हिन्दी सीखने की आवश्यकता बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए ? **(6 × 1 = 6 M)** **(Page No. 81)**

अथवा

पाँच दिन की छुटी माँगते हुए प्रधानाध्यापक को छुट्टी पत्र लिखिए । **(Page No. 79)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

Model Paper - II

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (4 × 5 = 20 Marks)

सूचनाः- किन्ही चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. धरती का स्वर्ग पाठ के आधार पर कश्मीर की सुंदरता का वर्णन कीजिए? **(Page No. 7, Q.No. 1)**
2. राजनिती का बंटवारा कहानी से लेखक का उद्देश्य क्या है? **(Page No. 22, Q.No. 1)**
3. सेवा कहानी की विशेषता को बताइए? **(Page No. 57)**
4. सिलिया कहानी के महत्व को समझाइए ? **(Page No. 61)**
5. विलोम शब्दों को उदाहरण सहित समझाइए ? **(Page No. 73)**
6. पारिवारिक पत्रों के विविध अंगों के बारे मे समझाइए ? **(Page No. 78)**

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए **(6 × 2 = 12 M)**

   क) अब वह मनोहर की बहन चुन्नी से भी द्वेष और घृणा नही करती और मनोहर तो उनका प्राणाधार हो गया । **(Page No. 14, Q.No. 3)**

   ख) वह मार्ग उचित नहीं है ? गाँधीजी ने सत्य पर जोर दिया है । **(Page No. 21, Q.No. 2)**

   ग) हमारी शिक्षा एक सूचना मात्र नही होनी चाहिए । वह इस प्रकार की होनी चाहिए । जिससे कि हमारे जीवन का निर्माण हो सके । **(Page No. 30, Q.No. 3)**

   घ) अब प्रश्न यह उठता है कि प्रदूषण का मुख्य कारण क्या है । पहला कारण है विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या और दूसरा है औद्योगिक विकास । **(Page No. 38, Q.No. 3)**

8. क) 'ताई' कहानी का सारांश लिखिए ? **(12 × 1 = 12 M)** **(Page No. 10,11)**

अथवा

ख) 'पर्यावरण और हम' निबंद का सारांश लिखिए । **(Page No. 34, 35)**

9. क) 'सेवा' कहानी के मह्त्व को समझाइए ? **(12 × 1 = 12 M)** **(Page No. 57)**

अथवा

ख) वापसी कहानी के महत्व को समझाइए ? **(Page No. 53)**

10. निम्नलिखित में से किसी दो का चरित्र-चित्रण कीजिए? **(6 × 2 = 12 M)**

क) गजाधर बाबू **(Page No. 53)**

ख) नरोन्तम सहाय **(Page No. 57)**

ग) सिलिया **(Page No. 61, 62)**

घ) बंसती **(Page No. 54)**

11. किन्हीं तीन शाब्दों का संधि विच्छेद कीजिए । **(1 × 3 = 3 M)**

क) 1) अत्यंत **(अति + अंत)**

2) कवीश्वर **(कवि + ईश्वर)**

3) गणेश **(गण + ईश)**

4) महोदय **(महा + उदय)**

5) देवालय **(Page No. 67)**

6) विद्यालय **(विद्या + आलय)**

ख) किन्हीं तीन के विलोम शब्द लिखिए । **(1 × 3 = 3 M)**

1) खरीदना **(Page No. 76)**

2) दृढ़ **(Page No. 77)**

3) असली **(नकली)**

4) अंधेरा **(उजाला)**

5) नया **(पुराना)**

6) उतार **(Page No. 76)**

ग) लिपिक (मतीक) की नौकरी के लिए. मैनेजर को आवेदन पत्र लिखिए ? **(Page No. 83)**

अथवा

किसी पर्यटन-स्थल की यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए । **(6 × 1 = 6 M)**

उत्तर :

निजामबाद,

दिनाकः- 11-11-2020

प्रिय मित्र

आशा है तुम सकुशल एवं आनंद से होगे । मैं भी यहाँ अपने परिवारजनों सहित कुशलपूर्वक हूँ । मैं दो दिन पूर्व ही नैनीताल का भ्रमण कर वापस लौटा हूँ ।

नैनीताल एक पर्वतीय स्थल है । पर्यटन की दृष्टि से यह भारत के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है । चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों व सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से घिरा यह स्थल सभी का मन मोह लेता है । ग्रीष्म ऋतु में यहाँ की ठंडी हवाएँ सभीको ताजगी पहुँचाती हैं । यहाँ की झील में नौका विहार का आनंद ही कुछ और है ।

पहाड़ी मार्ग के किनारे गहरी सुंदर घाटियों का दृश्य अद्‌भुत लगता है । रास्ते में पहाड़ों से निकलकर बहते झरनों का दृश्य तो इतना मनमोहक लगता है कि लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । ऊँचाई पर एक जगह बादल हमारी बस की खिड़कियों से अंदर प्रवेश करने लगे । उस समय सचमुच ऐसा लग रहा था जैसे हम स्वर्ग का सुख प्राप्त कर रहे हैं ।

धन्यवाद ।

तुम्हारा प्रिय मित्र

पताः- जी. राजु
आदिलाबाद

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

Model Paper - III

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (4 × 5 = 20 Marks)

सूचनाः- किन्ही चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. कश्मीर को धरती का स्वर्ग क्यों कहा जाता है । **(Page No. 8, Q.No. 3)**
2. विदेशो में विवेकानंद की क्या छाप रही । **(Page No. 32, Q.No. 2)**
3. 'हँसूँ या रोऊँ' कहानी के महत्व को बताइए? **(Page No. 49)**
4. 'सेवा' कहानी के महत्व को समझाइए ? **(Page No. 57)**
5. संधि कितने प्रकार की है? समझाइए । **(Page No. 67)**
6. नौकरी के लिए आवेदन पत्र कैसा लिखते है? समझाइए । **(Page No. 78)**

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए **(6 × 2 = 12 M)**

   क) आओ भाई आओ, दों क्षण की शांति के लिए यहाँ आकर देखो । वे झीले तुम्हे संजीवनी से भर देगी। **(Page No. 6, Q.No. 3)**

   ख) राजनीतिक ज्ञान इसे कहते है । अतः अपने घर में सब पार्टियों हो गए । **(Page No. 22, Q.No. 3)**

   ग) पिछले पाँच दशकों से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने बहुत गंभीर रूप धारण कर लिया है । **(Page No. , Q.No. 1)**

   घ) अब वह मनोहर की बहन चुन्नी से भी दूेष और धृणा नहीं करती और मनोहर तो उनका प्राणाधार हो गया । **(Page No. 14, Q.No. 3)**

8. क) 'ताई' पात्र की विशेषताओ को समझाइए। **(12 × 1 = 12 M)** **(Page No. 16, 17, Q.No. 3)**

अथवा

ख) स्वामी विवेकानंद पाठ का सारांश संक्षिप्त मे लिखिए। **(Page No. 25, 26)**

9. क) वापसी कहानी के महत्व को संक्षिप्त लिखिए। **(12 × 1 = 12 M)** **(Page No. 53)**

अथवा

ख) 'सेवा' कहानी के महत्व को समझाइए ? **(Page No. 57)**

10. निम्नलिखित में से किसी दो का चरित्र-चित्रण कीजिए? **(6 × 2 = 12 M)**

क) मै पात्र **(Page No. 48)**

ख) गजाधर बाबू **(Page No. 53)**

ग) नरोन्तम सहाय **(Page No. 57)**

घ) गदल **(Page No. 44)**

11. किन्हीं तीन शाब्दों का संधि विच्छेद कीजिए। **(1 × 3 = 3 M)**

क) 1) देवर्षि **(Page No. 72)**

2) सदैव **(Page No. 72)**

3) अन्वेषण **(Page No. 72)**

4) सद्‌भावना **(Page No. 72)**

5) विद्यार्थि **(Page No. 67)**

6) स्वागत **(Page No. 71)**

ख) किन्हीं तीन के विलोम शब्द लिखिए। **(1 × 3 = 3 M)**

1) उत्तम **(Page No. 76)**

2) खरीदना **(Page No. 76)**

3) गर्मी **(Page No. 76)**

4) गुरू **(Page No. 76)**

5) बस्ती **(Page No. 77)**

6) उर्त्तीण **(Page No. 75)**

ग) नगर पालिका के नाम पर शिकायती पत्र लिखिए ? **(6 × 1 = 6 M)** **(Page No. 82)**

अथवा

नौकरी के लिए आवेदन पत्र लिखिए ? **(Page No. 83)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

Jan./Feb. - 2021

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 2 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (4 × 5 = 20 Marks)

ANSWERS

सूचनाः- किन्ही चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. कश्मीर के झीलों का परिचय दीजिए ? **(Page No. 8, Q.No. 3)**

2. स्वामी विवेकानंद का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है । स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :

स्वामी विवेकानंद का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत रहा है । भारतीय युवायों को प्रेरित करने वाले विवेकानंद एक ऐसे व्यक्ति हैं जो हर युवा के लिए कर्म योग, राज योग तथा ज्ञान योग जैसे ग्रंथों की रचना करके पूरे रचना जगत को एक नई राह दिखाई ।

स्वामी जी उन भारतीयों में अग्रणी थे, जिन्होंने भारतवर्ष और उसकी सभ्यता एवं संस्कृति की महानता को न केवल अनुभव किया अपितु यूरोप और अमेरिका को उस समय अपने भारतीय सभ्यता और संस्कृति क्या है, उसका अनुभव भी करवाया । स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिक व्यक्ति थे, दयावान थे, गरीबों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे, इसलिए वे 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना किए ।

''उठो जागो और तब तक रूको नहीं
जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए ।

3. 'वापसी' कहानी में वर्णित समस्या पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 52)**
4. सिलिया नारी चेतना प्रधान कहानी है, स्पष्ट कीजिए । **(Page No. 60)**
5. रामेश्वरी का परिचय दीजिए । **(Page No. 16, Q.No. 16)**
6. 'राजनीति का बँटवारा' कहानी के व्यंग्य को समझाइए । **(Page No. 23, Q.No. 2)**
7. संधि क्या है ? उसके कितने भेद हैं ? सोदाहरण समझाइए । **(Page No. 67)**

8. पत्राचार के महत्व को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :

जब कभी हम अपने मन के विचारों अथवा भावों को किसी दूसरे को लिखित रूप में भेजते हैं, तो उसे पत्र तथा पत्राचार कहते हैं ।

व्यक्ति अपने भावों, चिारों की जानकारी दूसरों को देने के लिए पत्रों का सहारा लेते हैं ।

इसके दो प्रकार है :-

(अ) अनौपचारिक (आ) औपचारिक

(अ) अनौपचारिक पत्र अपने मित्रों, संबंधियों और परिचितों को लिखे जाते हैं ।

इनमें अपने भावों और विचारों को विस्तार पूर्वक लिख सकते हैं ।

(आ) औपचारिक पत्र उन व्यक्तियों को लिखे जाते हैं जो हमारे संबंदी नहीं होते बल्कि वो किसी कार्यालयी प्रक्रिया से जुड़े होते हैं ।

खण्ड - 'ख' (3 × 20 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए ।

9. किन्ही दो गद्यांशो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

अ) उनके व्याख्यानों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वहाँ के अनेक व्यक्ति स्वामी विवेकानंद के शिष्य बन गए और वे भारतीय संस्कृति के रंग में रंग गए । **(Page No. 29, Q.No. 1)**

आ) नगर निगम के चुनाव होने वाले थे और समस्या यह थी किस पार्टी के हाथ में निगम जाता है । **(Page No. 21, Q.No. 1)**

इ) यह रंगीन चित्र मात्र नहीं है, सचमुच सजीव है । उसको हम जी सकते हैं, भोग सकते हैं ।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** इसमें कश्मीर के डल झील की सुंदरता का वर्णन किया गया है ।

2. **व्याख्या :-** लेखक 'डल झील' की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वहाँ की सुंदरता सिर्फ रंगीन चित्र नहीं है । वह तो सजीव है । उसमें जान है । उसको देखकर हम अपनी जीवन को जी सकते हैं ।

विशेषता

➢ काश्मीर के डल झील का वर्णन है । इसकी भाषा शैली सरल है ।

ई) रामेश्वरी कुछ कुढ़कर बोली, 'तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ ? इसी से रात दिन जला करती हूँ' ।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** इसमें निःसंतान स्त्री के मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

2. **व्याख्या :-** संतानहीन होने कारण उसका मन हमेशा दुख में जलते रहता है । वो हमेशा क्रोधित रहती है। जब वह अपने पति के मुख से यह सुनती है, कि 'जब संतान होने की आशा न होतो व्यर्थ में चिंता करने से क्या लाभ? यह सुनकर रामेश्वरी कुढ़ जाती है, तथा वह अपने पति सं कहती है, कि तुम्हारी इसी समझ पर मैं दिन-रात जला करती हूँ।

विशेषता

- मनुष्य के मनः स्थिति का वर्णन किया गया है ।
- मातृहीन से वंचित स्त्री का सजीव चित्रण किया गया है ।
- इनकी भाषा सरल है ।

10. किसी <u>एक</u> प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

अ) 'पर्यावरण और हम' पाठ का सारांश लिखिए । **(Page No. 34)**

आ) 'ताई' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए । **(Page No. 10)**

11. किसी <u>एक</u> प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

अ) 'सेवा' कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 56)**

आ) 'हँसू या रोऊँ' कहानी की विषय-वस्तु क्या है ? **(Page No. 47)**

12. किन्हीं <u>दो</u> पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अ) गजाधर बाबू **(Page No. 53)**

आ) गदल **(Page No. 43)**

इ) सिलिया **(Page No. 60)**

ई) नरोत्तम सहाय **(Page No. 57)**

13. (क) किन्हीं पाँच शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए ।

1) महेश (महा + ईश)

2) विद्यालय (विद्या + आलय)

3) प्रत्येक (प्रति + एक)

4) स्वागत (सु + आगत)

5) नायक (नै + अक)

6) मनोनुकूल (मनः + अनुकूल)

7) सुरेश (सुर + ईश)

8) नदीश (नदी + इश)

(ख) किन्हीं पाँच शब्दों के विलोम रूप लिखिए ।

1) लाभ (हानि)

2) नवीन (प्राचीन)

3) स्पष्ट (अस्पष्ट)

4) बाहर (भीतर)

5) तेज (मंद)

6) पराधीन (स्वाधीन)

7) सुगंध (दुर्गन्ध)

8) सुख (दुख)

(ग) अ) पाँच दिन की छुट्टी माँगते हुए प्राचार्य को छुट्टी पत्र लिखिए । **(Page No. 79)**

(अथवा)

आ) हिंदी सीखने की आवश्यकता बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए । **(Page No. 81)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

May/June - 2019

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 Marks)

ANSWERS

सूचनाः- किन्ही पाँच प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का जीवन परिचय दीजिए । **(Page No. 10)**
2. भैयाजी का चरित्र-चित्रण कीजिए । **(Page No. 24, Q.No. 3)**
3. नारायण का चरित्र-चित्रण कीजिए । **(Out of Syllabus)**
4. गजाधर बाबू अपने आप को अकेला और अजनबी क्यों अनुभव करते हैं? **(Page No. 52)**
5. लिंग किसे कहते हैं? **(Out of Syllabus)**
6. वचन कितने प्रकार के हैं? **(Out of Syllabus)**
7. काल कितने प्रकार के होते हैं ? **(Out of Syllabus)**
8. 'शिकायती पत्र' किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए ।

उत्तर :

जब समस्या के समाधान हेतु किसी पत्र लिखा जाए वो शिकायती पत्र कहलाता है । उदाः अगर आपका पत्र समय पर नहीं पहुँचा तो आप अपना शिकायत एक विभाग में दर्ज कराएँगे । अगर बिजली या जल से संबंधित समस्या है, तो उसके लिए शिकायत दर्ज करवाएँगे, इससे संबंधित जो पत्र आप लिखेंगे वो शिकायती पत्र कहलाएगा ।

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

9. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

क) 'शाम का समय था । रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा रही थी । पास ही उनकी देवरानी भी बैठी थी। बच्चे छत पर दौड़कर खेल रहे थे'।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भः-** यह संदर्भ ''ताई'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता श्री विश्वंभरनाथ शर्मा जी हैं। यह पारिवारिक कहानी है। इस उद्धरण में संयुक्त परिवार को दर्शाया गया है ।

2. **व्याख्याः-** रामेश्वरी संतान हीन होने के कारण हमेशा उदास रहती है । एक दिन वो घर के छत पर बैठी ताजी हवा का आनंद ले रही थी । वहीं उसकी देवरानी भी बैठी थी तथा बच्चे खेल रहे थे । बच्चों के इस क्रीड़ा का आनंद भी रामेश्वरी उठा रही थी और उन्हें देखकर बहुत ही मुग्ध हो रही थी ।

विशेषता

- नारी के ममत्व को उजागर किया गया है ।
- परिवार प्रेम को दिखाया गया है ।
- सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

ख) 'प्रकाश बढ़ रहा है । उसी के साथ-साथ वातावरण में भीनी-भीनी गूंज उभरती है । दूर किनारे पर आवागमन शुरू हो जाता है' ।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ ''धरती का स्वर्ग'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता विष्णु प्रभाकर हैं । इस यात्रा वृत्तांत में कश्मीर की सुंदरता का वर्णन किया गया है।

2. **व्याख्या :-** लेखक प्रातः कालीन दृश्य का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि सुबह की रोशनी बढ़ रही है, और वातावरण की सुंदरता में चार-चाँद लग गया है । वातावरण में मीठी-मीठी आवाजें सुनाई देने लगे हैं । दूर लोगों की आवगमन भी शुरू हो गई है ।

विशेषता

- कश्मीर की प्रातः कालीन सुंदरता का वर्णन किया गया है ।
- भीनी-भीनी गूंज से संबोधित किया गया है ।

ग) 'तो परिवार राष्ट्रीय समस्या पर विचार कर रहा है । किस पार्टी का निगम बनेगा । चुंगी की चोरी कैसी हौगी'।

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ ''राजनीति का बँटवारा'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता 'हरिशंकर परसाई' हैं । इस कहानी में तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीति पर व्यंग्य किया गया है ।

2. **व्याख्या :-** भैयाजी एक चालाक तथा होशियार नेता है, समाज सेवा करने का दिखावा करते रहते है, नगर-निगम का चुनाव होने वाला है, जिसके कारण भैयाजी के परिवार के सदस्य राष्ट्रीय समस्या पर विचार कार रहे हैं, उनको डर है कि नगर-निगम अगर दूसरे पार्टी के हाथ में चला गया तो वो अपना चुंगी-चोरी का धंधा नही कर सकते । इसी समस्या पर विचार कर रहे हैं ।

विशेषता

- राजनीति के ऊपर व्यंग्य किया गया है ।
- व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।
- भाषा सरल है ।

घ) 'मानव कूड़ा-कचरा और दूसरे अपशिष्ट पदार्थों को अपने घरों से बाहर फेंक कर भूमि प्रदूषण रहा है।'

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ ''पर्यावरण और हम'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता 'राजीव गर्ग' हैं । इस उद्धरण में भूमि प्रदूषण के ऊपर प्रकाश डाला गया है ।

2. **व्याख्या :-** प्रदूषण के प्रकारों में एक प्राकर है 'भूमि' प्रदूषण जो काफी तेज़ रफ्तार से बढ़ रहा है, अर्थातू भूमि प्रदूषण फैल रहा है और इस भूमि को प्रदूषित करने वाले हम इंसान ही हैं । मानव अपने घर की गंदगी को बाहर फेंक कर भूमि को प्रदूषित कर रहा है, जो गलत है ।

विशेषता

- प्रदूष के ऊपर प्रकाश डाला गया है ।
- व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।
- भाषा सरल तथा आसान है ।

10. क) 'ताई' का चरित्र-चित्रण कीजिए । **(Page No. 10)**

ख) स्वामी विवेकानन्द के बारे में अपने लिखिए । **(Page No. 25)**

12. क) 'सिलिया' कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 60)**

ख) 'वापसी' कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 52)**

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

क) सिलिया **(Page No. 61)**

ख) घासीराम **(Out of Syllabus)**

ग) गदल **(Page No. 44)**

घ) नारायण **(Out of Syllabus)**

13. (क) किन्हीं तीन शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए ।

1) प्राणाधार (प्राण + आधार)

2) सदाचार (सत् + आचार)

3) निर्मल (निः + मल)

4) भानूदय (भानु + उदय)

5) अत्यंत (अति + अंत)

6) गिरिश (गिरि + ईश)

(ख) किन्हीं तीन के विलोम शब्द लिखिए ।

1) असली (नकली)

2) गीला (सूखा)

3) हर्ष (शोक, विषाद)

4) नया (पुराना)

5) भीतर (बाहर)

6) प्राचीन (नवीन)

(ग) छात्रावास से छुट्टियों में घर ले जाने के लिए माँ से पत्र लिखिए । **(Page No. 85)**

(अथवा)

(घ) समाचार पत्र में संवाददाता की नौकरी के लिए संपादक को आवेदन पत्र लिखिए । **(Page No. 86)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. & B.S.W

I-Year II-Semester (CBCS) Examination

May/June - 2018

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Paper - II

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 Marks)

ANSWERS

सूचनाः- किन्ही पाँच प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. 'ताई' कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए । **(Page No. 10)**
2. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए । **(Page No. 18)**
3. गदल का चरित्र-चित्रण कीजिए । **(Page No. 44)**
4. वापसी कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 52)**
5. संधि के भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए । **(Page No. 67)**
6. पत्राचार के महत्व को स्पष्ट कीजिए । **(Jan./Feb.-21, Q.No. 8)**
7. विलोम शब्द की परिभाषा देते हुए सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । **(Page No. 73)**
8. सामाजिक पत्र किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए ।

उत्तर :

समाजिक पत्र व्यक्तिगत पत्रों से भिन्न होती है । ये पत्र कई लोगों के लिए एक साथ छपता है । इसलिए इसकी शब्दावली पृथक होती है । सामाजिक पत्र की लेखन शैली भी अलग होती है । इस पत्र के अंतर्गत निमंत्रण तथा आमंत्रण पत्र आता है ।

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 Marks)

सूचनाः- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

9. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

क) यह रंगीन चित्र मात्र नहीं है, सचमुच सजीव हैं । उसको हम जी सकते हैं, भोग सकते हैं । **(Jan./Feb.-21, Q.No. 9इ)**

ख) रामेश्वरी कुछ कुढ़कर बोली, तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ । इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ । **(Jan./Feb.-21, Q.No. 9ई)**

ग) इस घर मे अंडे का नाम ले रही हो? जाओ, जल्दी से जाकर कुल्ला कर लो । मूँह भ्रष्ट हो गया होगा। **(Out of Syllabus)**

घ) इसके प्रयोग से मलेरिया जैसे घातक रोग से लोगों को छुटकारा मिला और विश्व में करोड़ों लोगों को स्वास्थ्थ लाभ हुआ । **(Jan./Feb.-21, Q.No. 9)**

उत्तर

1. **सामान्य संद्रर्भ :-** यह संदर्भ ''पर्यावरण और हम'' नामक पाठ से दिया गया है। इस कहानी की रचइता 'राजीव गर्ग' हैं । इस उद्धरण में 'डी.डी.टी. कीटनाशक' के ऊपर प्रकाश डाला गया है ।

2. **व्याख्या :-** लेखक कहते हैं, कि 'डी.डी.टी. एक जाना माना कीटनाशक है, जो एक सफेद रंग के पावडर के समान होता है । इसके प्रयोग से मलेरिया जैसे घातक रोग भी ठीक हो जाती है। तथा विश्व भर के लोगों के स्वास्थ्त में काफी लाभ हुआ ।

विशेषता

- डी.डी.टी. कीटनाशक पावडर के ऊपर प्रकाश डाला गया है ।
- भाषा सरल तथा आसान है ।

10. क) 'ताई' कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 10)**

(अथवा)

ख) स्वामी विवेकानन्द के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए । **(Page No. 35)**

12. क) सिलिया का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कीजिए । **(Page No. 61)**

(अथवा)

ख) गजाधर बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए । । **(Page No. 53)**

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

क) नरोत्तम **(Page No. 57)**

ख) बसंती **(Page No. 53)**

ग) शकलदीप बाबू **(Out of Syllabus)**

घ) गदल **(Page No. 44)**

13. (क) किन्हीं तीन शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए ।

1) सदाचार (सत् + आचार)

2) गुरोपदेश (गुरू + उपदेश)

3) महर्षि (महा + ऋषि)

4) सदैव (सदा + एव)

5) दिग्दर्शन (दिक् + दर्शन)

6) सम्मोहन (सम् + मोहन)

(ख) किन्हीं तीन के विलोम शब्द लिखिए ।

1) भला (बुरा)

2) असली (नकली)

3) पराधीन (स्वाधीन)

4) भीतर (बाहर)

5) अंधेरा (उजाला)

6) सुगन्ध (दुर्गन्ध)

(ग) नगरपालिका को अपने मुहल्ल की गंदगी के बारे में शिकायती पत्र लिखिए । **(Page No. 35)**

(अथवा)

(घ) समाचार-पत्र में संवाददाता की नौकरी के लिए संपादक को आवेदन पत्र लिखिए । **(June-19, Q.No. 13 घ)**